तज़करह
खुलफ़ा-ए-राशिदीन

शफ़ीक़-ए-मिल्लत मुफ़्ती

शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

क़ाज़ी-ए-शहर, इलाहाबाद

मकतबा नूर

नूर उल्लाह रोड, इलाहाबाद 9450612914

Scanned by CamScanner

तमाम भाईयो को सलाम किताबे स्केन करके पीडिएफ में आप तक पहुँचाने के लिए इस फ़क़ीर को अपनी दुआओ में खास तौर पर याद रखे।

दुआओ का तालीब

सग ए रज़ा लाला ख़ान

Scanned by CamScanner

तज़केरह

खोलफाये राशिदीन

शफीके मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

बानी व मोहतमिम दारूल उलूम अफज़लुल मदारिस
करैला बाग़ इलाहाबाद

जेरे एहतेमाम

मोहम्मद नोमान रज़ा

नवासए शफ़ीके मिल्लत

नाशिर

जामेआ़ दारूस्सलाम
K 49/A1जे0 के0 आशियाना, करैली, इलाहाबाद

Rs. [redacted]/-

Scanned by CamScanner

फेहरिस्त उनवानात

उनवानात	पेज नं0	उनवानात	पेज नं0
इन्तेसाब	4	खन्दह	32
खेराजे अक़ीदत	4	सर मुबारक	32
तक़रीज़	5	गरदन मुबारक	32
पेश लफ़्ज़	9	दस्त मुबारक	33
मोक़द्दमा	13	सीना मुबारक	33
सैयदे आलम सल्ल0	16	शिकम मुबारक	33
शक्के सदर	18	पुश्त मुबारक	33
शाम का सफर	18	हर दो पाये अक़दस	33
हज़रत खदीजतुल कुबरा		एड़ियाँ, क़द मुबारक	33,34
से निकाह	20	रंग मुबारक	34
अज़वाजे मोताहिरात	20	जिल्द मुबारक	34
औलादे केराम	21	मूए मुबारक	34
गज़वात और सराया	22	लिबास,	34
वालियाने मुल्क को दावते		अमामा	35
इस्लाम	22	सैयदना सिद्दीक़	
कुछ अहम गज़वात	27	अकबर	37
वेसाल शरीफ	28	वेलादत	37
हुलिया मुबारक	30	हालात	38
रूये मुबारक	31	शुजाअत	38
आँखें मुबारक	31	सखावत, आपका इल्म	39, 40
अबरूये मुबारक	31	सहाबा में अफज़ल	41
बीनिए अक़दस	31	वह आयात जो आप	
गोश मुबारक	31	की मदह में नज़िल हुई	42
दहन मुबारक	31	आपके फज़ायल	
लोआबे दहन	32	अहादीस में	43
जबान मुबारक	32	सलफ सालेहीन के	
आवाज़ मुबारक	32	इरशादात	45

उनवानात	पेज नं0	उनवानात	पेज नं0
खेलाफ़ते सिद्दीक की		शहर बसरा की तामीर	83
तरफ इशारात	45	मदायन की फतह	84
हालात	47	फतह रोम व शाम	85
शोअब अबी तालिब	49	हज़रत उमर का	85
गज़वात और सिद्दीक़		किरदार और कारनामे	
अकबर	52	कशफ व करामात	87
कुछ अहम उमूर	54	हज़रत उमर की	
खेलाफते सिद्दीक़ का		शहादत	91
बयान	55	सैयदना उस्मान ग़नी	
मुर्तदीन से जेहाद	57	इब्तेदाई ज़िन्दगी व	
तजहीज़ जेशे ओसामा	57	हसब व नसब	95
फ़तूहे शाम व ईराक	59	आपकी फज़ीलत	
तदवीने कुरआन	60	अहादीस की रौशनी में	96
अव्वलियात	61	हजरते उस्मान का दौरे	
अहदे सिद्दीक़ पर एक		खिलाफत	97
नज़र	64	फतूहाते इस्लामिया	100
सैयदना उमर फ़ारूक़ का		ईरान के बागियों की	
अहदे हुकूमत	68	सरकूबी	101
हज़रत उमर की इब्तेदाई		आज़रबाईजान में बगावत	101
ज़िन्दगी	68	अफ्रीका पर यूरश	102
हज़रत उमर का इस्लाम	69	खूँरेज़ जंग के बाद	
हिजरत उमर फारूक़	71	अफ्रीका की फ़तह	103
खेलाफत	74	कब्रिस और रोडस की	
फुतूहात	75	फतह	104
फतहे ईरान	75	तदवीनें कुरआन	106
हज़रत सअद बिन अबी		सोरिश का आगाज़	109
वक़ास ईरान के गवर्नर	78	हज़रत उस्मान का	
शाहे ईरान को दावते		सफरे आख़िरत	111
इस्लाम	80	शहादत क्यों और कैसे	112
जंगे क़ादसिया	80	सहाबा के अक़वाल	116

Scanned by CamScanner

उनवानात	पेज नं0	उनवानात	पेज नं0
हज़रत उस्मान का सरापा	117	खोलफाये राशिदीन के	
हज़रत उस्मान के दौरे		अहद में सल्तनत का	
हुकूमत पर एक नज़र	117	नज़्म व नसक़	169
हज़रत उस्मान पर किये		क़ज़ा	169
गये एतराजात के जवाब	118	देफ़ा	169
सैयदना अली इब्न		महसूल	170
अबी तालिब	128	जुज़िया	170
आपकी फज़ीलत		ज़कात	170
अहादीस की रौशनी में	128	उशूर	171
हज़रत अली की शुजाअत	130	सिक्का	171
इल्म व फ़ज्ल	131	मौलाए कायनात की	
खेलाफ़ते अली	132	अदबी शख्सियत	171
अमीर मआविया और शाम	134	नहजुल बलागत	172
अम्माल की तबदीली	135	खुतबाते अली के नमूने	179
जंगे जमल	136	मौला अली के	
हज़रत अली और अमीर		हकीमाना इरशादात	174
मआविया	140	माख़ज़ व मुराजेअ़	176
हज़रत अली का खत			
अमीर मआविया के नाम	144		
मारका सफ्फैन	145		
खूँरेज़ जंग	149		
तहकीम के असरार	155		
तहकीम की तकमील	156		
खवारिज	157		
मजलिसे मुशावेरत	159		
खवारिज से जंग	161		
मिस्र पर अमीर मआविया			
का कब्ज़ा	163		
हज़रत अली की शहादत	164		

इन्तेसाब

मुजद्दिदे आज़म आला हज़रत सैयदना इमाम अहमद रज़ा रज़ि0 के अज़ीमुल मरतबत व जलीलुल कद्र शहज़ादा ग्रामिए वक़ार आबरूये सुन्नत कुतुबे आलम आरिफ़–ए–बिल्लाह हुज़ूर मुर्शिदी व मौलाई अल्लामा अलहाज मोहम्मद मुस्तफ़ा रज़ा ख़ाँ मुफ्ती–ए–आज़म हिन्द अलैहिर्रहमह के नाम

जिनकी निगाह कीमिया ने ना जाने कितने ज़र्रो को हमदोश कहकशाँ कर दिया। जिनकी गुलामी मेरे लिए बाइसे फख्र और सरमाया ये आख़िरत है।

कभी भी गर्दिशे दौराँ में जब आवाज़ दी तुमको।
मेरी आवाज़ से पहले तेरी आवाज़ आयी है।।

असीरे रज़ा
शफीक़ अहमद शरीफ़ी रिज़वी

खेराज-ए-अक़ीदत

हिन्दुस्तान के उन दो जलील–उल–क़द्र रहनुमायाने केराम की ख़िदमते आलिया में जिन की शफकत व मोहब्बत और मेहनत व जाँफिशानी ने आज मुझे इस लायक़ बनाया।

यानी

1. बहरूल उलूम नाएब मुफ्ती–ए–आज़म हिन्द उस्ताजुल करीम हज़रत अल्लामा मुफ़्ती मोहम्मद शरीफुल हक़ साहब क़िबला अमजदी, सदर शोबए इफ़ता, जामेआ अशरफ़िया मुबारकपुर, आज़मगढ़।
2. शहेनशाहे ख़ेताबत, सुल्तानुल मुनाज़िरीन पासबाने मिल्लत हज़रत अल्लामा मुश्ताक़ अहमद साहब क़िबला निज़ामी, ख़लीफ़ा हुज़ूर मुफ़्ती–ए–आज़म हिन्द, मोहतमिम दारूल उलूम ग़रीब नवाज़, इलाहाबाद यू0 पी0 ।

शरीफ़ी

Scanned by CamScanner

तक़रीज़

पीरे तरीक़त सुल्तानुल मुनाज़िरीन ख़तीब–ए–मशरिक हज़रत अल्लामा मुश्ताक़ अहमद साहब निज़ामी दामत बरकातहुमुल कुदसिया।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदहू व नुसल्ली अ़ला हबीबेहिल करीम

यह बात बहुत ही खुश आइन्द और उम्मीद अफ़्ज़ा है कि जमात के होशमन्द, साहबे इल्म और अहले क़लम ने जमाअत और वक्त की अहम ज़रूरतों को शिद्दत से महसूस कर लिया है। माज़ी क़रीब में जितनी भी किताबें मनज़रे आम पर आयीं वह तक़रीबन पचास फ़ीसद से ज़ायद रद और अबताले बातिल पर मुश्तमिल थीं और इस सिलसिला में असलाफ़ के जज़बए एख़्लास को हद्फ़े मलामत भी नहीं बनाया जा सकता। चूँकि हर तरफ से मसलके अहले सुन्नत पर एक शदीद यलग़ार थी । इस लिए देफ़ाई मोरचा को संभालना वक्त का अहम तकाज़ा था। जिसका लाज़मी नतीजा यह हुआ कि दफ़अ़तन सभी ने उसको अपना मर्कज़े तवज्जह बना लिया। हम बजा तौर पर कह सकते हैं कि वह हमारी जमाअत का एक बोहरानी और उबूरी दौर था। हमारा हरीफ़ नित नये हथियारों से लैस होकर हम पर हमला आवर था। वहाबियत, देवबन्दियत, ग़ैर मोक़ल्लिदियत और क़ादियानियत सब इसी दौर की पैदावार हैं। हर एक को ब्रिटिश गवर्नमेन्ट से न सिर्फ यह कि शह मिल रही है, बल्कि ख़ज़ानों को खोल कर बढ़ावा दिया जा रहा था। जैसा कि खुद उनकी किताबें शाहिदे अद्ल हैं। अगर हमारे बुज़ुर्गों ने ऐसा न किया होता तो आज करोड़ों की तादाद में सुन्नी नज़र न आता। अग़यार का मनसूबा यही था कि हमला इतना सख्त हो कि जिसके देफ़ा की यह ताब न ला सकें। और इस बड़े दरिया को मुख़्तलिफ़ नहरों में बाँट दिया जाय। शायद कि शफ़ीक़ जौनपुरी ने इसी दिन के लिए कहा था–

निकालें सैकड़ों नहरें कि पानी कुछ तो कम होगा।
मगर फिर भी मेरे दरिया की तुग़ियानी नहीं जाती।।

अल्लाह जिसे रखे कौन उसे चखे। हमारे बुज़ुर्गों की काविशों का नतीजा है कि आज भी हिन्दुस्तान में सुन्नी भारी अक्सरीयत में अपना वज़न और मक़ाम रखता है। लेकिन अब हालात में पहले जैसा हैजान बाकी न रहा। सब का कच्चा चिट्ठा खोल दिया गया और हर तस्वीरें इस तरह बेनक़ाब कर दी गयीं, कि अब वह उजाले में ही नहीं रात की तारीकी में पहचाने जा सकते है। और इन जमातों के बुतलान पर इतना मवाद और मटेरियल फराहम कर दिया गया है कि हमारी दरसगाह का बाशऊर मुब्तदी तालिब इल्म भी बहुत अच्छी तरह इसका तआकुब कर सकता है। फलहम्दो लिल्लाहे अला ज़ालिक।

चुनान्चे अब जमाअत के दानिशवरों ने कलम का रूख बदल दिया है और दरस–ए–निज़ामी के शुरूह व हवाशी और अदब व तारीख निगारी वग़ैरह जैसे उमूर की तरफ इन की तवज्जोह मबज़ूल हो गयी है।

ज़ेरे मुताअ़ला किताब इसी सिलसिले की एक कामयाब कड़ी है। जामेअ माकूल व मनकूल मौलाना मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी प्रिन्सिपल, दारूल उलूम ग़रीब नवाज़, इलाहाबाद एक बहुत ही कामयाब मुदर्रिस होने के साथ बहुत ही सेहतमंद, संजीदा और शाइस्ता कलमी ज़ौक भी रखते हैं। दरसे हदीस से ख़ाली अवक़ात में तस्नीफ़ व तालीफ़ उनका हसीन मशग़ला है। अभी एक साल पेशतर दरस–ए–आलिया से मोतअल्लिक़ अल्तल्ख़ीस नामी किताब ज़ेवर–ए–तबअ़ से आरास्ता हुई है जो आलिम का एक बहुत ही जामेअ़ और मुकम्मल नोट है। तलबा और दर्सगाहों ने इसे हाथो हाथ लिया और मकबूलियत का यह आलम कि अब इसके दूसरे एडीशन की तैयारी हो रही है।

ज़रूरत थी कि खिलाफ़त–ए–राशेदा पर कुछ लिख जाये जिससे आम व खास सभी इस्तेफादह कर सकें। चुनान्चे ज़ेरे नज़र किताब इसी जज़बए एख़लास का समरह है। मौलाना अपनी इस पेश रफ्त में आम व ख़ास दोनों की तरफ से मुस्तहिक़े

Scanned by CamScanner

मुबारकबाद हैं। किताब के बाज़ बाज़ मज़ामीन को देख कर हमने यह महसूस किया कि मौलाना इस गुर से बहुत अच्छी तरह वाक़िफ़ हैं कि किसी शख़्सियत का तारीख साज़ होना और है, और मोअर्रिख़ की तारीख़साज़ी और है। यह तो शख़्सियत का कमाल है कि वह किसी मुल्क या क़ौम को अपनी ज़िन्दगी के ऐसे अनमिट नुक़ूश दे दे जिसे वह ज़िन्दगी की तारीकियों में रौशन चिराग़ समझे और मशअले राह बनाए। लेकिन यह मोअर्रिख़ का बहुत बड़ा नुक़्स या अनाड़ीपन है कि वह तारीख़ निगार न होकर तारीख़ साज़ बन जाये। तारीखसाज़ी और तारीख़ निगारी में बोअ़दल मशरिक़ैन है। आज कल आये दिन मोहम्मद बिन क़ासिम महमूद गज़नवी और हज़रत आलमगीर जैसी मशाहीर शख़्सियतों से मोतअल्लिक़ जो अफसोसनाक वाक़ेआत रोनुमा होते हैं, या तो इसी अनाड़ीपन का नतीजा हैं या फिर दीदा–ओ–दानिस्ता तारीख़ को मसख़ करने या इश्तेआल और इख़्तेराक़ व इन्तेशार की आग भड़काने के लिए ग़ैर आइनी व ग़ैर संजीदा रविश अख़्तियार की जाती है। मौलाना ने इस राह में बड़ी एतदाल पसन्दी का सबूत दिया है। ज़ेरे मोताअ़ला किताब की तरतीब में मौलाना को वाक़ेआत की फराहमी से कोई सरोकार नहीं था बल्कि तारीख़ के सफ़हात पर फैले हुए वाकेआत से बहुत ही मोहतात तौर पर बस ऐसे ही वाक़ेआत को छान फटक के बाद चुन लेना था जिन पर इफ़रात व तफरीत या गुलू व मुबालग़ा की छाप ना लगती हो। बेहम्देही तआ़ला मौलाना अपनी इस रविश में ग़ायत दरजा मोहतात और कामयाब साबित हुए और इस ख़ार दार झाड़ी से दामन बचा कर गुज़र जाना कुछ आसान न था वरना यह आये दिन का मुशाहदा है कि ख़िलाफ़ते राशेदा लिखने वाला अगर इफ़रात व तफ़रीत का शिकार हुआ तो रफ़्ज़ व ख़रूज वरना कम से कम तफ़ज़ीलियत की ज़द में तो आ ही जाता है। मगर मौलाना जब शेख़ैन की बारगाह ए अज़मत व जलाल में पहुँचे तो इतने अदब आशना कलम की सुबक रवी पर नसीम–ए–सहर भी सु जूदे नियाज़ लुटाये और जब शेरे खुदा हैदर–ए–कर्रार की बारगाह ए फज़ल व कमाल में शमशीर बराँ

के ज़ेरे साया गुज़रे तो बहुत ही सलीके और करीने से ऐसे रवाँ दवाँ गुजरे कि बादे सरसर गर्दे राह तक न पाये। गरज़ यह कि वह अपनी कलम कारी में ऐसे मोहतात नज़र आये कि बेसाख़्ता मरहबा सद मरहबा कहने को जी चाहता है। आज के बिगड़े हुए माहौल में यह किताब मोअर्रिख़ीन को तारीख़ निगारी का सलीक़ा सिखायेगी। हमें उम्मीद है कि अ़वाम और ख़्वास दोनों में इसकी पज़ीराई होगी।

मौलाना शफ़ीक़ पूरी जमाअ़त की तरफ से मुबारकबाद के मुस्तहिक़ हैं। खुदाये क़दीर बहुत दिनों उन्हें दीनी ख़िदमात के लिए सलामत रखे। आमीन। बजाहे सैय्यदिल मुर्सलीन सल्लल्लाहो तआ़ला अ़लैहे वआलेही वसल्लम।

मुश्ताक़ अहमद निज़ामी
मोहतमिम दारूलउलूम ग़रीब नवाज़ इलाहाबाद
6 जुलहिज्जह 1403 हिजरी।

☆☆☆

जामेआ दारूस्सलाम

आपका महबूब इदारा है।
उसको आप अपनी आँखों से एक बार ज़रूर देखें।

K49/A1 जे० के० आशियाना करैली इलाहाबाद

Scanned by CamScanner

पेशे लफ्ज

अल्हम्दो लिल्लाहे व कफ़ा
वसलामुन अ़ला इबादेहिल्लज़ीनस्तफ़ा

जिन लोगों की नज़रों में जमाले इलाही समाया हुआ हो वह मिट्टी की उन पुतलियों को जिन्होंने लोहा तेज़ कर के कान्धे पर डाल रखा है या बहुत सा चाँदी सोना अपने जिस्म पर लपेट लिया है। क्या चीज़ समझते हैं उनको तो खुद अकलीमे इश्क़ की सरवरी व शाही और शहरस्ताँ सिद्क़ व सफ़ा का तख़्त व ताज हासिल है।

यही वह लोग हैं जो अगर चाहें तो गोशये रूख़सत बेचारगी में अम्न व आफ़ियत के फूल चुन सकते हैं लेकिन वह फूल छोड़कर दहकते हुए अंगारे पकड़ लेते हैं जिनका ज़िक्र बाइसे ख़ैर व बरकत है और मोजिबे सआ़दते दारैन है।

कैसे गुस्ताख़ और दीदा दहन हैं वह लोग जो इन महबूबाने इलाही और शैदाये मोहब्बत के दामन से उलझते हैं और उनकी बेगुबार ज़िन्दगी पर कीचड़ उछालने की साजिशें करते हैं। मेरे हैरत की इन्तिहा न रही जब एक इस्तिफ़्ता मेरे पास आया जिसमें बड़ी चाबुक दस्ती और ऐय्यारी के साथ खुलफ़ाए–सलासह के दामन को तार तार करने की कोशिशें की गयी थीं, और उनके इज़्ज़त आबरू से खेलना चाहा गया था जो नज़र–ए–नाज़रीन है।

मोकर्रमी मुफ़्ती साहब – दारूल उलूम गरीब नवाज़
सलाम अलैकुम
मेज़ाज शरीफ़ – बज़िम्मेदारी अज़रूये शरीअ़त मुन्दरजा ज़ैल सवालात के जवाबात बसबूत क़ाबिले क़यास बतशरीह देने की ज़हमत गवारा फरमायें।

1 आया यह सहीह है कि रसूले खुदा ने अपना ख़लीफ़ा व जानशीन नामज़द नहीं किया बल्कि यह हुक्म दिया कि मेरे बाद आम मुसलमानों की राय से ख़लीफ़ा बना लिया जाये।

2 आया रसूले खुदा ने अलालत की हालत में कागज़, कलम, दवात मांगा या नहीं और अगर मांगा तो दिया गया या नहीं, और नहीं दिया गया तो क्यों?

3 आया रसूले खुदा की तजहीज़ व तकफ़ीन में जुमला मुसलमानान शरीक़ थे या नहीं। शरीक़ थे तो वह कौन लोग थे?

4 आया हज़रत अली ने हज़रत अबूबकर की बैअ़त किया या नहीं अगर किया तो फौरन किया या कितने रोज़ बाद किया।

5 आया जनाब फ़ातिमा ज़ोहरा का बाग–ए–फ़दक ज़ब्त किया गया और शिकम मुबारक पर दरवाज़ा गिराया गया और उसके अलावा दीगर अज़ीयतें पहुँचाई गयीं या नहीं। अगर ऐसा किया गया तो इसकी वजह क्या है।

6 आया कुरआन मजीद में वज़ू के मोतअल्लिक़ पैर धोना सही है।

7 आया रसूले खुदा और मुसलमानान और आइमा ताहरीन वगैरह हाथ छोड़कर नमाज़ पढ़ते थे या हाथ बाँधकर।

8 आया ताज़ियादारी एक बिदअ़त है और इमाम हुसैन और दीगर अइज़्ज़ह के ग़म में रोना नाजायज़ और गुनाह है।

9 तौला तबर्रा के मानी क्या हैं और इसका अमल क्या है ?

10 हज़रत उमर की वफ़ात के बाद कोई कमेटी बनी थी जिसमें हज़रत अली के खिलाफ़त के निसबत कौन सी शर्त रखी गयी। यानी इसको हज़रत अली ने इक़रार किया या इनकार किया ?

11 आयते मोअद्दत के क्या मानी हैं ?

12 आया तकिया व मोतआ़ नाजाएज़ है और इसका तअल्लुक़ कुरआन मजीद से है या नहीं।

13 आया मन कुन्तो मौलाहो फ़अलीयुन मौलाहो किस मौके पर आया और इसका क्या मतलब है ?

वस्सलाम
महबूब हसन, मोहम्मद पुर, गाज़ीपुर।
दारूलउलूम ग़रीबनवाज़ अहले सुन्नत का एक मर्कज़ी

Scanned by CamScanner

एदारा है, जहाँ दारूल इफ़्ता का बेहतरीन नज़्म है। सवाल व जवाब नेहायत तहक़ीक़ के साथ मुबरहेन व मुदल्लिल कर के दे दिया गया लेकिन दिल में यह ख़याल आया कि खुलफाए राशिदीन की ज़िन्दगी को मुस्तनिद हवालजात के साथ दलायल की ज़न्जीर में जकड़ कर पेश कर दिया जाय ताकि किसी राफ़्ज़ी या ख़ारजी को खुलफा–ए–राशिदीन पर कीचड़ उछालने का मौक़ा न मिल सके।

रफ़्ज़ व ख़रूज – यह इस्लाम के लिए दो नासूर हैं जिनका मक़सद इस्लाम के साथ खेलना और सियासी मक़ासिद की तहसील के सिवा कुछ नहीं।

उफ़्तादे तबअ है कि बाप की तौहीन बेटा गवारा नहीं कर सकता, तो मिज़ाजे ईमान यह है कि अंबिया व औलिया और सहाबा की तनकीस हम बर्दाश्त नहीं कर सकते हैं। बस यही आज़ार है जिसने मुझे कलम उठाने पर मजबूर किया और खुलफा–ए–राशिदीन का आप मोताअला कर रहे हैं।

क्या यही होता है कि ख़िर्मन–ए–गन्दुम सुलगता रहे और पानी छिड़कने वाले को हदफ़े मलामत बनाया जाये। कुसूर उसका है जिसने आग लगायी। बुझाने वाला तो हक़ अदा कर रहा है। खता अम्न व आफ़ियत चाक करने वाले की है। रफूगर की क्यों कलाई पकड़ते हो ? तीर को नहीं रोकते, सीने पर पहरा लगाते हो। नश्तर से आँखें नहीं मिलाते ज़ख्म से बातें करते हो। तुमने गुल फ़रोश के लिये चमन का दरवाज़ा नहीं बन्द किया। गुले तर से कहते हो कि फ़ितरते नमू क्यों दिखलाते हो?

आदिलो, जन्बह दारी ना करो। लैलाए मोहमिल नशीन की अशवह तराज़ी कतअ करना और कैस के दामाने जुनून की धज्जियाँ उड़ाना मुन्सिफ़ी नहीं है।

ऐ लोगो यह अपनी अपनी इस्तेदादे नज़र का फ़र्क़ है। वही गेसूए जानाँ तुम देखते हो तो फ़रोगे हुस्न का पर्चम समझते हो लेकिन मैं देखता हूँ तो सर चढ़ा हुआ जादू पाता हूँ। तुम्हारे ज़ौके नजारा की तस्कीन होती है और यहाँ जान ईमान वफ़ा लरज़ उठता है। भौंरे ने क्या कहा, फूल ने क्या सुना, शबनम

क्यों रोई, यह सब तुम्हें क्या मालूम। तुम तो रंग व बहार का समझे यह तो किसी राज़दार चमन से पूछो।

ऐ गोशये आफ़ियत में सोने वालो, अगर मेरी तर्ज़े फोग़ाँ से तुम्हारी नींद उचाट हो गयी है तो मुझे मेरी निशाते तबअ दे दो। मैं तुम्हारे वास्ते भी नसीमे ख़्वाब आवर को बुला दूँगा। इन रवाफ़िज़ व ख़वारिज और तमाम काले गोरे हमला आवरों से कह दो कि हमारे मोअ़तक़ेदात व मअमूलात पर हमला न करें। दुश्नाम व बोहतान के तीर न फेंकें। वह अपनी कमीनगाहों में रहें और हम अपनी शबिस्तानों में।

सबू अपना अपना है जाम अपना अपना
किये जाओ मैख़ार काम अपना अपना

शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी
ख़ादिमुत्तल्बह
दारूल उलूम गरीब नवाज़, इलाहाबाद
(यू0 पी0)
19 रम्ज़ानुल मुबारक 1403 हिजरी।

☆☆☆

शफ़ीक़–ए–मिल्लत की

"औलियाए केराम"

की तारीख पर एक अहम किताब

तारीख़े औलिया

मन्ज़रे आम पर आ चुकी है।

मुकद्दमह

1. गैर को नबी से अफजल जानना इज्माअन कतअन कुफ्र है।

2. जो कुरआन अजीम को नकिस माने यकीनन काफिर है।

3. हजरात शैखैन सिद्दीक अकबर व फारूक आजम पर तबर्रा फोकहाए केराम के नजदीक मुतलकन कुफ्र है।

4. रवाफिज़ की तकफीर उनके अकायदे कुफ्रिया के सबब वाजिब है।

5. कुरआन अज़ीम में जो एक लफ्ज या एक नुक्ते की कमी बेशी का कायल हो यकीनन काफिर व मुर्तद है।

6. बाद अंबिया मुर्सलीन तमाम मख्लूकाते इलाही इन्स व जिन व मलक से अफजल सिद्दीक अकबर है. फिर उमर फारूक आजम फिर उस्मान गनी फिर मौला अली रजिअल्लाहो अनहुम।

7. नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद खलीफा बरहक व इमाम मुतलक हजरत सैयदना सिद्दीक अकबर हैं। फिर फारूक आज़म फिर उस्मान गनी फिर हजरत अली फिर छः माह के लिए हसने मुज्तबा रजिअल्लाहो अनहुम हुए। इन हजरात को खुल्फाये राशिदीन और उनकी खिलाफत को खिलाफते राशिदा कहते हैं। क्योंकि उन्होंने हुजूर की सच्ची नियाबत का पूरा पूरा हक अदा फरमाया।

8. इनकी खिलाफत पर तरतीब फजीलत है, यानी जो इन्दल्लाह अफज़ल आला व अकरम था, वही पहले खिलाफत पाता गया।

9. खुलफाए अरबअ के बाद बकिया अशरह मुबश्शिरा हजरात हसनैन व असहाब बद्र व असहाब बैतु रिंजवान के लिए अफजलियत है और ये सब कतई जन्नती हैं।

10. तमाम सहाबए केराम अहले खैर व सलाह और आदिल हैं। उनके जिक्र खैर ही के साथ करना फर्ज है।

11. किसी सहाबी के साथ सू अकीदगी, बद मजहबी व गुमराही व इस्तेहकाक जहन्नम है।

13. कोई वली चाहे कितने ही मर्तबा का हो किसी सहाबी के मर्तबा को नहीं पहुँच सकता।

13. सहाबा केराम के बाहम जो वाकेआत हुए उनमे पड़ना हराम है, मुसलमानों को तो यह देखना चाहिए कि वह सब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जाँनिसार और सच्चे गुलाम हैं।

14. अमीर मआविया रजिअल्लह अन्हु का मुज्तहिद होना सैयदना अब्दुल्ला बिन अब्बास रजिअल्लाहो अन्हु ने हदीस सहीह बुखारी में बयान फरमाया है मुज्तहिद से सवाब व खता दोनों ही सादिर होते हैं। खता दो किस्म की है, खता एनादी, यह मुज्तहिद की शान नहीं और खता इज्तेहादी, यह मुज्तहिद से होती है और इस पर इन्दल्लाह असलन मवाखिजा नहीं। मगर अहकाम दुनिया में यह दो किस्म पर है। खता मुकर्रर कि इसके साहब पर इन्कार न होगा। यह खता इज्तेहादी है जिससे दीन में कोई फितना नहीं पैदा होता है जैसे हमारे नजदीक मुक्तदी का इमाम के पीछे सूरे फतिहा पढ़ना। दूसरी खता मुनकिर यह है कि जिसके साहब पर इन्कार किया जायेगा, कि इसकी खता बाइसे फितना है। हजरत अमीर मआविया रजिअल्लाहो अन्हु का हजरत सैयदना अली रजिअल्लाहो अन्हु से खिलाफत इसी किस्म की खता का था और फैसला वह जो खुद नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमा दिया कि मौला अली कि डिगरी और अमीर मआविया की मग़फिरत, रजिअल्लाहो अनहुम।

15. उम्मुल मोमिनीन सिद्दीका बिन्त सिद्दीक, महबूबए महबूबे रब्बिल आलमीन पर मअजअल्लाह तोहमत मलऊना अफक से अपनी नापाक जबान आलूदह करने वाला काफिर व मुर्तद है।

फायदा

सहाबा केराम की तादाद गजवए बद्र में 313 (तीन सौ तेरह) और हुदैबियह में 1500 (पन्द्रह सौ) कम व बेश फतहे मक्का में 10,000 (दस हजार) हुनैन में 12,000 (बारह हजार) हुज्जतुल विदा में 40,000 (चालीस हजार) गजवा तबूक में 70,000 (सत्तर

Scanned by CamScanner

हजार) और बवक्ते वफाते नबवी 1,24,000 (एक लाख चौबीस हजार) और जिन सहाबा से कुतुबे हदीस में रवायात मनकूल हैं उनकी तादाद साढ़े सात हजार है।

मोहम्मद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम

इब्ने अब्दुल्ला बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्दे मनाफ बिन कसा बिन कलाब बिन मुर्रत बिन कअब बिन लुई बिन गालिब बिन फहर बिन मालिक बिन नसर बिन कनाना बिन खजीमा बिन मुदरका बिन इलियास बिन मजर बिन नजार बिन मअद बिन अदनान।

सिद्दीक अकबर रजिअल्लाहो अन्हु

इब्न अबी कहाफा उस्मान बिन आमिर बिन उमर बिन तीम बिन मुर्रत बिन कअब बिन लुई।

उमर फारूक़ रजिअल्लाहो अन्हु

इब्न अलखत्ताब बिन नफील बिन अब्दुल उज़्ज़ा बिन रेयाह बिन अब्दुल्ला बिन करत बिन जराह बिन अदी बिन कअब।

उस्मान बिन अफ्फ़ान रजिअल्लाहो अन्हु

इब्ने अबिल आस बिन उमैया बिन शम्स बिन अब्दे मनाफ।

अली इब्न तालिब रजिअल्लाहो अन्हु

इब्न अब्दुल मुत्तलिब।

सैयद-ए-आलम

(सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम)

मक्सूद असली आप ही की जाते गेरामी है और खुलफाए राशिदीन का तजकिरा आप ही की ताल्लुक की वजह से है इस लिए आप का जिक्र किया जाना जरूरी है।

दुनिया की हालत

अरब पहले दीने इब्राहीमी पर थे। सैयदना हजरत इस्माईल अलैहिस्सलाम के बाद काबा शरीफ के मोतवल्ली उन के साहब जादे नाबित हुए और आप के बाद कबीलए जरहम मोतवल्ली हुआ। कुछ जमाने के बाद कबीलए खेजाआ का मोअर्रिसे आला उमर बिन लही ने कबीलए जरहम को निकाल कर खुद ही बैतुल्लाह का मोतवल्ली बन गया। अरब में बुत परस्ती की ईजाद इसी ने की है जमाना गुजरता गया, लोग दीने इब्राहीमी से भटकते गये और अरब दुनिया का बदतरीन मुल्क हो गया यानी अरब के तूल व अरज में बुत परस्ती का जाल बिछा हुआ था। शराब खोरी कुमार बाजी आम थी। माबूदाने बातिल को कादिरे मुतलक की तरह अपने लिए हाजत रवा मानते थे। अजरामे फलकिया की पूजा भी की जाती थी। आफताब व माहताब और सितारों की परस्तिश में फख महसूस करते थे। कोई फरिश्तों को खुदा की बेटियाँ समझ कर उन की पूजा करता था और खुदा के यहाँ उनकी शेफाअत के उम्मीदवार थे। बाज खुदा ही का इन्कार करते थे। अलगरज रोज व शब शराब खोरी कुमार बाजी जिना कारी और कत्ल व गारत गिरी में मशगूल रहते थे। कुसावते कलबी के यह हाल था कि लड़कियों के जिन्दा दरगोर किया जाता था। बुतों पर आदमियों की कुर्बानी चढ़ाने पर दरेग न करते थे। लड़ाइयों में आदमियों को जिन्दा जला देना, मस्तूरात के पेट चाक करना और बच्चों को तहे तेग करना अमूमन जायज समझा जाता था। इसी तरह अरब के अलावा पूरी दुनिया मौत के घाट पहुँच चुकी थी। चुनान्चे फारस के लोग आग के पूजने, माओं के साथ वती करने

Scanned by CamScanner

में मशगूल थे। तुर्क दिन रात बस्तियों के तबाह करने और बन्दगाने खुदा को अजीयत देने में मसरूफ थे, उनका दीन बुतों की पूजा और उनकी खसलत मखलूकात पर जुल्म करना था। हिन्दुस्तान के लोग बुतों की पूजा और खुद को आग में जलाने के सिवा कुछ न जानते थे और नियोग को जायज समझते थे। ये आलमगीर जुल्मत इस अम्र की मुक्तजी थी हस्बे आदते इलाही मुल्क अरब में जहाँ दुनिया भर के अदयाने बातिला व अकायदे कबीहा व एखलाक रदि्दया मौजूद थे। एक हादी तमाम दुनिया के लिए मबऊस हो पो गरीबों का गमगुसार हो। यतीमों, बेकसों, बेवाओं का मावा व मलजा हो। इस कुफ्र व शिर्क में बहती हुई दुनिया का रूख मोड़ दे जो बशारते ईसा हो, जो दुआए इब्राहीमी हो। जो नवैदे मसीहा हो, और जो पूरी दुनिया के लिए मुसलेहे आज़म, रहबरे आज़म, हादिये अकबर और हर एक के लिए बेमिसाल रिफार्मर हो। ऐसे माहौल में अल्लाह ताला के आखिरी पैगाम्बर सैयदे वलदे आदम, मालिके रेकाबे ओमम, कासिमे लोगत, हादिये सुबुल, रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम तशरीफ लाये। आप की वेलादत सरापा बशारत रबीउल औवल के महीना में दोशम्बा के दिन सुबह सादिक के वक्त बारहवीं तारीख को शहर मक्का में सरदारे कुरैश हज़रत अब्दुल मुत्तलिब के घर में हज़रत आमिना के बतन से हुई। वालिद माजिद का नाम नामी इस्मे गिरामी अब्दुल्लाह है।(रजिअल्लाहो अनहो) अंग्रेज़ी तारीख 20 अप्रैल 571 ई0 बयान की गई है। वेलादते तैयबा के वक्त बहुत से अजायबे कुदरत का जहूर हुआ कि कभी दुनिया में वह बातें न हुई। बेज़बान जानवरों ने बज़बान फसीह इन्सानी अन्दाज में आपकी खुशखबरी सुनायी। दरख्तों से आवाज़ें सुनी गई। बुत सरन्गू हो गये। दरिया सावा खुश्क हो गयी, दुनिया के दो अज़ीम बादशाहों कैसर व किसरा को बज़रिये ख्वाब आपकी अज़मत व रिफअत से आगाही दी गयी और यह भी बता दिया गया कि सितवत व अज़मत के सामने न सिर्फ किसरा व कैसर बल्कि सारी दुनिया की शौकतें सरन्गू हो जायेंगी। आप अभी बतने मादर ही में थे कि वालिद माजिद का साया सर से उठ गया और चार

साल की उम्र में माँ ने भी दागे मफारकत दे दी। आप के दूध पिलाने का शर्फ अज़ीम हज़रत हलीमा सादिया रजिअल्लाहो अन्हा को मिला और इस दौरान उन्होंने बडी ही अजीब व गरीब हालात के मुशाहदे किये। एक बड़ा हिस्सा आप के हालात व कमालात का इनसे मनकूल हैं और हक यह है कि बेहद खुशनसीब थीं। उनके खुशनसीबी का क्या कहना। उन्हें खुदा ने ज़माना-ए-नबूवत तक ज़िन्दा रखा और आप पर ईमान लाईं। मकाम जोअराना में जब आप माले गनीमत तकसीम कर रहे थे आकर मिलीं। आपने उनकी बहुत कुछ खातिर की और हसनैन के छः हज़ार असीराने जंग महज़ इस वजह से आज़ाद कर दिये गये कि हज़रत हलीमा के कबीला से ताल्लुक रखते थे।

शक्क़े सदर

आप का सीना चार बार चाक किया गया। दो मर्तबा बवक्ते बोअसत, और एक मर्तबा बवक्ते मेराज। पहली बार जब आप का शक्के सदर हुआ आप अपने रज़ाई भाई के साथ बकरियाँ चराने जंगल तशरीफ ले गये थे। यकायक आपके रज़ाई भाई दौड़ते हुए अपनी माँ हलीमा के पास आये और कहा, ऐ माँ मेरे कुरैशी भाई को दो सफेद पोश मर्दों नें आकर लिटाया और सीना चाक कर दिया। यह सुनकर वह बेहद परेशान हुयीं और फौरन जंगल गयीं तो देखा कि आप सही व सालिम हैं मगर चेहरे अकदस पर खौफ के कुछ आसार हैं, फिर सारा वाकेआ खुद आपने बताया। हर मर्तबा शक सदर में फरिश्ते आपका सीना मुबारक चाक कर के और आपके कल्ब अतहर को एक तश्त में जिसमें ज़मज़म का पानी होता था धोते थे।

शाम का सफर

जब आपकी उम्र मुबारक पच्चीस साल की हुई तो आपके सिद्क व अमानत का शोहरा दूर दूर तक पहुँच चुका था। यहाँ तक कि आप को अमीन का लकब दे दिया गया था। हज़रत खदीजा (जो एक मोअज़्ज़िज़ खानदान की मालदार खातून थीं) ने

Scanned by CamScanner

आप के पास पैग़ाम भेजा कि आप मेरा माले तेजारत ले कर शाम को जाया करें, जो मोआविज़ा मैं औरों को देती हूँ आप को उसका दोगुना दूँगी। नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कुबूल फरमाया।और माल तेजारत लेकर शाम के तरफ हजरत खदीजा के गुलाम मैसरह के साथ रवाना हुए।(वाज़ेह रहे कि यह शाम के दूसरा सफर था। पहला सफर जबकि आप की उम्र मुबारक बारह साल की थी उस वक्त आप अबूतालिब के साथ शाम तशरीफ ले गये थे और इसी सफर में बहेरार राहिब ने आप को देख कर पहचान लिया था और आप का हाथ पकडकर कहने लगा। ये सारे जहान का सरदार है, रब्बुल आलमीन का रसूल है, अल्लाह इसको सारे जहान का रसूल बना कर भेजेगा।) जब आप शाम पहुँचे वहीं एक राहिब नस्तूरा खानकाह के करीब उतरे। वह राहिब मैसरह की तरफ आया और कहने लगा, ऐ मैसरह यह कौन है जो इस दरख्त के नीचे उतरा है। मैसरह ने जवाब दिया। यह अहले हरम में से कुरैश में से हैं। इस पर राहिब ने कहा, सिवाय नबी के उस दरख्त के नीचे कभी कोई नही उतरा। फिर उसने पूछा क्या उनकी ऑखों में सुर्खी है? मैसरह ने कहा हाँ। और कभी दूर नही होती। यह सुनकर राहिब बोला यह वही हैं और यही आखिरूल अम्बिया है। काश मैं उनको पाता जिस वक्त यह मबऊस होंगे और मैसरह से कहा उन से जुदा न होना और नेक नियती से उनके साथ रहना क्योकि अल्लाह ने उनको नबूवत का शर्फ अता किया है। जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम खरीद व फरोख्त कर के मक्का वापस तशरीफ ला रहे थे तो हज़रत खदीजा चन्द औरतों के हमराह एक बाला खाना में बैठी हुई आप को देख रही थीं। उन्होंने देखा दो फरिश्ते आप के सर मुबारक पर धूप से साया किये हुए थे। मैसरह ने हज़रत खदीजा से बयान किया कि मैं ने तमाम सफर में आप का यही हाल देखा है और राहिब के कौल व वसीयत की खबर दी, और अल्लाह ताला ने इस बार भी तेजारत में दोगुना फायदा अता फरमाया। हजरत खदीजा ने जो देखा व सुना इससे साफ ज़ाहिर हो गया कि आप बेशक सारी मखलूक की तरफ अल्लाह के भेजे हुए हैं।

हज़रत ख़दीजतुल कुबरा से निकाह

हज़रत ख़दीजा की दो शादियाँ पहले हो चुकी थीं। इस वक्त बेवा थीं। इफ्फत व पाक दामनी के सबब से लोग दौरे जाहिलियत में भी उनको ताहिरा कहा करते थे, उनका सिलसिला नसब पाँचवीं पुश्त में जा कर सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से मिल जाता है। हज़रत ख़दीजा ने यअली बिन उमैया की बहन नफीसा से आप को निकाह का पैग़ाम भेजा और आप ने इस दरख़्वास्त की ख़बर अपने चचा अबू तालिब को दी उन्होंने क़ुबूल किया और तारीख़े मुतअय्यन पर अबूतालिब और अमीर हमज़ा और दीगर रऊसा–ए–ख़ानदान हज़रते ख़दीजा के मकान पर गये और उनके चचा उमर बिन असला ने और बाज़ के कौल के मुताबिक उनके भाई उमर बिन खुवैलद ने उनका निकाह कर दिया। बवक्ते निकाह उनकी उमर चालीस साल की थी और हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का सने मुबारक पच्चीस। अबू तालिब ने निकाह पढ़ाया। निकाह का खुतबा पढ़ा और पाँच सौ दिरहम महर क़रार पाया। यह अल्लाह के रसूल की पहली शादी थी। हज़रत ख़दीजा के वेसाल के बाद नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने चन्द और शादियाँ कीं और तमाम अज़वाजे मुताहिरात के महर पाँच सौ दिरहम पर मुकर्रर हुआ। हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तमाम औलाद हज़रत ख़दीजा ही के बतन से हुई। सिर्फ एक साहबज़ादे जिनका नाम इब्राहीम था, हज़रत मारिया क़बतिया के बतन से 8 हि0 में पैदा हुए और 10 हि0 में इन्तिक़ाल फ़रमा गये।

अज़वाजे मोतहहरात

(रजिअल्लाह अनहुन्न)

नाम	वेसाल	मदफ़न
ख़दीजा बिन खुवैलद	हिजरत से तीन साल पहले	कोह हजून
सौदा बिन्त ज़मआ	45 हि0 या 55हि0	" "

आएशा बिन्त सिद्दीक अकबर रज़िअल्लाहो अन्हु	57 हिजरी	जन्नतुल बक़ीअ
हफसा बिन्त उमर	45 हिजरी	जन्नतुल बक़ीअ
उम्मे सलमा बिन्त अबी उमैया	59हि0 या 62 हि0 या 63 हि0	जन्नतुल बक़ीअ
उम्मे हबीबा बिन्त अबी सुफ़ियान	44हिजरी	मदीनतुल बक़ीअ
ज़ैनब बिन हजश असदिया	20हिजरी	मदीनतुल बक़ीअ
ज़ैनब बिन्त ख़ज़ीमा	3हिजरी	
मैमूना बिन्त हारिस हेलालिया	51हिजरी	मुसर्रफ़
जवीरिया ख़ज़ाइया मुस्तलकिया	50जिरी	जन्नतुल बक़ीअ
सफ़िया इसराईलिया	50हिजरी	जन्नतुल बक़ीअ

औलादे केराम

नाम	सन वेसाल	किसके निकाह में थीं
हज़रत अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो अन्हु	क़ब्ले बेसत	
हज़रत कासिम रजिअल्लाहो अन्हु		
हज़रत इब्राहीम रज़िअल्लाहो अन्हो		
हज़रत ज़ैनब रजिअल्लाहो अन्हा	8 हिजरी	अबुल आस रजिअल्लाहो अन्हु
हज़रत रोकैया रज़िअल्लाहो अन्हा		हज़रत उसमान रजिअल्लाहो अन्हु
हज़रत उम्मे कुलसूम रजिअल्लाहो अन्हा	9हिजरी	हज़रत उसमान रज़िअल्लाहो अन्हु
हज़रत फातमा रज़िअल्लाहो अन्हा	11 हिजरी	हज़रत अली रज़िअल्लाहो अन्हु

ग़ज़वात और सराया

मोहद्दिसीन और अहले सैर की इस्तिलाह में ग़ज़वा वह लश्कर है जिसमे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बज़ाते खुद शरीक हुए और अगर हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बज़ाते खुद शामिल न हों बल्कि अपने असहाब में से किसी को दुश्मन के मुकाबिला में भेज दें तो वह लश्कर सराया कहलाता है।

गज़वात तादाद में सत्ताईस हैं जिनमें नौ में केताल हुआ। वह यह हैं बद्र, ओहद, मरीसीअ, ख़न्दक़, क़रीज़ा, ख़ैबर, फतह मक्कह, हुनैन, ताएफ।

सराया की तादाद सैंतालीस हैं।

वालियाने मुल्क को दावते इस्लाम

6 हिजरी जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हुदैबिया से वापस तशरीफ लाये तो 7 हिजरी के शुरू में वालियाने मुल्क को दावते इस्लाम के ख़तूत इरसाल फरमाये। इख़्तेसारन दरज ज़ैल हैं।

1. जोवाला नामा कैसरे रोम के नाम लिखा गया उसके अल्फ़ाज़ यह थे।

بسم الله الرحمٰن الرحيم. من محمد عبد الله ورسولهٗ الىٰ هرقل عظيم الروم سلام على من اتبع الهدىٰ اما بعد فانى ادعوك بدعايته الاسلام اسلم تسلم يوئك الله اجرك مرتين فان توليت فان عليك اثم الارسين ويا اهل الكتب تعالوا الى كلمة سواء بيننا و بينكم الا تعبد الا الله ولانشرك به شيئا ولا يتخذ بعضنا ابعضا اربابا من دون الله فان تولوا فقولوا اشهدو ايانا مسلمون.

तर्जमा

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के बन्दे और रसूल मोहम्मद की तरफ से हरकुल अमीरे रोम के नाम सलाम उस पर जिसने हेदायत की पैरवी की। अम्मा बाद मैं तुझको दावते इस्लाम की तरफ बुलाता

हूँ। तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। खुदा तुझको दोहरा सवाब देगा। अगर तूने रूगरदानी की तो तेरी रेआया का गुनाह तुझपर होगा। और अहले किताब आओ ऐसी बात की तरफ जो हममे और तुममें एकसाँ है कि हम खुदा के सिवा किसी की पूजा न करें और उसके साथ किसी को शरीक न करें और हममें से कोई अल्लाह को छोड़कर दूसरे को खुदा न बनाये अगर वह नहीं मानते तो कह दो कि तुम गवाह रहो कि हम तो मानते हैं।

2. खुसरू परवेज़ बिन हुरमुज़ बिन नौशेरवाँ शाह ईरान को यूँ लिखा।

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ من محمد رسول الله الىٰ
كسرىٰ عظيم فارس سلام على من اتبع الهدىٰ وامن بالله
ورسولهٖ واشهد ان لا اله الا الله وحدهٗ لا شريك لهٗ وان
محمداً عبدهٗ ورسولهٗ ادعواك بدعاية الله عز و جل فاني
رسول الله الى الناس كلهم لينذر من كان حيا و يحق القول
على الكافرين اسلم تسلم فان توليت فعليك اثم المجوس۔

तर्जमा

शुरू खुदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के रसूल मोहम्मद की तरफ से किसरा अमीर फारस के नाम सलाम उस पर जिसने इस्लाम की पैरवी की और अल्लाह और उसके रसूल पर ईमान लाया और गवाही दी कि कोई माबूद बरहक नहीं मगर खुदा एक जिसका कोई शरीक नहीं और यह कि मोहम्मद उसका बन्दा और रसूल है मैं तुझे दावत खुदाए अज़्ज़ व जल्ल की तरफ बुलाता हूँ क्योंकि मैं तमाम लोगो की तरफ खुदा का रसूल हूँ ताकि डराये उनको जो जिन्दा हो और साबित् हो जाये कलमये अज़ाब काफिरों पर। तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। पस अगर तूने न माना तो मजूसियों का गुनाह तुझ पर है।

3. अस्हमअह नजाशी शाहे हबशह को जो नामए मुबारक लिखा उसके अल्फ़ाज़ यह हैं।

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ من محمد رسول الله الى

النجاشي ملك الحبشه سلم انت فاني احمد اليك الله الذى لا
اله الا هو الملك القدوس السلام المؤمن المهيمن واشهد ان
عيسىٰ بن مريم البتول والطيبة الحصينه حملت بعيسى
فخلقهٗ من روحهٖ ونفخهٗ كما خلق آدم بيده والىٰ ادعوك الى
الله وحدهٗ لا شريك لهٗ والي موالات على طاعتهٗ و ان تتبعنى
وتومن بالذى جائنى فانى رسول الله اليك وانى ادعوك و
جنودك الى الله عزوجل وقد بلغت ونصحت فاقبلوا
نصيحتى والسلام على من اتبع الهدىٰ۔

तर्जमा

अल्लाह के नाम से शुरू जो बड़ा मेहरबान और नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के रसूल की तरफ से नजाशी शाह हबशह के नाम। तू सलामती वाला है। मैं तेरे पास खुदा का शुक्र अदा करता हूँ जिसके सिवा कोई माबूद बरहक नहीं। वह बादशाह है पाक ज़ात सलामत सब ऐब से अमान देने वाला है निगेहबान और मैं गवाही देता हूँ कि ईसा बिन मरियम रूहुल्लाह हैं और अल्लाह का कलमा जिससे उसने इलक़ा किया। मरियम बतूल अफीफा की तरफ उसने ईसा को उठाया। पस खुदा ने उसे पैदा किया अपनी रूह से और उसके फूँकने से जैसा कि पैदा किया आदम को अपने हाथ से और मैं तुझे बुलाता हूँ अल्लाह की तरफ जो वहदहू लाशरीक है और उसकी एताअत पर मुवालात की तरफ और यह कि तू मेरी पैरवी करे और ईमान लाये उस चीज पर जो मुझे मिली क्योंकि मैं तेरी तरफ अल्लाह का रसूल हूँ। और मैं तुझको और तेरे लश्कर को अल्लाह अज़्ज़ व जल्ल की तरफ बुलाता हूँ। मैंने पहुँचा दिया और नसीहत कर दी। तुम मेरी नसीहत को कबूल करो। वस्सलामो अला मनित्तबल होदा।

4. मकूकस वालिए मिस्र हरकुल कैसर रोम का बाजगुज़ार को यह मुबारक वाला नामा तहरीर फरमाया।

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ من محمد عبد الله ورسوله
الىٰ المقوقس عظيم القبط سلام على من اتبع الهدىٰ اما بعد
فانى ادعوك بدعاية الاسلام اسلم تسلم يوتك الله اجدك

Scanned by CamScanner

مرتين فان توليت فعليك اثم القبط يا اهل الكتاب تعالوا الى
كلمة سواء بيننا و بينكم الا تعبد الا الله ولا شريك به شيئا
ولا يتخذ بعضنا بعضا اربابامن دون الله فان تولوا فقولوا
اشهد وايانا مسلمون۔

तर्जमा

शुरू ख़ोदा के नाम से जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। मोहम्मद अल्लाह के बन्दे और अल्लाह के रसूल की तरफ़ से मक़ूक़स अमीर क़बत़ के नाम। सलाम उस पर जिसने हेदायत की पैरवी की। अम्मा बाद मैं बुलाता हूँ तुझको दावते इस्लाम की तरफ़। तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। तुझको अलबत्ता दोगुना सवाब देगा। अगर तू ने न माना तो तुझपर गुनाह क़बतियों का होगा। ऐ अहले किताब इस बात की तरफ़ आओ। जो हममे और तुममे यकसां है कि हम इबादत न करेंगें मगर अल्लाह की ओर शरीक न ठहरायें इसके साथ किसी और को न बनायें हमसे किसी दूसरे को रब सिवाय अल्लाह के सो अगर वह न मानें तो कहो कि तुम गवाह रहो कि हम हैं मानने वाले।

5. हूज़ह बिन ह़नफ़ी साहब यमामह की तरफ़ यूँ लिखा।

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ من محمد رسول الله الى
هوذه بن على سلام على من اتبع الهدىٰ واعلم ان دينى
سيظهر الى منتهى الخف والحافر فاسلم اجعل ما تحت
يديك۔

तर्जमा

शुरू ख़ोदा के नाम से जो बड़ा मेहरबार नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के रसूल मोहम्मद की तरफ़ से हूजह बिन अली के नाम। सलाम उस पर जिसने हेदायत की पैरवी की। तुझे मालूम रहे कि अनक़रीब मेरा दीन इस हद तक पहुँचेगा जहाँ तक ऊँट और खच्चर जाते हैं, तू इस्लाम ला सलामत रहेगा। मैं तेरा मुल्क तुझको दे दूँगा।

6. कैसरे रोम की जानिब से हारिस बिन अबी शमर ग़स्सानी हुदूदे शाम का गवर्नर था। गोतए दमिश्क उसका पाय–ए–तख़्त था। उसको यह नामए मुबारक भेजा गया।

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ من محمد رسول الله الى
الحارث بن ابى شمر سلام على من اتبع الهدىٰ وآمن به و صدق
فانى ادعوك الى ان تو من بالله وحدهٗ لا شريك لهٗ يبقىٰ ملكك۔

तर्जमा

शुरू ख़ोदा का नाम लेकर जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। अल्लाह के रसूल मोहम्मद की तरफ़ से हारिस बिन अबी शमर के नाम। सलाम उस पर जिसने हेदायत की पैरवी की और उसपर ईमान लाये। तेरी हुकूमत क़ायम रहेगी।

7. 8 हिजरी में मन्ज़र बिन सादे हाकिम बहरीन को एक तबीलीगी ख़त तहरीर फरमाया। जिसके मोतअला के बाद मन्ज़र के साथ वहाँ के तमाम अरब और बाज़ अजम ईमान लाये।

8. वालियान अमान के नाम यह नामए मुबारक तहरीर फरमाया।

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ من محمد بن عبد الله الى جيفر
وعبد ابنى الجلندى سلام على من اتبع الهدىٰ امابعد فانى
ادعوكما بدعاية الاسلام اسلما تسلما فانى رسول الله الى
الناس كافة لا ينذر من كان حيا ويحق القول على الكافرين
وانكما ان اقررتما بالاسلام وليتكما مكانكما وان ابيتما ان
تقربا الاسلام فان ملكما زائل منكما وخيلى تحل بساحتكما
وتظهر بنوتى ملككما۔

तर्जमा

शुरू ख़ोदा का नाम ले कर जो बड़ा मेहरबान नेहायत रहमत वाला है। मोहम्मद बिन अब्दुल्लाह की तरफ़ से जैफर व अब्द जलन्दी के दो बेटों के नाम। सलाम उसपर जिसने हेदायत की पैरवी की। अम्मा बाद, मैं तुम दोनों को दावते इस्लाम की तरफ़ बुलाता हूँ। तुम इस्लाम लाओ सलामत रहोगे, क्योंकि मैं

Scanned by CamScanner

तमाम लोगों की तरफ़ अल्लाह का रसूल हूँ। ताकि मैं डराऊँ उस को जो ज़िन्दा हो और काफ़िरों पर हुज्जत साबित हो जाये, अगर तुम इस्लाम का इकरार कर लो तो मैं तुमको तुम्हारा मुल्क दे दूंगा, अगर तुम इकरारे इस्लाम से इन्कार कर दो तो तुमहारा मुल्क तुम्हारे हाथों से निकल जायेगा। और मेरे सवार तुम्हारे मकानात की फिज़ा में उतरेंगे और मेरी नबूवत तुम्हारे मुल्क पर गालिब आवेगी।

नामए कासिदीन के नाम

बादशाहों के नाम	कासिदीन के नाम
शाह हरकुल	हज़रत वहिया कलबी
मनज़र बिन सादी	हज़रत अब्दुल्लाह हजाफा सहमी
	हज़रत हला बिन हज़री
असहमा नजाशी	हज़रत उमर बिन उमैया खमरी
मकूकस वालिए मिस्र	हज़रत हातिब बिन बलतआ
हूजह बिन अली हनफी	हज़रत सलीत बिन उमर आमरी
हारिस बिन अबी शमर गुस्सानी	हज़रत शुजा बिन वहब
वालिान ओमान जैफर व अब्द	हज़रत उमर बिन अलआस

कुछ अहम गज़वात

नाम	तारीख
गज़वए बद्र	12 रमज़ान 2 हिजरी
माअरकए सवीक	2 हिजरी
ओहद	3 हिजरी
दौमतुल जन्दल	4 हिजरी
बनू नसीर	4 हिजरी
बनू महारिब बनू सअ़लबा	4 हिजरी
बद्र–ए–सोग़रा	4 हिजरी
बनू मुस्तलक़	5 हिजरी
अहज़ाब (खन्दक)	5 हिजरी
बनू कुरैज़ह	5 हिजरी
जंग–ए–ख़ैबर	7 हिजरी
फतहे मक्का	8 हिजरी
हुनैन	8 हिजरी
तबूक	9 हिजरी

वेसाल शरीफ

जब आप की उम्र चालीस साल थी आपको रेसालत से सर्फराज़ फरमाया गया। यानी हक तआला ने अपना रसूल बना कर सारे आलम की तरफ मबऊस फरमा दिया। "वमा अरसलनाका इल्ला काफ़्फ़तन लिन्नासे बशरीरौं व नज़ीरा।" और कामिल तेइस साल तक आपने बड़ी मेहनत और जांफिशानी और जफ़ाकशी के साथ फ़राएज–ए–रिसालत को अदा फरमाया। और इसके लिये बड़ी बड़ी अज़ीयतें बर्दाश्त कीं। पागल व मजनून का ख़िताब दिया गया। राह में काँटे बिछाये गये। ज़ख़्मों से लहूलुहान किया गया। दन्दाने मुबारक शहीद किये गये। कूड़े करकट डाले गये। लेकिन आपने हमेशा खन्दः पेशानी से इन तमाम मसाएब का मुक़ाबला किया और यह दुआ फरमाते रहे। "अल्लाहुम्मा इहदे क़ौमी फइन्नहुम ला यअलमून।" चुनान्चे मुद्दते क़लील ही में आपकी तालीम व तरबियत ने खुदा परस्तों की एक बड़ी जमात तैयार कर दी जो आला तरीन एखलाक़ और कामिल तरीन जुह्द व तक़वा में इस मर्तबा में थे कि तारीख़े आलम इनकी मिसाल पेश करने से आजिज़ है। ऐलाने नबूवत के बाद तेरह साल तक आपने मक्का मोकर्रमा में क़याम फरमाया। फिर हिजरत के हुक्म के नुज़ूल के बाद आप मदीना मुनव्वरा तशरीफ लाये। दस बरस मदीना मुनव्वरा में क़याम रहा। और इसी दस साल में उन्नीस लड़ाइयाँ भी आप को काफिरों से लड़नी पड़ीं। मोअजेज़ाते खवारिक़ जो आपसे सादिर हुए उनका शुमार नहीं। इस मौज़ू पर मुस्तक़िल रिसाले व किताबें तस्नीफ़ की गयी हैं। रहती दुनिया तक कुरआन सब से बड़ा एजाज़ है जो यह चैलेन्ज कराया है।

Scanned by CamScanner

"इन कुनतुम फी रैबिम् मिम्मा नज़्ज़लना अला अ़ब्देना फ़ातू बेसूरतिम् मिम् मिसलेही।" ऐलाने नबूव्वत के बारहवें साल जबकि आप की उम्र शरीफ़ इक्यावन साल नौ माह की थी आपको मेराज अता की गयी। आसमानों पर तलब किया गया। जन्नत व दोज़ख़ की सैर करायी गयी। आलमे मलकूत के अजायबात और आयाते कुबरा का मुशाहदा करा दिया गया।

जब उम्र शरीफ तिरसठ साल की हुयी और हिजरत का ग्यारहवाँ साल शुरू हुआ तो बारहवीं रबीउल अव्वल को दोशम्बा के दिन चाश्त के वक्त चौदह दिन अलील रहकर इस आलम से रेहलत फरमायी और रफ़ीके आला के जवारे इज़्ज़त में सकूनत अख़्तियार की। जब रूह ने जिस्म अतहर से आला इल्लीयीन की तरफ परवाज़ की तो यह अल्फ़ाज ज़बान पर जारी थे।

"अल्ला हुम्मा फ़ीररफ़ीकिल आला।"

हज़रत अली (रज़िअल्लाहो अन्हो) ने आपको गुस्ल दिया। हज़रत अब्बास व फ़ज़ल बिन अब्बास हुजूर के पहलू बदलने में हज़रत अली की मदद करते थे। और कसम बिन अब्बास ओर ओसामा और हुजूर के गुलाम शोक़रान पानी डाल रहे थे। हुजूर के कफन में तीन सूती कपड़े समूल के बने हुए थे। जिनमें कमीज़ व अमामा न था।

शब चहार शंबा में हुजूर को दफन किया गया ताख़ीर की वजह कई उमूर थे चुनान्चे मोहाजिरीन व अन्सार मे बैअत के बारे में इख़्तिलाफ पैदा हो गया। इस इख़्तिलाफ का फैसला होते ही इस अम्र में इख़्तिलाफ अदा हुआ कि हुजूर को कहाँ दफन किया जाय। कब्र शरीफ में लहद चाहिए या शिक़। आखिर कार हज़रत अबूतलहा अन्सारी ने लहद खोदी। नमाज़ जनाज़ा हुजरा शरीफ के अन्दर ही बग़ैर इमामत अलग अलग पढ़ी गयी। अख़ीर में हज़रत सिद्दीक अकबर (रजिअल्लाहो अन्हो) ने जनाज़ा मोकद्दस पर नमाज़ पढ़ी फिर किसी ने न पढ़ी। कि बाद सलात वली फिर एआदा नमाज़ जनाज़ा का अख़्तियार नहीं। मबसूत इमाम शमशुल आएमा सरख़सी में है

ان ابا بيكر رضى الله عنهٔ كان مشغولا بتويتهٖ الامور

وتسكين الفتنة فكانوا يصلون عليه قبل حضوره وكان الحق لهٔ لانهٔ هو الخليفة فلما فرغ صلى عليه ثم لم يصلى عليه بعدهٔ عليه.

और बहीक़ी और तिबरानी मोअज्जम औसत में हज़रत अब्दुल्ला बिन मसऊद रजिअल्लाहो अन्हो से रावी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया

اذا غسلتمونى وكفنتمونى فصلووا على سريرى ثم اخرجوا عنى فان اوّل من يصلى على جبرئيل ثم ميكائيل ثم اسرافيل ثم ملك الموت مع جنوده من الملئيكة باجمعهم ثم ادخلو على فوجا بعد فوج فصلوا على وسلموا تسليما.

जब मेरे गुस्ल व कफ़न से फ़ारिग़ हो मुझे तख़्त पर रख कर बाहर चले आओ सब से पहले जिब्रईल मुझपर सलात करेंगे फिर मीकाईल फिर इसराफ़ील फ़िर मलेकुल मौत अपने सारे लश्करों के साथ फिर गिरोह गिरोह मेरे पास हाज़िर हो कर मुझपर दरूद व सलाम अर्ज़ करते जाओ।

आख़िरी वसीयत जो आपने फरमायी थी वह यह थी कि नमाज़ की हिफाज़त करना और अपने लौंडी और गुलामों के साथ नेक सलूक करना। मुश्रिक़ीन को जज़ीर–ए–अरब से निकाल देना। मलूक व उमरा के एलची जो तुम्हारे पास आया करें उनको जाएज़ा व ईनाम दिया करना। हज़रत आयशा रजिअल्लाहो अन्हा के हुजरे में जिस जगह आपकी वफ़ात हुई थी वहीं आपकी कब्र शरीफ़ बनायी गयी।

हुलिया मुबारक

जिन बुजुर्गों ने आपका हुलिया बयान किया उन्होंने हुजूर की सिफ़त की सिर्फ एक झलक का एदराक किया है और हक़ीकत वस्फ पेश कर सके है न हकीकत वस्फ को। क्योंकि हकीकत वस्फे हुजूर को ख़लिक़ के सिवा किसी ने नहीं पहचाना।

चुनान्चे इमाम क़ुर्तबी अपनी किताब "अस्सलात" में कये आरिफ़ का क्या ही अच्छा कौल नकल फरमाया है। कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का कामिल हुस्न हमारे

Scanned by CamScanner

लिए ज़ाहिर न हुआ। क्योंकि अगर ज़ाहिर हो जाता तो हमारी आँखें आप के दीदार की ताब न ला सकतीं।

आज़ाए शरीफ़ में तवस्सुत व एअतदाल जो हुस्न व जमाल का मदार और फ़ज्ल व कमाल का मबना है बतौर कुल्लिया हर जगह मलहूज़ है।

रूये मुबारक

जो जमाले इलाहिया का आइना और अनवारे तजल्ली का मज़हर था। पुर गोश्त और किसी कद्र गोल था।

आँखें मुबारक

- बड़ी और कुदरते इलाही से सुरमगीं और पलकें दराज़ थीं। आँखों की सफेदी में बारीक सुर्ख़ डोरे थे।

अबरूए मुबारक

दराज़ और बारीक थीं और दरम्यान में दोनों इस कदर मुत्तसिल थीं कि दूर से मिली मालूम होती थीं। इन दोनों के दरम्यान एक रग थी जो गुस्सा के वक्त हरकत में आजाती और खून से भर जाती।

बीनीए अक़दस

आपकी नाक मुबारक खूबसूरत और दराज़ थी और दरम्यान में उभराव नुमायाँ था। पेशानी कुशादा और चराग़ की मानिन्द चमकती थी।

गोश मुबारक

हर गोश मुबारक कामिल व ताम थे। कूव्वते बसीर की तरह कूव्वते सेमाअ भी आपको बतरीके ख़र्क आदत ग़ायत दरजा की अता की थी। आसमान के दरवाजे के खुलने की आवाज़ को भी सुन लेते थे।

दहान मुबारक

फ़राख़ रूख़सार मुबारक हमवार दन्दानहाए पतीसीं से

कुशादह और रोशन व ताबाँ। जब आप कलाम फरमाते दन्दानहाए पतीसीं से नूर निकलता दिखाई देता। जब आप ज़ेहक फरमाते तो दर व दीवार रौशन हो जाते। आपको कभी जमाई ा आयी।

लोआब-ए-दहन

जख़्मी और बीमारों के लिए शिफ़ा था।

ज़बाने मुबारक

आप अफ़्सहुल ख़ल्क़ थे। और फसाहत में ख़रिक आदत हद तक पहुँचे हुए थे। आप के जवामेउल कलिम बदाए हुकम अमसाले सायरा व मकातीब व मवाइज़ मशहूर आफ़ाक मे कलाम शीरीं हक़ व बातिल मे फर्क करने वाला न हद से कम न हद से ज़्यादा गोया आप के कलाम लड़ी के मोती हैं जो गिर रहे हैं।

आवाज़ मुबारक

तमाम अम्बियाए केराम खूबरू और खुश आवाज़ थे मगर आँहुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम उन सब से ज्यादा खूबरू और खुश आवाज़ थे।

खन्दा व गिरयँह मुबारक

आप अमूमन तबस्सुम फरमाया करते थे। शाज़ व नादिर ज़ेहक की हद तक पहुँचे और कहकहा कभी न मारते। आप की गिरयए शरीफ में आवाज़ बलन्द न होती मगर आँसू मुबारक आँखों से गिर पड़ते थे।

सिर मुबारक

बड़ा था। यह वही सर मुबारक़ है जिसपर कब्ल बअस्त बतरीके अरहास गरमा में बादल साया किये रहता था।

गरदन मुबारक

चाँद की मानिन्द साफ।

Scanned by CamScanner

दस्त मुबारक

कफ़ दस्त व बाज़ू मुबारक पुर गोश्त थे हज़रत अनस फरमाते हैं कि मैंने किसी रेशम या देबा को आपके कफ़े मुबारक से ज़्यादा नरम न पाया। जिस शख़्स से आप मुसाफह फरमाते वह दिन भर अपने हाथ में खुशबू पाता। और जिस बच्चे के सर पर आप हाथ फेर देते वह खुशबू में और बच्चों से मुमताज़ हो जाता।

सीना मुबारक

कुशादह था और कल्ब शरीफ़ पहला जिस्मे असरारे इलाहिया व मआरिफे रब्बानिया वदीअत रखे गयें।

शिकम मुबारक

सवाउल बतन वस्सदर थे आपका शिकम व सीना मुबारक हमवार व बराबर थे। न शिकम सीना से न सीना शिकम से बुलन्द था। आपके बोल बराज़ पाक थे। नीज़ तमाम फुज़लात भी।

पुश्त मुबारक

साफ व सफेद थे। कि गोया पिघलाई हुयी चाँदी है। हर दोशाना के दरम्यान एक नूरानी गोश्त का टुकड़ा था जो बदन शरीफ के बाकी अजज़ा से उभरा हुआ था। उसे मोहरे नबूवत या खातिमे नबूवत कहते हैं।

हर दो पायए अकदस

पुर गोश्त और ऐसे कि किसी इन्सान के न थे। और नरम साफ ऐसे कि उन पर पानी ज़रा भी न ठहरता। बल्कि फौरन गिर जाता।

एड़ियाँ

कम गोश्त हर दोसाक़ मुबारक बारीक सफेद व लतीफ गोया खजूर का गाफा हैं। जब आप चलते तो कदम मुबारक को

क़ूवत और वकार व तवाज़ोह से उठाते। जैसा कि अहले हिम्मत व शुजाअत का कायदा है।

क़द मुबारक

न बहुत दराज़ थे न कोताह कद, बल्कि म्याना क़द। माइल बदराज़ी थे। मगर जब लोगों के साथ होते तो सब से बलन्द व सर्फराज़ होते। आपकी क़ामते ज़ेबा का साया न था।

रंग मुबारक

रंग मुबारक गोरा रोशन व ताबां मगर उसमे किसी कदर सुर्खी मिली हुयी।

जिल्द मुबारक

आपकी जिल्द मुबारक नरम थी। एक वस्फ हुज़ूर में यह था कि खुशबू लगाये बगैर आप से ऐसी खुशबू आती थी कि कोई खुशबू उसको पहुँच न सकती थी।

मूये मुबारक

न तो बहुत घुंघराले थे न बिल्कुल सीधे बल्कि बैन बैन थे। इन बालों की दराज़ी में मुख़्तलिफ़ रवायात आयी हैं। कानों तक कानों के निस्फ तक कानों के लौ तक शाने मुबारक के नज़दीक तक इन सब रवायतों में ततबीक़ यूं है कि उनको मुख़्तलिफ़ औकात व उसूल पर महमूल किया जाये। यानी जब आप कटवा देते तो कान तक रह जाते । फिर बढ़कर निस्फ गोश या नरमए गोश, या शाना तक पहुँच जाते। दाढ़ी मुबारक घनी थी उसमें कंघी करते आइना देखते सोने से पहले आँख में तीन तीन बार सुर्मा डालते। मूँछ मुबारक को कटवाया करते। उम्र शरीफ के अखीर में आप की रेश मुबारक और सर मुबारक में तकरीबन बीस बाल सफेद थे। गले और नाक के दरम्यान बालों का एक बारीक ख़त था।

लिबास

Scanned by CamScanner

सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का आम लिबास चादर कमीज़ और तहबन्द था। यमनी चादरें बेहद पसन्द फरमाते थे। बाज़ अवक़ात ऊनी जुब्बा शामिया इस्तेमाल फरमाया जिसकी आसतीन इस कदर तंग थी कि वजू के वक्त हाथ आस्तीनों से निकालने पड़ते थे। सफेद लिबास पसन्द फरमाया और सुर्ख लिबास ना पसन्द फरमाते थे।

अमामा

अमामा का शिमला छोड़ा करते और कभी न छोड़ते। अमामा अकसर सियाह रंग का होता था। नालैन शरीफ़ चप्पल की शक्ल की थी।

जब से देखा है लिबासे बशरी में तुमको
हर फरिश्ते की तमन्ना है कि इन्साँ हो जाये

अदब गाहेस्त ज़ेरे आसमाँ अज़ अर्श नाजुक तर
नफ्स गुम करदा मी आएद जुनैद व बायज़ी ईंजा

☆☆☆

जामेआ दारूस्सलाम

आपका महबूब इदारा है।
उसको आप अपनी आँखों से एक बार ज़रूर देखें।

K49/A1 जे० के० आशियाना करैली इलाहाबाद

अफज़लुल बशर बादल अंबियाए
बित्तहक़ीक़

११ हि० ता १३ हि०

सैयदना अबूबकर सिद्दीक़

रज़िअल्लाहो अन्हो

की

मज़हबी व सियासी किरदार का मुकम्मल तज़केरह

अज़

शफीके मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी
बानी अफज़लुल मदारिस इलाहाबाद

Scanned by CamScanner

सैयदना अबूबकर सिद्दीक

रजिअल्लाहो अन्हो

नाम: अब्दुल्ला बिन अबी कहाफा उस्मान बिन आमिर बिन उमर बिन कअब बिन सअद बिन तीम बिन मर्रह इब्न कअब बिन लुई बिन ग़ालिब अलकुरैशी अलयतीमी।

मर्रह पर आ कर आप का सिलसिलए नसब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मिल जाता है। (कालन्नूदी आफ़ी तहज़ीबही)

हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़िअल्लाहो अन्हो का नाम अब्दुल्लाह है यही सही है और बाज़ ने कहा कि अतीक़ नाम था। और जिस पर तमाम उलमा हैं यह है कि लक़ब अतीक़ था। इस लिए कि आपको जहन्नम से आज़ादी की बशारत दी गयी। (कमा वरद फ़ी हदीसिम रवाहु तिरमिज़ी)

और बाज़ ने कहा अतीक़ लक़ब की वजह एताक़तह वजहिहि यानी हुस्न व जमाल है।(कालहु अल मसअब बिन जुबैर वल्लैस बिन सअद व जमाअत:)

सिद्दीक

उम्मत का इस बात पर इजमा है कि आपका लक़ब जो सिद्दीक पड़ा इस की वजह यह है कि आपने सब से पहले रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तसदीक़ की।

वेलादत

रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वेलादत तैयबा के दो साल चन्द महीनों के बाद सैयदना सिद्दीके अकबर रजिअल्लाहो अन्हो की वेलादत बा सआदत हुई आप मक्का मोकर्रमा में पैदा हुए। ये अपनी कौम में साहबे अज़्ज़ व हशम और माल व दौलत में मुमताज़ तरीन लोगों में से थे।

ज़ुबैर इब्न बोकार और इब्न असाकर ने मअरूफ़ बिन खरबूज़ से रवायत की है कि अबू बकर सिद्दीक उन ग्यारह हज़रात में से एक हैं जिन में जाहिलियत और इस्लाम की शराफत दोनों ही पाई गयी। यानी दोनों ही दौर में साहिबे फ़ज़्ल व कमाल रहे।

हालात

अबू नईम ने बसनदे जैयिद नक़ल की है कि आप ने ज़मानए जाहिलियत में भी शराब नहीं पी। और अपने ऊपर शराब हराम कर ली थी।

सफर व हज़र हमा वक्त रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हमराह आप रहते थे यहाँ तक कि शबे हिजरत भी आप के साथ साथ थे जिसका बयान आयते करीमा में है। "सानियस नैने इज़ होमा फिलग़ारे इज़ यक़ूलो लेसाहेबेही ला तहज़न इन्नल्लाहा मअना।" अहमद व हाकिम ने अली रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत की है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया बद्र के दिन मेरे और अबू बकर के बारे में कि "मआ अहदोकोमा जिबरईला व मअल आखिरे मीकाईला।" यानी तुममें एक के साथ जिबरईल हैं और एक के हमराह मीकाईल।

आपकी शुजाअत

बज़ाज़ ने अपनी सनद में हज़रत अली रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत की

اخبرنی باشجع الناس قالو الانعلم فمن قال ابوبکر
انّهٗ لما کان یوم بدر فجعلنا لرسول الله صلی الله علیه وسلم
عریشا فقلنا من یکون مع رسول الله صلی الله علیه وسلم
لئلا یهویٰ الیهٖ احد من المشرکین فوالله ما دفی منا احد الا
ابابکر شاهراً یا یسف علی راس صلی الله علیه وسلم لا
یهوی الیه احد الاهوی الیه نحفوا شجع الناس. (ملخصاً)

Scanned by CamScanner

तर्जमा

हज़रत अली ने फरमाया मुझे बताओ लोगों में सब से ज़्यादा बहादुर कौन है लोगों ने कहा हम नहीं जानते लेकिन आप बतायें। फरमाया अबू बकर हैं क्योंकि बद्र के दिन हमने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए एक झोंपड़ी बनाई। तो हमने कहा कौन मुशरेकीन से आपकी हेफ़ाज़त करेगा। तो सिवाय अबू बकर के हममें से कोई तैयार न हुआ। आप रात भर तलवार सोंत कर बेदार रहे। कोई मुशरिक न झुकता आप पर मगर आप उस पर टूट पड़ते तो वह तमाम लोगों में बहादुर हैं।

आपकी सख़ावत

आप अजूदुस्सहाबा थे। यानी सहाबा केराम में सब से ज़्यादा सख़ी। इब्ने जूज़ी ने कहा "वसायोजन्नबोहल अस्क़ल्लज़ी यूती मालहू।" तीज़की के बारे में इत्तेफ़ाक़ है कि आप ही के बारे में नाज़िल हुई। अबूहुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो से मर्वी है कि रसूलल्लह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया "मुझे किसी के माल ने इतना नफ़अ न पहुँचाया, जितना कि मुझे अबू बकर के माल ने नफ़अ पहुँचाया।" इस पर अबूबकर रो पड़े और अर्ज़ की कि मैं और मेरा माल सब तो आप ही के लिए है। या रसूलल्लाह इब्ने असाकर ने मोतअ़दिद तरीक़ से हज़रत आयशा व उरवा इब्ने जुबैर से रवायत की कि जिस दिन अबू बकर ईमान लाये। आप के पास चालीस हज़ार दिरहम या दीनार थे। उसे आप ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर खर्च कर डाला। अबू दाऊद व तिर्मिज़ी ने उमर बिन ख़त्ताब से रवायत की। हम लोगों को अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हुक्म दिया कि सद्क़ा करें तो मैंने अपने कुल माल का निस्फ़ सरकार की बारगाह में पेश कर दिया। और सोचा कि आज अबू बकर पर सबक़त ले जाऊँगा। रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया। ऐ उमर अहल के लिए क्या छोड़ा। अर्ज़ की निस्फ़ माल। और अबू बकर अपना सारा माल व असबाब

लाये और हुज़ूर की बारगाह में पेश कर दिया। सैयदे आलम ने इरशाद फ़रमाया। तुमने घर के लिए क्या छोड़ा। अर्ज़ की मैं ने उनके लिए अल्लाह और उसके रसूल को बाक़ी रखा। इस पर उमर ने कहा मैं कभी भी इनपर सबक़त नहीं कर सकता।

परवाने को चराग़ तो बुलबुल को फूल बस
सिद्दीक़ के लिए है खुदा का रसूल बस

आपका इल्म

आप आअलमुस्सहाबह थे यानी सहाबा में सब से ज़्यादा इल्म व ज़कावत आप में थी। चुनान्चे बिन उमर से मरवी है कि उनसे पूछा गया। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने में कौन लोग फतवा देते थे तो कहा अबू बकर व उमर और उनके ग़ैर को नहीं जानता।

बोख़ारी व मुस्लिम ने अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लोगों में खुतबा दिया और फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने अपने एक बन्दे को दुनिया वमा इन्दहू के दरमियान अख़्तियार दिया। तो उस बन्दे ने इन्दल्लाह को अख़्तियार किया। तो अबू बकर रोने लगे और अर्ज़ की हमारे बाप व माँए आप पर कुर्बान हो जाएं। तो हम लोगों को आप के रोने पर तअ़ज्जुब हुआ। इस पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़बर दिया। उस बन्दे के बारे में जिसको अख़्तियार दिया तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ही वह अब्द मुख़य्यर थे और अबू बकर हम में सब से ज़्यादा इल्म वाले तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया। सब से ज़्यादा मेरे सोहबत में अमीन और अपने माल में अबू बकर थे और अगर मैं अपने रब के सिवा किसी को दोस्त बनाता तो अबू बकर को दोस्त बनाता लेकिन इस्लाम की अख़ूवत व मोहब्बत के तमाम दरवाज़े मस्जिद की तरफ से बन्द कर दिये जाँय सिवाय अबू बकर के दरवाज़े ले कर।

इब्न कसीर ने कहा "वकानस्सिद्दीक़ो अक़रअस्सहाबता ई

Scanned by CamScanner

अल्लमहुम बिलकुरआने लेअन्नहू सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लमा कद्दमहू एमामन लेसलातिन बिस्सहाबतेही मआ़ कौलहू यौमुल क़ौमे अक़रअहुम लिकिताबिल्लाह।"

यानी सिद्दीक़ अकबर तमाम सहाबा से अक़रा (ज़्यादा इल्म वाले) थे क्योंकि हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने उनको सहाबा का इमाम बनाया। हालाँकि आपकी हदीस है कि जो किताबुल्लाह का सब से ज़्यादा इल्म रखता हो वही इमामत करे और इमाम तिर्मिज़ी ने हज़रत आयशा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हा से रवायत की قال رسول الله صلى الله عليه وسلم لا ينبغى لقوم فيهم ابو بكر ان يؤمهم غيرهٗ जब अबू बक़र मौजूद हों तो ग़ैर की इमामत मुनासिब नहीं। आप इन्साब कुरैश के बहुत बड़े आलिम थे और ताबीर रवुया में भी काफ़ी महारत थी। मोहम्मद बिन सरीं का इरशाद है (كان ابو بكر اعبر هذه الامة بعد النبى صلى الله عليه وسلم- اخرجه ابن سعيد) यानी नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद अबूबकर इस उम्मत के सब से बड़े मोदब्बिर थे तमाम सहाबा में अक़्ल व राय के ऐतबार से अकमल थे। इमाम राज़ी ने अपनी फ़वायद में और इब्न असाकर ने अब्दुल्लाह बिन उमर बिन आस से रिवायत की मैंने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुना आपने फ़रमाया मेरे पास जिबरील आये और कहा आपको अल्लाह तआ़ला हुक्म फ़रमाता है कि अबू बकर से मशवेरा करें (तारीखुल खुलफ़ा)। आप उन सहाबा में से एक हैं जो पूरे कुरआन के हाफिज़ थे।

आप सहाबा में सब से अफ्ज़ल थे

अहले सुन्नत का इसपर इजमा है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बाद सब से अफ्ज़ल अबूबकर फिर उ़मर फिर उ़स्मान फिर अ़ली रज़िअल्लाहो अ़न्हुम। अहमद वग़ैरह ने हज़रत अ़ली से रिवायत किया इस उम्मत में सब से बेहतर नबी के बाद अबू बकर हैं और उ़मर हैं। ज़हबी ने कहा ये अली से मोतवातिर है अल्लाह रवाफ़िज़ पर लअनत फ़रमाये उन्हें किस चीज़ ने जाहिल बना दिया। इब्न असाकर ने अब्दुर्रहमान बिन

लैला से तख़रीज की कि हज़रत उ़मर ने मिम्बर पर चढ़ कर फ़रमाया "अफ्ज़लो हाजेहिल उम्मते बादो नबीएहा अबू बकर।" यानी नबी के बाद इस उम्मत में सबसे अफ़ज़ल अबू बकर हैं और जो इसका ग़ैर कहता है तो वह मुफ़्तरी है उस पर वही गुनाह होगा जो मुफ़्तरी पर है और इब्न अबी लैला से तख़रीज की। उन्होंने कहा हज़रत अ़ली ने फ़रमाया। मुझको न फ़ज़ीलत दे कोई अबू बकर व उ़मर पर वरना उसको कोड़े लगाऊँगा। मुफ़्तरी की तरह। अबू दाऊद से मरवी है कि न तुलूअ़ हुआ सूरज और न गुरूब हुआ किसी पर जो अबू बकर से अफ़ज़ल हो। मगर यह कि नबी हो। यानी नबी ही अफ़ज़ल है, और नबी के बाद उम्मत में सब से अफ़ज़ल अबू बकर हैं।

वह आयात जो आपकी मदह में नाज़िल हुई या आपकी तसदीक़ में

ثَانِىَ اثْنَيْنِ فِى الْغَارِ اِذْ يَقُوْلُ لِصَاحِبِهٖ لَا تَحْزَنْ اِنَّ اللّٰهَ مَعَنَا فَاَنْزَلَ اللّٰهُ سَكِيْنَتَهٗ عَلَيْهِ

इस पर मुसलमानों का इजमाअ़ है कि साहिबे मज़कूर से मुराद अबू बकर हैं और इब्न अबी हातिम ने इब्न मसऊद से रवायत की। जब हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने हज़रत बिलाल को उमैया बिन ख़लफ़ से ख़रीद कर आज़ाद कर दिया तो आयत नाज़िल हुयी। وَالَّيْلِ اِذَا يَغْشٰى से اِنَّ سَعْيَكُمْ لَشَتّٰى सअयकुम से मुराद अबू बक़र और उमैया की सई है। فَاَمَّا مَنْ اَعْطٰى وَاتَّقٰى यह भी आप ही के बारे में नाज़िल हुई। तिबरानी ने उ़रवह से रवायत की। अबूबकर सिद्दीक़ ने सात ऐसे गुलामों को आज़ाद किया जिन्हें अल्लाह की राह में अज़ाब दिया जा रहा था। उन्हीं के बारे में यह आयत नाज़िल हुई। وَسَيُجَنَّبُهَا الْاَتْقَى اِلٰى आख़िर सूरत। बज़ाज़ ने अब्दुल्ला बिन ज़ुबैर से रवायत की وَمَا لِاَحَدٍ عِنْدَهٗ مِنْ نِّعْمَةٍ تُجْزٰىٓ अख़ीर सूरत तक अबू बकर सिद्दीक़ ही के बारे में नाज़िल हुई। हाकिम ने इब्न अब्बास से रवायत की कि अल्लाह तआ़ला का कौल وَشَاوِرْهُمْ فِى الْاَمْرِ यह अबू बकर और उमर के

Scanned by CamScanner

बारे में नाज़िल हुई। इब्न मशूज़ब से है कि وَلِمَنْ خَافَ مَقَامَ رَبِّهٖ جَنَّتٰنِ अबू बकर ही के बारे में नाज़िल हुई। तिबरानी ने अवसत में इब्न उमर इब्न अब्बास से रवायत की وَصَالِحُ الْمُؤْمِنِيْنَ यह अबू बकर और उमर के ही बारे में नाज़िल हुई। मुजाहिद से रवायत है कि जब اِنَّ اللّٰهَ وَمَلٰٓئِكَتَهٗ يُصَلُّوْنَ عَلَى النَّبِىِّ यह आयत नाज़िल हुई तो अबू बकर ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह नहीं उतारा अल्लाह ने आप पर कोई चीज़ ,मगर हमको उसमें शरीक किया। तो यह आयत नाज़िल हुई هُوَ الَّذِىْ يُصَلِّىْ عَلَيْكُمْ وَمَلٰٓئِكَتُهٗ और अली बिन हुसैन से मरवी है कि अबू बकर व उमर व अली के बारे में यह आयत नाज़िल हुई। وَنَزَعْنَا مَا فِىْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ और बिन अब्बास से मरवी है कि अबू बकर सिद्दीक के बारे में यह आयत नाज़िल हुई। وَوَصَّيْنَا الْاِنْسَانَ بِوَالِدَيْهِ से وعد الصدق الذى كانوا يوعدون तक इब्न ऐनी से मरवी है कि अल्लाह ने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के बारे में तमाम मुसलमानों पर एताब फ़रमाया। मगर अबू बकर तनहा वह मआतबा से ख़ारिज हैं और इस आयत की तेलावत फ़रमायी। الا تنصروه فقد لنصره الله اذا خرجة الذين كفروا ثانى اثنين اذهما فى الغار-

आपके बारे में जो फ़ज़ायल हदीस में वारिद हैं

अबू सईद खुदरी रज़िअल्लाहो अन्हु से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया। हर नबी के दो वज़ीर अहले समॉ से और दो वज़ीर अहले ज़मीन से रहे तो वह मेरे दोनो वज़ीर जो अहले समॉ से हैं वह जिबरईल और मीकाईल हैं और दो वज़ीर जो अहले अर्द से हैं तो वह अबू बकर व उमर हैं। इब्न उमर रज़िअल्लाहो तआला अन्हो से मरवी है कि एक रोज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम निकले तो मस्जिद में दाख़िल हुए और अबू बकर व उमर में से एक आपके दाहिने दूसरे बाएँ तरफ थे और आप दोनों के हाथ पकड़े हुए थे और आपने फ़रमाया इसी तरह हम क़यामत के दिन उठेंगे। अम्मार बिन यासिर रज़िअल्लाहो अन्हो से मरवी है कि रसूलल्लाह

सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मेरे पास जिबरईल आये तो मैं ने फ़रमाया उमर इब्न ख़त्ताब की फ़ज़ीलत बयान करो। जिबरईल ने कहा कि अगर मैं आपसे इतनी मुद्दत तक उमर की फ़ज़ीलत बयान करूँ जितनी मुद्दत तक हजरत नूह अलैहिस्सलाम अपनी उम्मत में ठहरे तो उमर के फ़ज़ाएल ख़त्म न होंगे और बेशक उमर व अबू बकर की नेकियों में से एक नेकी है। तिबरानी ने सहल रज़िअल्लाहो अन्हो से तख़रीज की कि जब जब नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हुज्जतुल विदाअ से वापस हुए। मिम्बर पर तशरीफ़ लाये, अल्लाह की हम्द व सना बयान की फिर कहा ऐ लोगो बेशक अबू बकर ने मुझे कभी ग़म न पहुँचाया। लेहाज़ा इन्हें पहचानो। ऐ लोगो ! मैं इन से राज़ी हूँ और उमर उस्मान अली तलहा ज़ुबैर सअद अब्दुर्रहमान बिन औफ से और मुहाजिरीने अव्वलीन से लेहाज़ा इन्हें पहचानो (रज़िअल्लाहो अन्हुम) इब्न मसऊद से रवायत है कि अबू बकर व उमर की मअरफ़त और उनकी मोहब्बत सुन्नत से है।
(तारीखुल खोलफा)

अबू हुरैरह रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत है कि मैंने सुना रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाते हुए कि जिसने अल्लाह की राह में जोड़ा ख़र्च किया वह जन्नत के दरवाज़ों से बुलाया जायेगा तो जो नमाज़ी है नमाज़ के दरवाज़े से जो अहले जेहाद है जेहाद के दरवाज़े से बुलाया जायेगा। जो सदक़ा वाला है सदक़ात के दरवाज़े से जो रोज़ादार है वह उस दरवाज़े से जिसका नाम रेयान है। तो अबू बकर ने कहा क्या कोई ऐसा भी है जो इन तमाम दरवाज़ों से बुलाया जायेगा। फ़रमाया कि हाँ। और मुझे उम्मीद है कि तुम इनमें से हो ऐ अबू बकर। अबू हुरैरह हीं से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया कि तुम ऐ अबूबकर ! मेरी उम्मत में सब से पहले जन्नत में जाओगे। आप ही से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि आज के दिन तुममें से किसने रोज़ा रखा। अबू बकर ने अर्ज़ की मैंने। फ़रमाया कि कौन जनाज़े में शरीक हुआ। अर्ज़ किया मैंने।

Scanned by CamScanner

फ़रमाया मिसकीन को किसने खाना खिलाया। अर्ज़ की मैंने। फ़रमाया मरीज़ की किसने अयादत की। अर्ज़ की मैंने। फिर फ़रमाया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने यह सब बातें जिसमें जमअ़ हुई वह जन्नत में दाख़िल हो गया।

सलफ़ सालेहीन के इरशादात

जाबिर से मरवी है कि हज़रत उ़मर इब्न ख़त्ताब ने फ़रमाया। अबू बकर सैयदना। अबू बकर हमारे सरदार हैं। हज़रत उ़मर ने फ़रमाया अगर अबू बकर के ईमान को अहले हक़ के ईमान के बराबर किया जाए तौल कर तो अबू बकर का ईमान भारी होगा। हज़रत अ़ली का इरशादे गेरामी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम के बाद सबसे बेहतर अबू बकर व उ़मर हैं। मेरी मोहब्बत और अबू बकर व उ़मर का बोग़्ज़ किसी मोमिन के दिल में जमा नहीं होगा। रबीअ़ इब्न अनस से मरवी है कि उन्हों ने कहा हमने अम्बिया के सहाबा में नज़र किया तो हम ने किसी नबी को नहीं पाया जिनके साहब अबू बकर सिद्दीक़ की तरह हों। अबू हुसैन से मरवी है कि आदम अलैहिस्सलाम की औलाद में नबियों और रसूलों के बाद अबू बकर सिद्दीक़ से अफ़ज़ल कोई पैदा न हुआ।

इब्न असाकर ने शोअ़बी से नक़ल किया कि अल्लाह तबारक व तआ़ला ने आपको चार ऐसी ख़स्लतों से खास फ़रमाया जो और लोगों में नहीं। (1) आपका नाम सिद्दीक़ रखा और यह नाम किसी का न रखा। (2) आप साहिबे ग़ार थे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ। (3) और आप रफ़ीक़ थे हिजरत में। (4) और आपको हुक्म दिया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नमाज़ के लिए हालाँकि तमाम मुसलमान मौजूद थे।

ख़ेलाफ़ते सिद्दीक़ की तरफ़ इशारात

तिरमिज़ी ने हुज़ैफ़ा रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत की है اقتدوا بالذين من بعدى ابو بكر و عمر. मेरे बाद अबू बकर व

उमर की इक़्तिदा करो। हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इरशाद لا يبقين باب الا سد الا باب ابى بكر وفى لفظ لهما لا يبقين فى المسجد خوخة الا خوخة ابى بكر. मस्जिद की तरफ़ से सिवाय अबू बकर के दरवाज़े के तमाम दरवाज़े बन्द कर दिये जाएँ। अता ने कहा कि इससे आप की ख़िलाफ़त ही की तरफ़ इशारा है इसलिए कि इससे आप निकल कर मुसलमानों को नमाज़ पढ़ायेंगे। शेख़ैन ने जबीर इब्न मोतअ़म से रवायत किया कि एक औरत नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास हाज़िर हुयी तो हुक्म दिया उसको लौटने का उसने अर्ज़ की। मुझे आप बतायें अगर मैं आयी और आपको न पा सकी तो। फ़रमाया अगर मुझे न पाया तो अबू बकर के पास आना।

अनस रज़िअल्लाहो अन्हो से मरवी है कि मुझे बनू मुस्तलक़ ने भेजा रसूलल्लाह सल्लल्लाहो तआ़ला अलैहे वसल्लम की तरफ़ कि हम यह पूछें कि आप के बाद हम सदक़ात किसको देंगे। तो मैंने हाज़िर हो कर पूछा, तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया अबू बकर को देना।

आयशा रज़िअल्लाहो अन्हा से मरवी है मुझसे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मर्ज़े वेसाल में अपने भाई को और बाप को बुलाओ ताकि एक मकतूब लिख दूँ इस लिए कि मुझे अन्देशा है कि कुछ लोग मुतमन्नी होंगे और कहेंगे कि मैं ज़्यादा हक़दार हूँ हालाँकि अल्लाह व ईमान वाले सिर्फ़ अबू बकर को ही चाहेंगे। उलमा ने फ़रमाया इन इरशादाते बाला से ज़ाहिर होता है कि सिद्दीक़ अकबर रज़िअल्लाहो अन्हो अलाल इतलाक़ अफ़ज़लुस्सहाबह थे। और सबसे ज़्यादा ख़िलाफ़त व इमामत के मुस्तहिक़ थे। हज़रत हफ़सा रज़िअल्लाहो अन्हा ने अर्ज़ की या रसूलल्लाह जब आप बीमार हुए तो आपने अबू बकर को बढ़ाया। इरशाद फ़रमाया मैंने नहीं बढ़ाया बल्कि अल्लाह ने उनको बढ़ाया और इब्न असाकर ने मोहम्मद इब्न जुबैर से नक़ल की मुझे उ़मर बिन अब्दुल अज़ीज़ ने हसन बसरी की ख़िदमत में भेजा ताकि मैं उनसे चन्द चीज़ें दरयाफ़्त करूँ। तो मैं हाज़िर हुआ और मैं ने कहा मुझे इसमें शफ़ा बख़्श जवाब दें जिसमें लोग मुख़्तलिफ़ हैं।

Scanned by CamScanner

क्या रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अबू बकर को ख़लीफ़ा बनाया तो हज़रत हसन ठीक से बैठ गये और फ़रमाया क्या वह शक में हैं। لا ابالك हाँ उस अल्लाह की क़सम जिसके सिवा कोई माबूद नहीं यक़ीनन आप ने उन को ख़लीफ़ा बनाया।

हालात

सब से पहले सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम पर आप ईमान लाये कोई मोअजज़ा तलब न फ़रमाया। परवर दिगारे आलम ने फ़ितरते सलीमा बख़्शी थी और शहादते ग़ैबिया ने आप को बेअसत का मुन्तज़िर बना दिया था। आपके इस्लाम लाने से इस्लाम को बेहद तक़वियत पहुँची। वह दुशवार तरीन वक़्त जबकि इस्लाम का ज़ाहिर करना मसाएब व आलाम को दावत देना था आप ने न सिर्फ यह कि इस्लाम को ज़ाहिर ही फ़रमाया बल्कि तबलीग़ का काम भी शुरू फ़रमाया। कुरैश के सरदारों की एक जमाअत हज़रत उस्मान, हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर, हज़रत सअद इब्न वक़ास फ़ातेह ईरान, अब्दुर्रहमान बिन औफ रज़िअल्लाहो अन्हुम उन्हीं की हेदायत व तबलीग़ से मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए।

इस्लाम लाने के बाद आपके पास चालीस हज़ार दीनार थे। उन्हें आपने रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत और इस्लाम की एशाअत में सर्फ़ कर दिया। ऐसे सात गुलामों को आज़ाद कर दिया जो मुसलमान हो जाने की वजह से कुफ़्फ़ार के जुल्म व सितम का निशाना बने हुए थे। जिसमें हज़रत बिलाल ख़ास तौर से क़ाबिले ज़िक्र हैं। नबूवत के इब्तिदाई दौर में जब रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को अलानिया तबलीग़ करने का हुक्म नाज़िल हुआ तो आप ने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह इब्तिदा मुझे करने दीजिए। मुमकिन है मुशरेकीन ऐसी बात सुनें जो अभी तक उनके कानों ने न सुना तो वह अज़ीयत पहुँचायें। चुनान्चे यही हुआ कि आप ने सब से पहले एक अजीब ख़ुतबा पढ़ा जिसमें हक़ तआला और रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की रेसालत और शिर्क और बुतपरस्ती की मुज़म्मत

बयान की। यह तक़रीर इश्क़ व इरफ़ान में इस तरह डूबी हुई थी कि इसका कुछ अन्दाज़ा इस ख़ुतबा के अल्फ़ाज़ से होता है। यह सब से पहला ख़ुतबा था जो इस्लाम में पढ़ा गया। इसके बाद मुशरिकीन ने जो तकलीफ़ें हज़रत सिद्दीक़ अकबर को दीं और आपने जिस ज़ौक के साथ इन ईज़ाओं को बर्दाश्त किया वह बजाए खुद एक दफ़्तरे इश्क़ व इरफ़ान है। इस्लाम क़ुबूल करने के बाद आपने अपने घर के सामने एक मस्जिद बनायी जिसमें रोज़ाना सुबह को उठ कर तिलावते कलामे पाक करते थे। कुरआन मजीद वह भी सिद्दीक़ अकबर की ज़बान से। सुनने वालों का हुजूम जमा होता था। नामुमकिन था कि किसी न किसी पर असर न हो। रोज़ाना यही मशग़ला देखकर कुफ़्फ़ार ने मज़ाहमत शुरू कर दी। आपने नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इजाज़त से हबशा की तरफ हिजरत की नियत से रवाना हुए। रास्ते में इब्नुद्दग़ना काफ़िर कुरैश के तजिर से मुलाक़ात हुई। वह असरार कर के वापस ले आया। और कुरैश के सरदारों से कहा कि क्या तुम ऐसे मोअज़्ज़िज़ शख़्स को निकाले देते हो जो बे देखी हुयी चीज़ यानी सवाब व आख़िरत को कमाता है। सिला रहम करता है और लोगों की ग़मख़्वारी करता है और मेहमानों की ज़ियाफ़त करता है। अच्छा अब मैं इनको अमान दे कर लाया हूँ। कोई इसे मज़ाहमत न करना। तमाम कुफ़्फ़ार ने इब्नुद्दग़ना की अमान को मन्जूर कर लिया लेकिन सिद्दीक़ अकबर ने कहा कि मैं एक काफ़िर की अमान में नहीं रहना चाहता। मेरे लिए अल्लाह और उसके रसूल की अमान काफ़ी है और रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की ख़िदमत में गये और पूरा क़िस्सा बयान किया। आपने इरशाद फ़रमाया अब तुम कहीं न जाओ। मुझे भी हिजरत की इजाज़त मिलने वाली है हमारे साथ चलना। हज़रत सिद्दीक़ ने फिर मक्का में क़याम कर दिया और तिलावते कुरआन मजीद और दावत, रुश्द व हेदायत के दिलरूबा काम में मशग़ूल हो गये।

Scanned by CamScanner

शोअ़ब अबी तालिब

नबूवत के सातवें साल कुफ़्फ़ारे कुरैश ने यह तजवीज़ मुत्तफ़ेक़ा तौर पर तय की सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को और आप के साथ आप के सारे ख़ानदान बनी हाशिम को महसूर कर दें और खाना पानी बन्द कर दें। चुनान्चे एक मोआहेदा मुरत्तब हुआ कि कोई शख़्स न तो ख़ानदाने बनी हाशिम से क़राबत करेगा और न उनके हाथ ख़रीद व फ़रोख़्त करेगा न उनके पास खाने पीने का सामान पहुँचने देगा। जब तक वह रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को क़त्ल करने के लिए हमारे हवाले न कर दें। इस मोआहेदा पर सब ने तसदीकी अलामात बनाई और उसको काबा में आवेज़ां किया ताकि कोई शख़्स खेलाफ़े वरज़ी की जुर्रात न करे। मजबूर हो कर आप मय अपने चचा अबू तालिब और सारे ख़ानदान के मक्का से बाहर एक पहाड़ जो शोअ़ब अबी तालिब के नाम से मौसूम है तशरीफ़ ले गये। आप तीन साल तक इस दर्रा में महसूर रहे। इस तीन साल में जो सख़्तियाँ आप पर गुज़रीं उसकी मिसाल किसी ज़ालिम के ज़ुल्म में न मिलेगी। जंगली दरख़्तों की पत्तियाँ खाकर ज़िन्दगी के दिन पूरे किये गये। बल्कि हक़ यह है कि ऐसी हालत में ज़िन्दा रहना खुदा की कुदरत का एक नमूना था। सैयदना सिद्दीक़ अकबर रज़िअल्लाहो तआला अन्हो अज़ खुद इस मुसीबत में शरीक हो गये। जब परवरदिगारे आलम ने सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को इस मुसीबत से नेजात दी तो उन्होंने भी रेहायी पायी। जब सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को मेराज अता की गयी तो सबसे पहले आप ही ने तस्दीक़ की। कुफ़्फ़ारे मक्का ने तअ़न किया कि तुम मोहम्मद (सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम) की इस बात को भी हक़ मानोगे कि वह बैतुल मोक़द्दस गये और वहाँ से सातों आसमान की सैर की और उनको मलकूती अजायब वह ग़रायब दिखाये गये और फिर लौट आये और इतना बड़ा यह सफ़र अक़ल्ले क़लील हिस्सा में रात के तय हो गया। सैयदना सिद्दीक़ अकबर ने इरशाद

फ़रमाया। हम तो उससे ज़्यादा बईद अज़ अक़्ल बात मान चुके हैं। वह फ़रमाते हैं कि जिबरईल अलैहिस्सलाम आसमानों से अभी आये और अभी गये। मक़सद यह है जब जनाब जिबरईल अलैहिस्सलाम की आमद व रफ़्त हम चश्मे ज़दन में मान चुके तो सैयदे आलम नूरे मोजस्सम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की नूरानियत व लताफ़त तो जिबरईल अलैहिस्सलाम से बढ़कर है लेहाज़ा आपकी आमद व रफ़्त में हमको क्या शक हो सकता है। इसी मेराज की तस्दीक़ के सिलसिले में आपको सिद्दीक़ का लक़ब अता हुआ।

मोकम्मल तेरह साल तक मक्का के कुफ़्फ़ार व मुशरेकीन की तरफ से हर किस्म के ज़ुल्म व सितम उठा कर जब रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और आपके असहाब इम्तिहाने इश्क़ में कामयाब हो चुके और इल्मे इलाही में इन ज़लिमों का पैमाना भी लबरेज़ हो चुका तो आपकी तरफ हुक्मे खुदावन्दी हुआ कि अब आप हिजरत करके मदीना मुनव्वरा तशरीफ़ ले जायें। इस सफ़रे हिजरत में अल्लाह तआला और उसके रसूल ने तमाम सहाबा में सिर्फ सिद्दीक़ अकबर को मुन्तख़ब किया और इस सफ़र में क़दम क़दम पर जैसी कुछ ख़िदमतें जानी व मानी हज़रत सिद्दीक़ ने किया। इश्क़ व मोहब्बत की दास्तानों में कोई वाक़ेआ इससे माफ़ौक़ नहीं मिल सकता। इस मुबारक सफ़र में अल्लाह के रसूल ने सिद्दीक़ अकबर का इन्तेख़ाब फ़रमा कर यह बात सब पर ज़ाहिर फ़रमा दी कि उनके एख़लाक व मोहब्बत पर आपको मोकम्मल एतमाद था और यह कि वह सब से ज़्यादा अक़लमन्द मोदब्बिर तजुरबा कार और सब से ज़्यादा शुजाअ़ व बहादुर थे क्योंकि इस ख़तरनाक सफ़र के रफ़ीक़ में इन सब अवसाफ़ का होना ज़रूरी था।

ज़रा इस सफ़र हिजरत पर इजमाली नज़र डालिए। यह कुफ़्फ़ारे मक्का का सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़त्ल के लिए जमा होना और मकान का मोहासरा करना। आप का इस मोहासरा से सही वह सालिम निकल जाना, सिद्दीक़ अकबर के घर तशरीफ़ ले जाना और उन्हें इस सफ़र हिजरत

Scanned by CamScanner

और रेफ़ाक़त की खुशख़बरी सुनाना और जनाब सिद्दीक़ का फ़ौरन तैयार हो जाना। उनकी साहबज़ादियों का उजलत के साथ नाश्ता तैयार करना। सिद्दीक़ अकबर का अपनी उन दोनों ऊँटनियों को जो चार माह से इस सफर हिजरत के लिये परवरिश पा रही थीं एक मोअतमिद राज़दार के सुपुर्द करना कि तीन रोज़ के बाद फ़लाँ मक़ाम पर ले आना। सैयदे आलम के क़दमे नाज़ का पैदल चलने के सबब ज़ख़्मी हो जाना और सिद्दीक़ अकबर का अपने शाने पर सवार कर के ग़ारे सोर तक ले जाना और वालेहाना अन्दाज़ में सिद्दीक़ का अर्ज़ करना कि आप ग़ार के बाहर तशरीफ़ रखें। मैं अन्दर जाकर सफाई कर दूँ। फिर अपने चादर के टुकड़े टुकड़े कर के तमाम सूराख़ों को बन्द करना। और एक सूराख़ जो कि बाक़ी रह गया था उसका बाक़ी रह जाना फिर उसको अपना पाँव लगा कर बन्द करना और उस पाँव मुबारक को साँप का काटना फिर लोआबे दहन मुबारक से शिफ़ा पाना। वह हज़रत सिद्दीक़ अकबर के नौजवान साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह का तीन रोज़ बराबर शब को उस ग़ार में आप के साथ सोना और अन्धेरे मुँह ग़ार से निकल कर चले जाना और दिन भर की ख़बर शाम को पहुँचाना। वह हज़रत सिद्दीक़ के गुलाम आमिर बिन फ़हीरह का तीन दिन बराबर बवक़्ते शब उस ग़ार में खाना पहुँचाना। वह कुफ़्फ़ार का एलान कि जो मोहम्मद (सल्ललाहो अलैहे वसल्लम) को गिरफ़्तार कर के लाये उसको सौ ऊँट दिये जायेंगे और इस एलान के बाद कुफ़्फ़ारे मक्का का बड़े माहिर शनासों की क़यादत में चारों तरफ तलाश में फिरना। फिर कुछ लोगों का तलाश करते करते उस ग़ार के मुँह पर पहुँच जाना और सिद्दीक़ अकबर का उनको देख कर रन्जीदा होना और रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का उनको यह कह कर तस्कीन देना कि "ला तहज़न इन्नल्लाहा मअना"। रन्ज न करो अल्लाह हमारे साथ है वह तीन दिन के बाद ग़ार से निकल कर मदीना की तरफ रवाना होना। सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ऊँट पर रदीफ बनना और और चारों तरफ नज़र दौड़ाते रहना। दुआए नबवी से सराक़ा के घोड़े का ज़मीन में

धंस जाना और रहमते आलम की पनाह माँग कर रेहाई पाना। वह जगह जहाँ सिद्दीक़ अकबर का एक चरवाहे से दूध माँग कर लाना और ठंडा पानी उसमें मिला कर हज़रत के सामने पेश करना और असरार कर के पिलाना और बचा हुआ खुद पीना और यह कहना "शरबा हत्ता रज़ैतो" यानी हुज़ूर ने इतना पिया कि मैं खुश हो गया। यह वह वाक़ेआत हैं कि जिसका दिल दर्दे मोहब्बत से कुछ आशना हो वही इनकी क़द्र जान सकता है। चुनान्चे सफ़रे हिजरत में हज़रते सिद्दीक़ की रेफ़ाक़त का तज़केरा कुरआन मजीद में बड़ी शान के साथ है और नबीए अकरम भी उनकी इस ख़िदमत का तज़केरा अकसर फ़रमाते थे। सहीह बुख़ारी शरीफ़ में है कि–

"हमलनी एला दारूल फ़जरा" और वफ़ात से पाँच दिन पहले आपने खुतबा दिया इसमें फरमाया कि जिसने कोई एहसान हमारे साथ किया हमने उसका बदला कर दिया सिवा अबू बकर के कि उनकी ख़िदमत का बदला क़यामत के दिन खुदा देगा।

ग़ज़वात और सिद्दीक़ अकबर

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को उन्नीस ग़ज़वात पेश आये। जिनमें सबसे पहले ग़ज़वये बद्र। और सबसे आख़िर ग़ज़वए तबूक था। इन तमाम ग़ज़वओं में सिद्दीक़ अकबर आपके हमराह रहे और नुमायाँ ख़िदमतें अन्जाम दीं। चन्द बतौर तमसील दर्ज ज़ैल हैं।

(1) ग़ज़वए बद्र जो रमज़ान 2 हिजरी में हुआ। यह इस्लाम की पहली अज़ीम फ़तह है। इसमें सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के लिए चादरें तान कर एक साएबान सा बना दिया गया था। हज़रत सिद्दीक़ अकबर इसमें आपके साथ रहे और आपकी हिफ़ाज़त का खूब खूब हक़ अदा किया। रात में तलवार हाथ में ले कर साएबान के चारों तरफ निगेहबानी करते रहे। जब सुबह को जंग शुरू होने वाली थी। इस रात के अख़ीर वक़्त में रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने नेहायत बेक़रारी के साथ दुआ माँगना शुरू की। ऐ ख़लिके आलम अपना वादा पूरा

Scanned by CamScanner

कर। अगर यह मुठ्ठी भर तेरे नाम लेवा इस जगह शिकश्त खा जायेंगे तो फिर रूये ज़मीन पर तेरी इबादत कभी न होगी। जनाब सिद्दीक़ से जब यह बेक़रारी न देखी गयी तो सायबान ही के अन्दर आ कर सरवरे कायनात के रूये मुबारक को पकड़कर कहने लगे।"कफ़्तोका मिन्ना शिद्दतोका या रसूल" यानी ऐ अल्लाह के रसूल बस फ़रमायें बस इतनी ही दोआ काफ़ी है और जब सिद्दीक़ के कहने से सरे न्याज़ उठाया तो तायरे सिदरा हामिल वहिये इलाही हज़रत जिबरईल अलैहिस्सलाम वहिये इलाही ले कर खड़े थे कि "सयहज़मुल जमओ वयुवल्लूनद दुबुर" यानी जल्द ही इन काफ़िरों को शिकस्त दी जायेगी। और यह पीठ फेर कर भाग जायेंगे। इस जंग में लश्कर का मैमना सिद्दीक़ अकबर ही की मातहती में था। जनाब सिद्दीक़ के लख़्ते जिगर हज़रत अब्दुल रहमान जिन्होंने अब तक इस्लाम कुबूल न किया था इस लड़ाई में मुश्रेकीन के साथ आये थे। जब मैदान में बढ़े तो सैयदना सिद्दीक़ अकबर तलवार खींच कर अपने साहब ज़ादे को अपने हाथ से क़त्ल करने के लिए गये मगर वह ज़द से बच निकल गये।

(2) ग़ज़वए ओहद 3 हिजरी में वाक़ेअ हुआ। जब मुसलमानों की ही ग़लत फहमी से इस ग़ज़वा में उन्हें शिकस्त का सामना करना पड़ा और यह क़यामत खेज़ ख़बर कुफ़्फ़ार ने मशहूर कर दी कि अल्लाह के रसूल शहीद कर दिये गये तो जो मुसलमान जहाँ थे घिर कर रह गये। उस वक़्त हज़रत तलहा और हज़रत सअद के सिवा आपके पास कोई न था। फिर थोड़ी देर के बाद दीगर सहाबा अल्लाह के रसूल के पास पहुँच गये। इनमें सबसे पहले पहुँचने वाले सैयदना सिद्दीक़ अकबर ही थे।

(3) ग़ज़वए एहज़ाब जो ग़ज़वए खन्दक़ के नाम से मशहूर है इस में ख़न्दक़ के एक तरफ की मोहाफिज़त सैयदना सिद्दीक़ अकबर ही के सुपुर्द थी और इस तरफ से कोई काफ़िर अबूर न पाता।

(4) ग़ज़वए ख़ैबर में एक रोज़ सिद्दीक़ अकबर सरदारे लश्कर बना कर बाज़ क़िलों की फ़तह के लिए भेजे गये। इस रोज़ की लड़ाई ने यहूदियों का गुरूर एक हद तक तोड़ दिया।

(5) सरया बनी फ़ज़ारह में अल्लाह के रसूल ने आपको अमीर-ए-लश्कर बना कर भेजा जिसमें शानदार फतह हुई और बहुत से क़ैदी हाथ आये।

(6) फ़तह मक्का में अपने वालिदे मोहतरम को मुसलमान कर के हुज़ूर की ख़िदमत में लाये तो आपने फ़रमाया तुमने उन्हें बुढ़ापे में क्यों तकलीफ दी। मैं खुद आ जाता।

फ़ायदा : सहाबए केराम रिज़वानुल्लाहो अलैहिम में सिर्फ हज़रत सिद्दीक़ ही की ज़ात है जिनके चार पुश्त सहाबी हैं यानी माँ बाप भी और बेटे पोते भी।

(7) 9 हिजरी में रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपको अमीरे हज बना कर भेजा और आप ही ने खुतबए हज भी पढ़ा।

(8) जंग-ए-तबूक में तमाम लश्कर का जायज़ा लेना और इमामते लश्कर दोनों ही का काम आप ही के मोतअ़ल्लिक़ थे। वह ग़ज़वा था जिसमें सिद्दीक़ अकबर ने अपना कुल मालजेहाद के सामान दुरूस्त करने के लिये दिया था।

कुछ अहम उमूर

☆ जब सैयदुल मुर्सिलीन सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम मर्ज़े वफ़ात में थे तो सिद्दीक़ अकबर पर ख़ास एनायात व अल्ताफ़ थे। वफ़ात के पाँच दिन पहले खुतबा पढ़ा और उसमें जनाब सिद्दीक़ के फ़ज़ायल बयान फरमाये और हुक्म सादिर फरमाया कि मस्जिद में जिन जिनके दरवाज़े हैं बन्द कर दिये जाएं सिवाए अबू बकर के। फिर रहमते आलम ने उनको अपनी जगह इमाम मोकर्रर फ़रमाया जिसमें आपकी खेलाफ़त क़ी तरफ खुला हुआ इशारा था।

☆ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रूबरू सहाबा आपका अदब व एहतराम करते थे और अगर किसी से ख़िलाफे अदब कोई बात सादिर हो जाती तो अल्लाह के रसूल को नगवार गुज़रती और मना फ़रमाते। एक बार ऐसा हुआ कि

Scanned by CamScanner

एक बदवी सहाबी सिद्दीक़ अकबर के आगे आगे जा रहे थे तो रहमते आलम ने फ़रमाया। تمشى بين يدى من هو خير منك तुम उसके आगे चल रहे हो जो तुमसे बेहतर है।

खेलाफते सिद्दीक़ी का बयान

हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वेसाल पुर मलाल के बाद सक़ीफा बनी साएदा में अन्सार जमा हुए ताकि किसी को ख़लीफ़ा मोक़र्रर करें। उनका मन्शा यह था कि दो ख़लीफ़ा बनाये जाएं। एक अन्सार में से हो और दूसरा मोहाजिरीन में से। लेकिन ज़ाहिर है कि दो ख़लीफा बनाना ज़ाहिर था कि इस क़दर इफ़्तिराक़ व इन्तिशार का बाइस़ था। इसी वजह से सैयदना सिद्दीक़ अकबर व फ़ारूक़ आज़म रज़िअल्लाहो अन्हा ने इन्तिज़ामे ख़िलाफ़त को सरवरे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तदफ़ीन पर मोक़द्दम जाना और यही होना भी चाहिए था। चुनान्चे यह दोनों हज़रात और चन्द मोहाजिरीन वहाँ तशरीफ ले गये और अन्सार को समझाया। यहाँ तक कि सैयदना सिद्दीक़ अकबर पर सबका इत्तेफ़ाक़ हो गया और तमाम मौजूदा हज़रात ने सिद्दीक़ अकबर के दस्ते हक़ परस्त पर बैअ़त कर ली। और बैअ़त की इब्तिदा एक अन्सार से हुई। *(तारीखुल ख़ोलफ़ा)*

और दूसरे दिन बैअ़त आम हुई जिनमें तमाम मोहाजिरीन व अन्सान ने आपको ख़लीफ़ए रसूलल्लाह तस्लीम कर लिया और एक ज़बरदस्त फ़ित्ना व बला जो दो ख़लीफ़ा के बनने से पड़ने वाला था मुसलमानों को उससे रिहाई हो गयी। (फ़अलहम्दो लिल्लाहे अला ज़ालिक)

☆ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का वेसाल सहाबए कराम के लिए एक क़यामते कुबरा थी जिसने उनके होश व हवास बेकार कर दिये थे, कोई कोई आप के वफ़ात ही का इन्कार कर रहा था। किसी के मुँह पर ख़ामोशी की मुहर लग गयी थी, कोई बेताब था। सैयदना सिद्दीक़ अकबर सबसे पहले हुजरए अक़दस में तशरीफ ले गये और सरकार दोआलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के रूख़े अनवर से चादर मुबारक को

हटा कर जबीने अतहर को चूमा और सोज दिल व जिगर ने ज़बाने मुबारक पर यह कलमात जारी किये وابنياه واخليلاه واصفياه यह कह कर बाहर तशरीफ ले आये और एक खुतबा दिया जिसका एक एक लफ्ज़ मुसलमानों के लिए आबे हयात से कम न था। इस खुतबा में आयाते कुरआनिया के हवाले थे। "वमा मोहम्मदुन इल्ला रसूलिन कद खलत मिन कबलेहिर रसूल" से इस्तेदलाल करते हुए आपने फ़रमाया कि सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वफ़ात की ख़बर कुरआन में मौजूद है। आपने यह भी फ़रमाया "मन काना याबोदो मोहम्मदन फइन्ना मोहम्मदन कद माता वमन काना याअबोदल्लाहा फइन्नल्लाहा हत्ता ला यमूतो"। यानी जो लोग मोहम्मद सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की इबादत करते हैं उन्हें मालूम होना चाहिये कि उनका वेसाल हो गया लेकिन जो अल्लाह की इबादत करते हैं वह मुतमइन रहें उनका अल्लाह ज़िन्दा है कभी न मरेगा। इस खुतबा ने लोगों को बाहोश कर दिया गोया सोते से जगा दिया।

☆ आपके पास जब बहरैन से माले ग़नीमत आया तो आपने एलान कराया कि जिसका कर्ज़ सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़िम्मे हो या कोई वादा आपने किया हो वह हमारे पास आये। चुनान्चे हज़रत जाबिर आये और एक वादा उन्होंने बयान किया जिसको सिद्दीक़ अकबर ने पूरा किया। और डेढ़ हज़ार दिरहम दिये।

☆ इस बात का बड़ा एहतमाम किया कि नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम जिसके साथ जो बर्ताव करते थे उसको क़ायम रखा जाय।

☆ जब सैयदतुन्निसा फ़ातिमा ज़ोहरा रज़िअल्लाहो अन्हा ने आप से मीरास तलब की तो आप ने उनको वह हदीस सुनाई जिसका मफ़हूम यह था कि नबी के माल में मीरास जारी नहीं हो सकती। लेहाज़ा मीरास तो नहीं अलबत्ता मेरे पास जिस क़दर माल है वह मैं आप के हुजूर हाज़िर किये देता हूँ। वह आप ही का है।

Scanned by CamScanner

☆ सैयदना अ़ली करमुल्लाह वजहहू के लिये बाज़ रवायत से साबित होता है कि उन्होंने बिला तवक्कुफ़ इब्तेदा ही में बैअ़त कर ली थी हाफ़िज इब्न अब्दुल्लाह ने इस्तीआ़ब में हज़रत अ़ली से रवायत की। عن قيس ابن عباد قال قال لى على بن ابى طالب ان رسول الله صلى الله عليه وسلم مرض ليالى واياما ينادى بالصلوة فيقول مروا ابابكر يصلى بالناس فلما قبض رسول الله صلى الله عليه وسلم نظرت فاذا الصلوة علم الاسلام وقوام الدين فرضينا لدينانا من رضى رسول الله صلى الله عليه وسلم لدينا فبايعنا ابابكر- क़ैस बिन एबादा ने कहा मुझसे हज़रत अली ने फ़रमाया रसूलल्लाहो सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कई शब व रोज़ बीमार रहे। इन दिनों अज़ान होती तो आप फ़रमा देते अबू बकर से कह दो नमाज़ पढ़ा दें फिर जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का वेसाल हो गया तो मैं ने ग़ौर किया तो मालूम हुआ कि नमाज़ इस्लाम का झण्डा है और दीन का रूक्न है। लेहाज़ा हमने उन्हें अपने दुनिया की पेशवाई के लिये उस शख़्स को पसन्द कर लिया जिसको रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने हमारे दीन की पेशवाई के लिए पसन्द फ़रमाया। पर हमने अबू बकर से बैअ़त कर ली।

मुर्तदीन से जेहाद

सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के वेसाल की ख़बर सुनकर अरब के बाज़ क़बाएल मुर्तद हो गये थें और तरह तरह की बग़ावतें व साज़िशें रोनुमा होने लगीं। बाज़ नबूवत के झूठे दावेदार उठ खड़े हुए जिसमें मुसीलमा कज़्ज़ाब क़ाबिले ज़िक्र है। हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने इन सब मुर्तिदीन और नबूवत के झूठे मुद्दईयों से जेहाद के लिये क़तई हुक्म सादिर फ़रमाया।

तजहीज़ जैशे ओ़सामा

रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपनी आख़िरी वसीयत में हुक्म दिया था कि ओसामा का लश्कर मुल्क शाम की तरफ रवाना कर दिया जाय। इस लिये सैयदना सिद्दीक

अकबर ने उसकी रवानगी का हुक्म दे दिया। अगरचे दीगर सहाबा इस मामला में आपकी राय के मुखालिफ थे और कहते थे कि ऐसे पुर आशोब वक़्त में जबकि अन्दरूनी मुल्क मोतअद्दिद क़बाएल बग़ावत के शोले बुलन्द कर रहे हैं लड़ाई में पेश कदमी करना बिलफेल मुनासिब नहीं। जिस वक्त हज़रत उमर ने राय दी कि ख़लीफाए रसूलल्लाह यह वक़्त सख़्ती का नहीं नरमी से काम ली जिए तो आपको जलाल आया और फ़रमाया اجبار فى الجاهليت و خوارٌ فى الاسلام- यानी ऐ उमर जाहेलीयत में तो तुम बड़े ख़ूँख़ार थे इस्लाम में आकर ऐसे नरम हो गये, जब दीन कामिल हो चुका और वही बन्द हो चुकी तो क्या यह हो सकता है कि मेरी ज़िन्दगी में दीन नाक़िस हो जाय। इस पर हज़रत उमर ने समझ लिया कि अल्लाह ने उनका सीना खोल दिया है चुनान्चे एक तवील गुफ़्तगू के बाद आपने फ़रमाया मेरी नाका (ऊँटनी) लाओ मैं खुद जेहाद के लिए जाऊँगा। और ओसामा का लश्कर अभी रवाना हो। खुदा की क़सम अगर चील कौवे मेरे गोश्त नोच डालें तब भी मैं उस लश्कर को न रोकूँगा जिसकी रवानगी का हुक्म रसूले खुदा ने दिया है। चुनान्चे लश्कर फौरन रवाना हो गया और आप अपनी ऊँटनी पर बैठ गये। सबसे पहले हज़रत अ़ली करमल्लाहो वजहहू ले आप से बढ़कर आपके ऊँटनी की मेहार पकड़ ली और कहा। ऐ ख़लीफ़ए रसूलल्लाह हमारा मक़सद यह था कि हुक्मे अज़ली करें। जो कुछ अर्ज़ किया गया बतौर मशवरे के था वरना जो भी आप हुक्म देंगे एताअ़त की जायेगी। *(माख़ूज़ अज़ तारीखुल ख़ोलफा)*

हर तरफ फ़ौजें रवाना की गयीं। जो फौज जिस तरफ जाती फतह व नुसरत कामयाबी व कामरानी से वापस होती। हर तरफ़ से कामयाबी की ख़बरें आने लगीं और इस तरह इस्लाम में जो मोहलिक वबा फैलने वाली थी ख़त्म हो गयी। साल के अन्दर ही मुद्दईयाने नबूवत भी जहन्नम पहुँचा दिये गये। मुर्तदीन का ख़ातमा कर दिया गया। हज़रत ओसामा का लश्कर भी दुश्मन की बड़ी बहादुर फौजों को तह व बाला कर के बड़ी कामयाबी के साथ वापस आ गया। नतीजा को देख कर सब की आँखें खुल

गई। चुनान्चे अबू हुरेरह रज़िअल्लाहो अन्हो ने सिद्दीक़ अकबर के इस कारनामें को इन अल्फ़ाज़ से बयान किया। "क़ामा फ़िर्रदते मक़ामल अम्बिया" यानी सिद्दीक़ अकबर मुर्तिदों के मामले में इस मक़ाम पर खड़े हुए जो नबियों के खड़े होने का था। हज़रत इब्न मसऊद रज़िअल्लाहो अन्हो ने फ़रमाया "हुना फ़िल इब्तेदा व हमदनाहू फ़िल इन्तिहा"।

फ़तूहे शाम व ईराक़

हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने खेलाफत की क़लील मुद्दत में जहाँ और भी बहुत से काम किये वहाँ यह भी किया कि क़ैसर व किसरा की फ़तह की बुनियाद डाली जिसकी तकमील सैयदना फ़ारूक़ आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो के दस्ते हक परस्त पर हुयी। फितनए इर्तेदाद को कुचलने के बाद 12 हिजरी में आप ने इस्लामी फ़ौजों को बजानिबे ईराक़ रवाना किया। शुरू में हज़रते मुसना बिन हारेसा को इस काम पर मोकर्रर किया। फिर हज़रत ख़लिद बिन वलीद को उनके इमदाद के लिए भेजा। ईराक़ में कई लड़ाइयाँ हुईं। शहर हैरह मुसलमानों के कब्ज़े में आ गया।

इस्लामी फौजें ईराक़ में मसरूफ़ जंग थीं कि हज़रत सिद्दीक़ के दिल में जेहादे शाम व रोम का ख़याल पैदा हुआ और तमाम सहाबा को जमा फ़रमा कर आपने एक नेहायत ही मोअस्सिर बलीग़ खुतबा पढ़ा। जो जेहाद की तरग़ीब पर मुश्तमिल था और हुक्म दिया कि रोमियों से जेहाद की तैयारी की जाय। फिर जो फ़ौज मौजूद थी उसको चार हिस्सों में तक़सीम फ़रमाया। एक हिस्सा पर हज़रत उमर इब्न आस को सरदार बना कर फिलिस्तीन की जानिब रवाना किया। एक हिस्सा पर अमीनुद्दमता हज़रत अबू उबैदा को सरदार बनाया। और हम्स की तरफ रवाना किया और एक हिस्सा पर शरजील बिन हसीना को सरदार मुन्तख़ब फ़रमा कर उर्दुन की तरफ भेजा और एक हिस्सा पर यज़ीद इब्न अबू सुफ़ियान को सरदार बना कर दमिश्क़ की तरफ रवाना फ़रमाया। और इरशाद फ़रमाया कि जब तुम सब एक जगह जमा हो जाओ तो पूरे लश्कर की सरदारी अबू उबैदा को हासिल

होगी इसके बाद हुक्म भेजा हज़रत ख़ालिद के लिए कि आप ईराक़ की मुहिम मुसना इब्न हारसा के सुपुर्द कर के खुद जल्द से जल्द मुल्क शाम पहुँचें और उनको कुल अफ़वाजे शामिया का सिपेसालारे आज़म मोकर्रर फ़रमा दिया। हरकुल शाहे रोम ने भी अपनी सारी ताक़त मुसलमानों के मुक़ाबले में जमा कर दी और जमादिल अव्वल 13 हिजरी में वह क़यामत ख़ेज़ जंग हुयी जो जंगे यरमूक के नाम से मौसूम है। इस लड़ाई में मुसलमानों को ऐसी अज़ीमुश्शान फ़तह हासिल हुयी कि रोमियों के हवास बाख़्ता हो गये। इस फ़तह की खुशख़बरी सैयदना सिद्दीक़ अकबर को उस वक़्त पहुँची जब आप ज़िन्दगी के आख़िरी वक़्त में थे।

तदवीने कुरआन

हज़रत सिद्दीक़ अकबर के अहदे हुकूमत का सब से बड़ा और अहम कारनामा यह है कि आप ही के ज़माने में क़ुरआन मजीद के मुन्तशिर मज़ामीन को किताब की सूरत दी गयी। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़मानए हयात में तो सहाबए किराम ने कुरआन मजीद को यकजा तौर पर जमा करने की इस लिए ज़रूरत नहीं समझी क्योंकि उनके पास खुद हादिए कुरआन मौजूद था। चुनान्चे कुरआन करीम की जिस आयत और जिस हुक्म के बारे में वह इस्तेफ्साद करते थे उनको शाफी व काफ़ी जवाब मिल जाता था लेकिन रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात के बाद फौरन ही यह महसूस किया जाने लगा कि कुरआन करीम के मुन्तशिर ज़ख़ीरा को जमा कर लिया जाय। चुनान्चे जंगे यमामा में जब ऐसे बहुत से सहाबा शहीद हो गये जिन्हें कुरआन मजीद की आयतें हिफ़्ज़ थीं। तो हज़रत उमर फ़ारूक़ आज़म ने हज़रत सिद्दीक़ अकबर से अर्ज़ किया कि कश्त व खून का सिलसिला अगर ऐसे ही जारी रहा तो अन्देशा है कि कहीं कुरआन मजीद का कोई हिस्सा ज़ाया न हो जाय। इस लिए मुनासिब यह है कि आप कुरआन मजीद की तमाम आयतें यकजा कराकर तहरीर करा लें। पहले तो इस तजवीज़ पर हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने कुछ ताम्मुल किया और

Scanned by CamScanner

फ़रमाया कि जो काम न अल्लाह के रसूल ने किया और न हम को हुक्म दिया। उसे मैं कैसे करूँ लेकिन जब बाद में हज़रत अबू बकर ने इस अहम ज़रूरत को महसूस फ़रमाया तो इसके लिये आमादा हो गये और रसूलल्लाह के कातिबे वही हज़रत ज़ैद इब्न साबित रज़िअल्लाहो अन्हो को बुला कर सारा कुरआन यकजा कर के एक जगह लिखने का हुक्म दिया। हज़रत ज़ैद इब्न साबित ने पत्थर के टुकड़ों ऊँट की हड्डियों हिरन की झिल्लियों और खजूर के पत्तों पर लिखी हुई तमाम आयाते कुरआनी को जमा किया। इसके अलावा हुफ़्फ़ाज़ के सीने में जो आयतें महफ़ूज़ थीं उनको भी सुपुर्दे क़लम किया और इसके बाद रसूलल्लाह के कायम करदा तरतीब के मुताबिक कुरआन की किताबत शुरू कर दी। जहाँ तक कुरआन मजीद के तरतीब का तअल्लुक़ है अल्लाह के रसूल अपनी ज़िन्दगी ही में उसे पायए तकमील तक पहुँचा चुके थे। चुनान्चे जब कोई वही नाज़िल होती थी तो आप फ़रमा दिया करते थे कि इस आयत को फ़लाँ सूरत की फ़लाँ जगह लिख लो। आप ने सूरतों के नाम तज़वीज़ कर दिये थे। इस लिये हज़रत ज़ैद इब्न साबित को कुरआन की तरतीब क़ायम करने में कोई दुश्वारी पेश नहीं आयी और उन्होंने बड़ी एहतियात व तजस्सुस से इस कारनामें को अन्जाम दिया। जब पूरा कुरआन मजीद ज़ब्त तहरीर में आ गया तो यह नुस्ख़ा हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ को दे दिया गया। उनके वफ़ात के बाद यह गंजे गेरा नुमाया हज़रत फ़ारूक़ आज़म के सुपुर्द हुआ। और उनके बाद उनकी बेटी उम्मुल मोमिनीन हज़रत हफ़्सा की तहवील में रहा।

अव्वलियात

1. सबसे पहले इस्लाम लाने वाले।
2. सबसे पहले कुरआन को जमा फ़रमाने वाले।
3. सबसे पहले कुरआन को मुसहफ़ के नाम से मौसूम करने वाले।
4. सबसे पहले ऐसे ख़ेलाफ़त के वाली जिनके वालिद बा हयात थे।

5. सबसे पहले बैतुल [illegible]ल बनाने वाले।
6. इस्लाम में सबसे प[illegible]ने अतीक़ के लक़ब से मोलक़्क़ब होने वाले।

मरज़, वफ़ात, वसीयत और हज़रत उमर को ख़लीफ़ा बनाना।

हज़रत इब्न उमर से मरवी है कि अबू बकर की मौत का सबब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात थी। आप की वफ़ात के बाद हज़रत अबू बकर का जिस्म पिघलता रहा यहाँ तक कि आपका वेसाल हो गया। इब्न सअद इब्न अबी दुनिया ने अबू सफ़र से रवायत की। उन्होंने कहा कि लोग अबू बकर पर उनकी हालते अलालत में दाखिल हुये और अर्ज़ किया। ऐ ख़लीफ़ए रसूलल्लाह क्या हम आपके लिए कोई तबीब न बुला दें जो आपकी देख भाल करे। आपने फ़रमाया तबीब ने मेरी देख भाल की। तो लोगों ने कहा "क्या कहा उसने"? आपने फ़रमाया कि उसने कहा "इन्नी फ़आलुल लेमा ओरीद" आपका मक़सद यह था कि तबीब अल्लाह तआला है और उसने अपनी किताब में फ़रमाया है "इन्नी फ़आलुल लेमा ओरीद" हम दूसरे तबीब को क्यों तलब करें जबकि वह हर अलील का तबीब है।

वाक़ेदी ने चन्दतरीक़ से रवायत की कि सैयदना अबू बकर का मर्ज़ जब बढ़ा तो आपने अब्दुर्रहमान इब्न औफ़ को बुलाया और हज़रत उमर इब्न ख़त्ताब के बारे में पूछा तो अब्दुर्रहमान ने जवाब दिया कि वह सबसे पहले अफ़्ज़ल हैं इस मामले में फिर हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान, सईद इब्न ज़ैद, असीद इब्न हैफर वग़ैरह चन्द मोहाजेरीन व अन्सार से मशविरा फ़रमाया। कुछ लोगों ने यह भी कहा। अपने रब को आप क्या जवाब देंगे जब वह आपसे पूछेगा हज़रत उमर को ख़लीफ़ा बनाने में। दराँहालके कि आप उनकी मुस्ना को देख रहे हैं। हज़रत अबू बकर ने फ़रमाया खुदा की क़सम तुम मुझे ख़ौफ़ दिलाते हो। मैं यह अर्ज़ करूँगा। ऐ परवरदिगार इनमें से सबसे बेहतर को ख़लीफ़ा बनाया और जो मैं कह रहा हूँ उसे लोगों तक पहुँचा दो। फिर आपने हज़रत उस्मान को बुलाया और फ़रमाया लिखो।

Scanned by CamScanner

بسم الله الرحمٰن الرحيم۔ هذا ما عهد ابو بكر ابن ابى قحافه اخر عهده باالدنيا خارجا منها وعند اول عهد باالاخرة داخلا ينها حيث يوئن الكافرويوقن الفاجر ويصدق الكاذب انى استخلفت عليهكم يعدى عمر بن اكخطاب فاسمعوالهٔ واطيعواوانى لم ال الله ورسوله ودينه ونفسى اياكم خيرا فان عدل فذالك طنى به علمى فيه وان بدل ولكل امرا ما اكسب والخير اردت ولااعلم الغيب وسيعلم الذين ظلموا اىّ منقلب منقلبون والسلام عليكم ورحمة الله وبركاة۔

तर्जमा :

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। यह सब से आख़िरी अहद है जो अबू बकर इब्न कहाफ़ा ने दुनिया से निकलते वक़्त की और आख़िरत का पहला अहद है जो आख़िरत में दाख़िल होते वक़्त की। जिस वक़्त काफ़िर ईमान लाता है फाजिर यक़ीन कर लेता है झूठा तस्दीक़ कर देता है बेशक मैंने तुम पर अपने बाद उमर बिन ख़त्ताब को ख़लीफ़ा बनाया। उनकी सुनो और उनकी एताअत करो और मैं खुदा, रसूल, दीन और अपने हक़ में और तुम्हारे हक में भलाई से हटना नहीं चाहा (यानी हत्तल इम्कान तुम्हारे ख़ैर का इरादा किया है) तो अगर उन्होंने अद्ल किया तो यही मेरा इल्म है उनके बारे में और अगर बदल दिया तो हर आदमी को उसकी क़माई की जज़ा मिलेगी और मैंने ख़ैर का इरादा किया और मुझे ग़ैब नहीं मालूम।

"वसयअलमुल लज़ीना ज़लमू अैया मुनक़लेबी यनक़लेबून। वस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाहे वबरकातोहू।"

फिर आपने इस मकतूब पर मोहर सब्त करने के बाद हज़रत उस्मान को हुक्म दिया वह इस मक्तूब को लेकर बाहर तशरीफ़ ले गये और लोगों ने आपसे बैअत कर ली और इस पर राज़ी हो गये। फिर हज़रत अबू बकर ने हज़रत उमर को तन्हाई में बुलाया और उन्हें चन्द वसीयतें फ़रमाई। और जब वह निकल गये तो आपने दोनों हाथ दुआ के लिए उठाए और अर्ज़ की।

اللّٰهم ان لم ارد بذالك الا صلاحهم وخفت عليهم الفتنة

فاعلمت فيهم بما انت اعلم به وجهدت لهم رأيا فوليت عليهم خيرهم واقواهم عليهم واحرمهم على ما ارشدهم وقد حضرنى من امرت ما حضرنا خلفنى فيهم لهم عبادك ونواصيهم بيدك اصلح اللهم ولانهم واجعله من خلفائك الراشدين واصلح له رعيته۔

और इब्न असाकर ने यसार बिन हमज़ा से रवायत की है कि जब हज़रत अबू बकर बीमार हुए तो आपने लोगों से कहा ऐ लोगो मैं तुमसे एक अहद चाहता हूँ। तो तुम उसे पसन्द करो। तो लोगों ने कहा हम राज़ी हैं ऐ ख़लीफ़ए रसूलल्लाह तो हज़रत अली खड़े हुए और उन्होंने कहा हम राज़ी नहीं होगें मगर यह कि वह हज़रत उमर हों। आपने फ़रमाया कि वह हज़रत उमर ही हैं। अरवह और कासिम इब्न लहद ने रवायत की कि हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने हज़रत आयशा को वसीयत फ़रमायी कि मुझे रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पहलू में दफ़्न किया जाय और मेरा सर रसूलल्लाह के शाना के पास हो और लहद को रसूल की क़ब्र से मिला दिया जाय। आपको रात में दफ़्न किया गया। हज़रत उमर, तलहा, उस्मान और अब्दुर्रहमान इब्न अबी बकर रिज़वानुल्लाहो अलैहिम अजमईन ने क़ब्र में उतारा।

(माखूज़ अज़ तारीख़ुल ख़ोलफ़ा)

अहदे सिद्दीक़ पर एक नज़र

सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की वफ़ात के बाद नक़ली नबियों, मुर्तिदीन और कुफ़्फ़ार ने मिल कर इस्लाम की बुनियाद को हिला दिया था और लोग यह समझ रहे थे कि अब इस्लाम का सर ज़मीने अरब में क़ायम और बरक़रार रहना आसान नहीं लेकिन इस्लाम दुनिया में क़ायम रहने ही के लिए आया था। इसे भला कौन सी दुनियावी ताक़त नुक़सान पहुँचा सकती थी। चुनान्चा रब्बुल आलमीन ने हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ और सहाबा कराम में इस तूफ़ान के मुक़ाबला का हौसला पैदा कर दिया जिस की बदौलत कुफ़्र व इलहाद का सैलाब ख़स व ख़ाशाक की तरह रास्ता से हट गया और इस्लाम

Scanned by CamScanner

फिर एक बार पूरे जाह व जलाल के साथ रौशन व दरख़्शाँ दिखाई देने लगा। इस हक़ीक़त से इन्कार नहीं किया जा सकता कि इस नाजुक दौर में सैयदना सिद्दीक़ अकबर ने जिस हौसला मन्दी और बेजिगरी का सबूत दिया है वह ताईदे ग़ैबी थी वरना ऐसे मवाकेअ़ पर किसी इन्सान का साबिते क़दम रहना कोई आसान काम नहीं।

हज़रत सिद्दीक़ अकबर ने अन्दरूनी फ़ित्नों और बग़ावतों को दबाने के बाद जब बैरूनी फ़ुतूहात की जानिब रूख़ किया तो इसमें भी आपको नेहायत शान्दार कामयाबियाँ हासिल हुयीं कि आप ने बयक वक्त दुनिया की सबसे बड़ी दो ताक़तें यानी सल्तनते रोम और सल्तनते ईरान से टक्कर ली और सिर्फ टक्कर ही नहीं ली बल्कि उनको तक़रीबन हर मोरचे पर शिकस्त दे कर ममलुकते इस्लामिया के हुदूद को ईराक़ और शाम तक फैला दिया। कुरआन पाक और सुन्नते रसूल चूँकि हम मामला में अपनी जगह मुकम्मल दस्तूर है इस लिए हज़रत अबू बकर सिद्दीक को अपने दौरे हुकूमत में किसी दुनियावी दस्तूर के तरतीब देने की कोई ज़रूरत पेश न आयी। और आपने इसी दस्तूर के मातहत मुख़्तसर अर्सा में ममलुकते इस्लामिया में वह तरक्कियाँ कर के दिखा दीं जा साल हा साल में भी मुमकिन न थीं। ममलुकते इस्लामिया के नये नये सूबे में गये जिसमें बाकायदा शरई नेज़ामे हुकूमत और शरई एहकामात जारी हो गये। इन सूबों में जो भी हुक्काम मोकर्रर किये जाते थे उनका कुरआन और सुन्नते रसूल की रोशनी में पहले इम्तिहान लिया जाता था। जब वह हुकूमत करने की सलाहियतों में पूरे उतरते थे तो उनको हुकूमत सुपुर्द कर दी जाती थी। मुल्की बाशिन्दों को पूरी आज़ादी दे दी गयी थी। यहाँ तक कि ग़ैर मुस्लिमों को भी हर किस्म के पूरे हुकूक़ हासिल थे। ग़रज़ कि आपके अहदे हुकूमत में गो ममलुकते इस्लामिया नौज़ाइदा थी लेकिन इसमें इस बला की जाज़बीयत और कशिश थी जो पुरानी से पुरानी हुकूमतों में नापैद थी। हज़रत सिद्दीक अकबर के दौरे हुकूमत में चूँकि बैरूनी मुमालिक की फ़ुतूहात का सिलसिला शुरू हो गया था और बड़ी बड़ी रक़में

ख़ेराज और माले ग़नीमत के ज़रिए ख़ेलाफ़ते इस्लामिया को मौसूल होने लगी थीं। इस लिए रूपये पैसे की भी कमी नहीं थी लेकिन यह रूपया नेज़ामे हुकूमत, फ़ौजी अख़राजात और अ़वाम की ज़रूरतों के लिए वक़्फ़ था। चुनान्चा हालत यह थी कि आमदनी की एक एक पाई हुकूमत व रेआ़या के फ़लाह़ व बहबूद पर सर्फ कर दी जाती थी जिसका नतीजा यह निकला कि मुल्क में फ़ारेगुल बाली और खुशहाली बढ़ती चली गयी और अ़वाम के दिलों में ममलुकते इस्लामिया का इस क़दर एतक़ाद पैदा हो गया कि हर शख़्स इसे अपनी हुकूमत समझने लगा। जनाब सिद्दीक अकबर के दौरे हुकूमत की मुद्दत कुल सवा दो साल है। यह सवा दो साल का ज़माना क़ौमों की तारीख़ में सवा दो लम्हों के बराबर भी हैसियत नहीं रखता लेकिन हज़रत सिद्दीक अकबर ने इस मुख़्तसर से वक़्फ़ा में न सिर्फ ममलुकते इस्लामिया की बुनियादों को मुस्तह़कर कर दिया बल्कि एक ऐसा कामयाब दस्तूरुल अ़मल मुसलमानों के लिए तजवीज़ किया जिसपर अ़मल पैरा होने के बाद मुसलमान तरक्की के मैदान में बराबर आगे बढ़ते चले गये।

जामेआ दारूस्सलाम

आपका महबूब इदारा है।

उसको आप अपनी आँखों से एक बार ज़रूर देखें।

K49/A1 जे० के० आशियाना करैली इलाहाबाद

Scanned by CamScanner

अमीरुल मोमिनीन इमामुल मुजाहिदीन

सैयदना हज़रत उमर फ़ारूक़

रज़िअल्लाहो अन्हो

१३ हिजरी ता २४ हिजरी

अज़

शफ़ीक़े मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

मोसीस जामेआ दारूस्सलाम
इलाहाबाद

हज़रत उमर फ़ारूक़ का अहदे हुकूमत

रज़िअल्लाहो अन्हो

हज़रत अबू बकर सिद्दीक की वफ़ात के बाद 23 जमादिस्सानी 13 हिजरी को तमाम सहाबा और मुसलमानों ने बग़ैर किसी इख़्तिलाफ़ के हज़रत उमर फ़ारूक के हाथ पर बैअत कर ली। इसकी वजह यह थी कि रहमते आलम रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़मानए हयात ही से तमाम सहाबा कराम में हज़रत उमर को ग़ैर मामूली इज़्ज़त व अज़मत हासिल थी। सब ही आपका एहतराम करते थे और सब ही आपके तकद्दुस तदब्बुर और होशमन्दी के क़ायल थे।

बोख़ारी शरीफ़ और सहीह मुस्लिम की रवायत से पता चलता है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने खुद हज़रत उमर फ़ारूक का ख़ेलाफ़त के बारे में बशारत फ़रमायी थी। चुनान्चे सैयदना अबू हुरैरह रजिअल्लाहो अन्हो से रवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अपना एक ख़्वाब बयान करते हुए फ़रमाया कि मैंने अपने आप को एक ऐसे कुएँ पर देखा जिस पर एक डोल पड़ा था मैंने कुछ डोल पानी के खींचे, मेरे बाद अबू बकर ने डोल ले लिया। एक दो डोल खींचने के बाद वह थक गये। फिर उमर आये और फिर इस तरह डोल पर डोल खींचने शुरू किये कि मैंने किसी जवाँ मर्द को इस तरह खींचते हुए नहीं देखा। यहाँ तक कि हर चहार तरफ से प्यासे आये और खूब सैराब हुए। इस हदीस़ के बारे में आईमा की राय यह है कि यह हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ के बाद हज़रत उमर फ़ारूक के खेलाफ़त के बारे में रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का इरशाद था।

हज़रत उमर की इब्तिदाई ज़िन्दगी

अ़ल्लामा नूदी ने कहा कि हज़रत उ़मर आ़म्मतुल फ़ील के

तेरह साल बाद पैदा हुए। आप कुरैश के अशराफ़ में से थे। ज़मानए जाहिलियत में जब कभी कुरैश और दूसरे क़बीला के दरम्यान लड़ाई वग़ैरह होती थी तो आप ही ओहदए सेफ़ारत पर मोक़र्रर किये जाते थे। आपने चालीस मर्द और इक्कीस औरतों के बाद या उन्तालीस मर्द और तेईस औरतों के बाद या पैंतालीस मर्द और ग्यारह औरतों के बाद इस्लाम कुबूल फ़रमाया। आपके इस्लाम लाने से मक्का में इस्लाम ग़ालिब होता चला गया और मुसलमानों को बहुत ज़्यादा खुशी हासिल हुयी। आप साबेक़ीन अव्वलीन में से एक हैं और अशरए मोबश्शिरा में से, यानी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के दामाद और कुब्बार उलमाए सहाबा और ज़ोहहाद सहाबा में से हैं। आपसे जो हदीसे मर्फ़ूअ़ मरवी हैं उनकी तादाद पाँच सौ पैंतीस हैं।

हज़रत उमर फ़ारूक का इस्लाम

तिर्मिज़ी ने इब्न उ़मर से रवायत की, नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया

اللّٰهم اعزالاسلام یاحب هذین ان الرجلین الیك بعمر بن الخطاب اوبابی جهه بن هشام۔

इब्न सअ़द और अबू यअ़ला और हाकिम और बहीकी ने दलाएल में हज़रत अनस रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत की कि हज़रत उ़मर तलवार सोंत कर निकले। रास्ते में क़बीलए ज़ोहरा के एक मर्द से मुलाक़ात हुयी। उसने पूछा कहाँ का इरादा है ऐ उ़मर। कहा, मोहम्मद के क़त्ल को जा रहा हूँ। कहा कि तुम मोहम्मद के क़त्ल के बाद बनी हाशिम व ज़ोहरा से कैसे बच सकोगे। कहा शायद तुम भी सहाबी हो गये हो। कहा क्या मैं तुम को एक अ़जीब बात बताऊँ। बेशक तुम्हारे बहनोई और बहन मुसलमान हो चुके हैं तो हज़रत उ़मर उनके पास गये और उन दोनों के पास हज़रत खुबाब मौजूद थे। जब उन्हें हज़रत उ़मर का एहसास हुआ तो घर में छुप गये। जब वे घर में दाख़िल हुए तो कहा यह आवाज़ कैसी थी, कहा ताहा पढ़ रहे थे। दोनों ने अभी तज़केरा ही किया था कि उ़मर ने कहा शायद कि तुम दोनों

अपने दीन से फिर गये। तो इस पर बहनोई ने अर्ज़ किया कि अगर हक़ इसके ग़ैर ही में था तो क्या मुज़ायक़ा हुआ। इतना कहना था कि हज़रत उ़मर ने बहुत मारा और उनकी बहन छुड़ाने के लिए आयीं तो इतने ज़ोर से उन्हें तमाचा मारा कि उनका चेहरा खून आलूद हो गया और वह गुस्सा में हो कर बोलीं कि तुम मारते हो हालाँकि हक़ तुम्हारे दीन के ग़ैर ही में है। "इन्नी अशहदो अन लाइलाहा इल्लल्लाहो वअन्ना मोहम्मदन अब्दोहू वरसूलोहू।" फिर उ़मर ने कहा वह किताब लाओ जो पढ़ रहे थे। हज़रत उ़मर ने पढ़ना चाहा तो उनकी बहन ने फ़रमाया कि चूँकि आप ताहिर नहीं हैं और इसको सिर्फ ताहिर लोग ही छुयेंगे। इस लिए गुस्ल कीजिये या वजू कीजिये। तो खड़े हुए और वजू किया। फिर किताब लिया और पढ़ा यहाँ तक कि इस आयत पर पहुँचे "इन्ननी अनल्लाहा लाइलाहा इल्ला इन्ना फ़अ़बुदनी वअक़िमिस्सलाता लेज़िकरी।" तो उ़मर ने कहा मुझे मोहम्मद पर राह बताओ तो जब खुबाब ने उ़मर की बात सुनी तो निकले और फ़रमाया ऐ उ़मर तुम्हें बशारत हो। मुझे उम्मीद है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की दुआ जो तुम्हारे हक़ में जुमेअ़रात को फ़रमायी कुबूल की गयी जो आपने इन लफ़्ज़ों से फ़रमायी। "अल्लाहुम्मा अअ़ज़्ज़ल इस्लाम बेउ़मर बिन अलख़त्ताब अव बेअबी जहल बिन हशाम।" और रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम सफ़ा के क़रीब एक घर में थे तो उ़मर चले यहाँ तक कि उस घर तक पहुँचे और उसके दरवाज़े पर हमज़ा व तलहा और कुछ लोग थे। हज़रत हमज़ा ने फ़रमाया। यह उ़मर हैं अगर इरादा ख़ैर है तो ठीक है वरना उनका क़त्ल करना हमारे लिए आसान है और नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम अन्दर थे। आप पर वही का नुजूल हो रहा था। तो आप निकले यहाँ तक कि उ़मर आ गये। आप ने उनका दामन पकड़ कर फ़रमाया कि क्या तुम्हारे फ़साद का ज़माना ख़त्म न होगा यहाँ तक कि अल्लाह तुम पर रूसवाई व सज़ा नाज़िल फ़रमा दे जैसे कि वलीद बिन मुग़ीरह पर नाज़िल फ़रमायी। तो इस पर हज़रत उ़मर ने फ़रमाया "अशहदो अल्लाइलाहा इल्लल्लाहो वइन्नका अ़ब्दुल्लाहे वरसूलेही।" आप

Scanned by CamScanner

नबूवत के छठे साल माह ज़िल हज्जा में छब्बीस साल की उम्र में इस्लाम लाये।

हिजरत उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहो अन्हो

इससे क़ब्ल जितने भी मोहाजिर थे उन्होंने छुप छुप कर हिजरत की लेकिन हज़रत फ़ारूक़ आज़म ने जब हिजरत का इरादा किया तो तलवार व कमान लेकर कअ़बा में तशरीफ़ ले गये और अशराफ़े कुरैश फ़ेनाए कअ़बा में बैठे हुए थे। आपने सात तवाफ़ किया। फिर मक़ामे इब्राहीम पर दो रेकअ़त नमाज़ पढ़ी। फिर आये और ऐलान किया। जो चाहे कि उसकी माँ उस पर रोये उसके बच्चे यतीम हो जायँ, उसकी बीवी बेवा हो जाय वह आकर मेरा रास्ता रोके। चुनान्चे आपने हिजरत फ़रमायी और किसी में आपका रास्ता रोकने की हिम्मत न हुयी।

फ़ज़ायले उमर फ़ारूक़ रज़िअल्लाहो अन्हो

(अहादीस़ की रोशनी में)

बोख़ारी व मुस्लिम ने अबूहुरैरह से रवायत की रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया मैं सो रहा था कि मैं ने देखा कि जन्नत में एक औरत एक महल के किनारे वज़ू कर रही है। मैं ने पूछा यह किसका महल है लोग बोले उमर के लिए फिर मुझे ऐ उमर तुम्हारी ग़ैरत का ख़याल आया तो मैं पीछे मुड़ कर चला आया (यह सुनकर) हज़रत उमर रो पड़े और अर्ज़ की क्या आप से ग़ैरत करूँगा या रसूलल्लाह।

और इब्न उमर से शेख़ैन ने रवायत की कि रसूलल्लाहो सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि मैं सो रहा था मैं ने दूध पिया यहाँ तक कि आसूदगी मेरे नाखून में बहने लगी। फिर मैं ने उसको उमर को दे दिया। लोगों ने अर्ज़ की आपने उसकी क्या तावील फ़रमायी। फ़रमाया इल्म से।

शेख़ैन ने सअ़द बिन वफ़ास से तख़रीज की रसूलल्लाह ने फ़रमाया ऐ इब्न ख़त्ताब उस ज़ात की क़सम जिसके दस्ते कुदरत में मेरी जान है न मुलाक़ात करेगा तुझसे शैतान मगर तुम्हारा

रास्ता छोड़कर दूसरे रास्ता पर चला जायेगा।

और तिर्मिज़ी ने इब्न उमर से रवायत की कि रसूलल्लाह ने फ़रमाया कि अल्लाह तआ़ला ने उमर के ज़बान व दिल पर हक़ जारी फ़रमाया।

और तिर्मिज़ी ने और हाकिम ने उक़बा बिन आमिर से रवायत की कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि अगर मेरे बाद कोई नबी होता तो उमर होते।

बज़ार ने इब्न उमर से रवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया कि उमर अहले जन्नत सेराज व चिराग़ हैं।

और शेख़ैन ने इब्न उमर व अबू हुरैरह रज़िअल्लाहो अन्होमा से तख़रीज की। फरमाया रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने कि मैं सो रहा था कि अपने को एक कुएँ पर देखा जिस पर डोल रखा हुआ था। तो जो अल्लाह ने चाहा उसमें से निकाला। फिर मुझसे अबू बकर ने ले लिया और एक डोल या दो डोल उससे निकाला और उनके खींचने में जोअ़फ़ था और अल्लाह उनकी मग़फ़िरत करे फिर उमर आये और कुएँ से पानी खींचा तो उनके हाथ में वह बड़ा डोल हो गया तो मैंने लोगों में इतना कवी मर्द और ज़ीहोश किसी को न देखा कि मुनकतेअ़ हुआ उनका अमल यहाँ तक कि तमाम लोग उससे सैराब हो गये और ऊँटों को भी सैराब कर लिया। नूदी ने तहज़ीब में कहा है कि उलमा ने फ़रमाया कि इसमें इशारा है अबू बकर व उमर रज़िअल्लाहो अन्हो की खिलाफत की तरफ और कसरते फ़तूह और इस्लाम के ग़लबा की तरफ दौरे फ़ारूकी में और तिबरानी ने अवसत में अबू सईद ख़दरी रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया जिसने उमर से बोग्ज़ रखा उसने मुझसे बोग्ज़ रखा, और जिसने उमर से मोहब्बत की उसने मुझसे मोहब्बत की। और तिबरानी ने ओबई इब्न कअ़ब से रवायत की कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि मुझसे जिबरईल ने कहा कि चाहिए कि इस्लाम उमर की मौत पर रोए।

Scanned by CamScanner

हज़रत उमर की राय और मुवाफ़ेक़त-ए-कुरआन

शेखैन ने हज़रत उमर से रवायत की है कि मैंने अपने रब की मुवाफेकत की तीन बातों में (यानी जैसे मैंने चाहा मेरे रब ने वैसे ही किया) (1) मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह काश हम मकामे इब्राहीम को मुसल्ला बना लेते इस पर ये आयत नाज़िल हुयी। "वत्तख़ज़ू मिम् मक़ामे इब्राहीमा मुसल्ला" (2) और मैंने अर्ज़ किया या रसूलल्लाह आप की अज़वाज के पास नेक व बद सभी आते हैं तो आप उन्हें परदे का हुक्म फ़रमाते तो यह आयते हेजाब नाज़िल हुई। (3) नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की औरतें ग़ैरत में इकटठा हुयीं तो मैंने कहा अगर वह तलाक़ देदे तो उनका रब उनसे बेहतर अज़वाज उन्हें अता कर दे चुनान्चे इसी तरह की आयत नाज़िल हुई। (4) मुस्लिम ने एक रवायत नकल की है जिसमें यह है कि बद्र के कैदियों के बारे में भी मेरे ही राय ही की मवाफेक़त फरमाई गयी। (5) अल्लामा नूदी ने तहज़ीब में तहरीम ख़म्र यानी शराब की हुरमत ज्यादा किया है। (6) और इब्न अबी हातिम ने अपनी तफ़सीर में हज़रत अनस रज़िअल्लाहो अन्हो से रवायत की है कहा कि उमर ने कहा मेरे रब ने चार बातों में मवाफेक़त फरमाई। यह आयत नाज़िल हुई। "वलक़द ख़लक़नल इन्साना मिन सुलालतिम मिन तीन।" तो जब इसका नुजूल हुआ तो मैंने कहा "फ़तबारकल्लाहो अहसनल ख़ालेक़ीन"। (7) आपकी मर्ज़ी यह थी कि आप अब्दुल्लाह इब्न ओबई के जनाज़े की नमाज़ न पढ़ें चुनान्चे आयत नाज़िल हुई "वला तुसल्ले अला अहदिम मिनहुम माता अबदा"। (8) ये आयत "या अइयोहल लज़ीना आमनू ला तकरबुस्सलात"। (9) "सवाउन अलैहिम अस्तग़फ़रता लहुम"। (10) बद्र की लड़ाई में आपने खुरूज का मशविरा दिया तो यह आयत नाज़िल हुई। "कमा अख़रजका रब्बोका मिम बैतेका"। (11) किस्सये अफक में जब आपने फरमाया "सुबहानका हाज़ा बोहतानुन अज़ीम" चुनान्चे इस

तरह की आयत नाज़िल हुई। (12) "ओहिल्ल लकुम लैलतस सेयामिर रफस" (13) इब्न अब्दुर्रहमान बिन इब्न लैला से रवायत है एक यहूदी ने उमर से मुलाकात की और कहा जिब्रईल जिनका तज़केरा तुम्हारे साहब करते हैं तो वह हमारे दुश्मन हैं तो आप ने उस से फरमाया "मन काना अदूवल्लाहे वमलाएकतेही वरोसोलेही वजिबरील मीकाल फइन्नल्लाहा अदूवल काफ़िरीन" तो इस आयत का नजूल उमर की ज़बान पर हुआ। (14) दो आदमी नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के पास मोकदमा लाये। आपने फैसला फरमा दिया। इसमें एक शख्स को यह फैसला नागवार हुआ और वह अपना मोकदमा उमर इब्न ख़त्ताब के पास ले गया। जब यह दोनों वहाँ पहुँचे तो दूसरे साथी ने कहा, ऐ उमर मेरे लिए अल्लाह के रसूल ने फैसला फरमा दिया तो उमर ने कहा क्या ऐसा हुआ। उसने कहा हाँ, फरमाया ठहरो यहाँ तक मैं आता हूँ और तलवार ले कर आये और उसकी गरदन उड़ा दी और इस पर यह आयते करीमा नाज़िल हुई। "फ़ला वरब्बोका लायूमेनून"। (15) आयते इस्तीज़ान भी आप ही की राय के मवाफ़िक़ नाज़िल हुई। (16) सुल्लतुम मिनल अव्वलीना व सुल्लतुम मिनल आख़िरीन। (17) الشيخ والزيخته اذا زينا की तिलावत का उठ जाना।

हज़रत उमर फ़ारूक़ की ख़ेलाफ़त

जमादिल आख़िर 13 हिजरी मंगल के दिन आप ख़लीफ़ा हुए और दस साल छः महीने पाँच दिन तख़्ते ख़िलाफ़त को ज़ीनत दी। फ़ज्र की नमाज़ में अबू लूलू मजूसी गुलाम के हाथ से शहीद हुए और यकुम मोहर्रम 24 हिजरी को इस दारे फानी से रेहलत फ़रमाई। आपकी उम्र भी तिरसठ बरस की हुई।

आपकी खेलाफ़त परवर दिगारे आलम की कुदरते कामेला और रहमते वासेआ का एक अजीब नमूना थी। जो बशारतें और पेशन गोइयाँ अल्लाह के रसूल ने जुहूरे इस्लाम और कसरते फतूह की मुसलमानों को दी थी वह बहुस्न वजूह आप ही की खेलाफ़त में मोकम्मल हुई।

अगर आप के अदल व इन्साफ़ और मुल्की इन्तेज़ामात

Scanned by CamScanner

और फुतूहात पर नज़र डाली जाती है तो हैरत होती है कि वह वह काम आपसे ज़ाहिर हुए जिनका कोई नमूना दुनिया में पहले से मौजूद नहीं था और अगर उनकी दीनी ख़िदमात और रूहानी कमालात को देखा जाता है तो आँखें खीरा हो जाती हैं और सफ़हाते तारीख़ में इसकी जामेईयत की मिसाल नहीं मिलती।

फतूहात

दुनिया की दो ज़बरदस्त और मुसल्लह हुकूमतें – सलतनते रोमा और सलतनते ईरान – जिन की कूवत व ताक़त पूरी दुनिया में मुसल्लम थी। जो हर तरह की फौजी साज़ व सामान से लैस थीं। रोम की सलतनत तक़रीबन चार सौ साल से क़ायम थी और ईरान की हुकूमत क्यूमरस के वक्त से क़ायम थी जिसको हज़ारों साल से इस्तेहकाम हासिल था लेकिन चन्द अरबों के साथ से दौरे फ़ारूक़ी में यह दोनों सलतनतें ज़ेर व ज़बर हो कर पाश पाश हो गयीं।

फ़तह ईरान

खुसरो परवेज बादशाहे ईरान ने रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का ख़त जो आपने उसके नाम बग़रज़ दावते इस्लाम भेजा था चाक कर दिया था। इसलिए कौन मुसलमान ऐसा था जिसके दिल में ईरानियों से इन्तिक़ाम लेने का जज़बा न था। 13 हिजरी में हज़रत उ़मर रज़िअल्लाहो अन्हो ने मस्नदे खेलाफ़त को आरास्ता करने के बाद ही मुल्के ईरान के फ़तेह तदबीरें शुरू कीं।

पहले आप ने मुसलसल चन्द रोज़ तक खुतबा पढ़े जिनमें मुसलमानों को ईरानियों से जेहाद करने की तरग़ीब होती थी। कुरआन अजीम की आयतें पढ़ पढ़ कर और अहादीसे नबविया सुना सुना कर फ़तह ईरान के वादे खुदा और उसके रसूल के मुसलमानों को याद दिलाये जिसके मुसलमानों के दिलों में एक आग सी लग गई।

सब से पहले अबू उबैदा सक़फ़ी ने आप की आवाज़ पर

लब्बैक कही। आप ने उनके इस सबक़त की बड़ी कद्र की और फ़ौरन ही एक फ़ौज मुरत्तब कर के रवाना की जिसमें सहाबा भी थे। यहाँ तक कि एक बद्री सहाबी यानी हज़रते सलीत इब्ने कैस भी इस में शरीक थे। इस फ़ौज का अफ़सर अबू उबैदा सक़फ़ी को मोक़र्रर किया और फरमाया कि कोई काम बग़ैर सहाबा के मशवरे से न करना।

मुसना बिन हारेसा को जो पहले ही से बहुक्मे हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़िअल्लाहो अन्हो ईरान की मुहिम पर मामूर थे हुक्म दिया कि वह भी अपनी फौज लेकर रवाना हों। यह दोनों ही सिपेह सालार अपनी अपनी फौज लेकर ईरान की तरफ रवाना हो गये। ईरानी बहुत पहले ही से जंग की तैयारियों में मसरूफ़ थे। रुस्तम बिन फ़रख़ ज़ार ने जो ईरानी फौज का सिपेहसालारे आज़म था फौरन जाबान को हुक्म दिया कि एक लश्करे जर्रार ले कर अरबों के मुकाबला के लिए जाये। चुनान्चा दोनों फौजों में मुकाबला हुआ और जंग–ए–अज़ीम के बाद मुसलमानों को फतह मिली और बेशुमार माले गनीमत हाथ आया। अभी माले गनीमत तक़सीम न हुआ था कि नरसी शाहे ईरान का ख़ालाज़ाद भाई एक अज़ीम फौज लेकर मुसलमानों के मुक़ाबले को पहुँच गया। इधर रुस्तम ने एक दूसरे सरदार जालबूस को एक बड़े लश्कर के साथ भेज दिया। मगर अबू उबैदा ने इससे क़ब्ल कि नरसी और जालबूस जमा हों तेज़ी के साथ हमला कर दिया और उसको भागने पर मजबूर कर दिया जिससे कि दोनों की कूवत टूट गयी। माले ग़नीमत भी काफ़ी हाथ आया। इन तीनों लड़ाइयों के ख़त्म होने के बाद माले ग़नीमत का ख़म्स और क़ैदियों को दारूल खेलाफ़ा भेज दिया बाकी माले ग़नीमत ग़ाज़ियों पर तक़सीम फरमा दिया।

जब इस शिकश्त की ख़बर मुल्के फारस पूराने दुख्त को मिली उसने बहमन जाज़विया को तीस हज़ार फौज और तीस हाथियों के साथ भेजा। उसमें जो सफ़ेद हाथी था वह खुसरू परवेज़ के वक्त से बहुत मुबारक समझा जाता था। यानी वह जिस मारका में जाता था फतह मिलती थी। दरफश कादियानी भी इस

Scanned by CamScanner

फौज के साथ था जो फरीदों के वक्त से खजाना शाही में रखा हुआ था और फतह व कामयाबी के लिए बहुत बड़ी चीज़ ख़्याल किया जाता था। फिर रुस्तम ने कुछ और मज़ीद फौज बहमन जाज़विया के साथ की।

हज़रत अबू उबैदा सकफ़ी इस मर्तबा शुजाअत से गुज़र कर तहूर की हद तक पहुँच गये और फोरात के पुल को अबूर कर के दुश्मन से मसरूफ़ कारज़ार हुए। इब्तेदाअन मुसलमानों में कुछ तज़लजुल पैदा हुआ और इसी हालत में एक मुसलमान ने पुल को तोड़ दिया ताकि खुदा न खास्ता मुसलमानों को शिकस्त हो तो पीछे न भाग सकें। ईरान के फौजी हाथियों की वजह से मुसलमान बहुत परेशान थे। अरब में हाथी नहीं होता था। लेहाज़ा घोड़े और ऊँट भी उनको देख कर बिदकते थे। बिल आख़िर हज़रत अबू उबैदा और उनके साथ चन्द लोग अपने घोड़ों से उतर लिए और तलवारों से उनकी सूँड़ें काटना शुरू करीं। खुद हज़रत अबू उबैदा ने सफेद हाथी की सूँड़ काटी मगर पीछे लौटने में उनका पैर फिसल गया और वह गिर पड़े। सफेद हाथी ने फौरन लपक कर अपने पैर से उनको कुचल दिया। उनकी शहादत के बाद यके बाद दीगरे सात आदमियों ने झण्डा उठाया और सब शहीद हो गये। आखिर में हज़रत मुसना ने अपने हाथ में झण्डा लिया और ईरानियों को शिकश्त हुई। और मुसलमान उस टूटे हुए पुल को दुरूस्त करके फिर वापस इस पार आ गये। इस लड़ाई में चार हज़ार मुसलमान शहीद हुए। क़रीब था कि फौज में बद दिली पैदा हो जाय मगर खुदा ने दिल क़वी कर दिये और चन्द रोज़ के लिए लड़ाई भी बन्द हो गयी।

इसी अस्ना में 14 हिजरी शुरू हो गयी और रोमियों ने इस मौके को देख कर कि मुसलमानों की पूरी कूवत इस वक्त ईरान में सर्फ हो रही है जंग शुरू कर दी जिसको बाद में बयान किया जायेगा। हज़रत फ़ारूक आज़म ने बे तरद्दुद इधर का भी इन्तेज़ाम शुरू कर दिया। इसी दरम्यान में हज़रत जरीर बिन अब्दुल्लाह अबजली रज़िअल्लाहो अन्हो चार हज़ार फौज के साथ यमन से आ गये। हज़रत उमर फारूक आज़म ने उनको फौरन

हुक्म दिया कि बजानिब ईरान रवाना हो जायें और मुसना बिन हारसा की मातहती में काम करें और मसना को फरमान लिखा कि जरीर बिन अब्दुल्लाह सहाबी हैं उनके एकराम व एहतराम का पूरा लेहाज़ रखना।

ईरानियों ने अब की मरतबा मेहरान–ए–हमदान को सरदारे फौज बना कर मुकाबला के लिए भेजा। बड़ी ही सख्त जंग हुई जो तारीख़े इस्लाम में "यौमुल आशार" के नाम से मौसूम है इस लिए कि इसमें सौ ऐसे मुसलमान थे कि उनमें से हर एक ने दस दस काफ़िरों को मारा था। महरान भी एक ग़ुलाम के हाथ से मारा गया इस लड़ाई में मुसलमानों को इस क़द्र माले ग़नीमत मिला था कि उससे पहले कभी नहीं मिला। इसी असना में हज़रत मुसना ने ईरान के दो बाज़ारों पर हमला किया। सोना और चाँदी और कीमती जवाहरात बकसरत आये। अब 15 हिजरी शुरू हुआ और उस क़यामत खेज़ लड़ाई की तैयारी होने लगी जिसका नाम जंगे कादसिया है। ओलमा ने लिखा है कि हज़रत फारूक आज़म रज़िअल्लाहो तआला अन्हो की कोशिश से इस लड़ाई में कुफ्र व इस्लाम के दरमयान फुरक़ाने अकबर का ज़हूर हुआ।

हज़रत सअ़द इब्न अबी वक़ास ईरान के फौजी गवर्नर

बुवैब के मैदान में मुसलमान मुजाहिदीन के तकरीबन एक लाख ईरानियों का कत्ले आम एक ऐसा वाकेआ था जिसकी बिना पर सारे ईरान में कोहराम मच गया। ईरानी जो मुद्दत से खाना जंगी में मुब्तेला थे इस शिकश्त के बाद तमाम इख्तिलाफात बालाये ताक़ रख कर मुसलमानों के खिलाफ मुत्तहिद हो गये। और ईरान के कोने कोने में मुसलमानों के मुक़ाबले के लिए फौजें भर्ती होने लगीं। इनके अलावा जिन इलाक़ों पर मुसलमानों को कब्ज़ा था वहाँ ईरानियों ने बग़ावतें बरपा करनी शुरू कर दीं ताकि अन्दरूनी बग़ावतें मुसलमानों की ताकतों कमज़ोर कर दें। ग़रज़ यह कि सारे ईरान में मुसलमानों के मुकाबले की ऐसी जबरजस्त

Scanned by CamScanner

तैयारियाँ शुरू हो गयीं जो इससे पहले कभी नहीं हुई थीं।

सैयदना फ़ारूक़ आज़म को जब इल्म हुआ कि हुकूमते ईरान मुसलमानों पर ताज़ा हमले की तैयारियाँ कर रही हैं तो आप ने भी अरब के तमाम आमिलों के नाम एहकामात जारी किये कि तमाम क़बाएल से जंगजू मुजाहिदीन जेहाद फ़ी सबीलिल्लाह के लिए भेजे जायें। आप का हुक्म पाते ही आमिलों ने मुजाहिदीन की एक बड़ी तादाद को मदीना रवाना करना शुरू कर दिया। यहाँ तक कि मदीना का सारा मैदान चंद ही रोज़ में हज़ारों इस्लामी सरफरोशों से भर गया।

हज़रत उमर को ईरानियों की जंगी तैयारियों की जो इत्तेलाआत मिली थी एक तरफ तो वह बेहद परेशान कुन थीं। दूसरे जानिब ईरानियों के मुकाबले के लिए कोई लायक अफसर भी मौजूद नहीं था। इन तमाम हालात के पेशे नज़र मजबूरन हज़रत फारूक़ आज़म को यह तय करना पड़ा कि वह खुद ही ईरान की जंग में फौजों की क़यादत करेंगे। यहाँ तक कि आप ईरान जाने लगे। बिल्कुल तैयार हो गये। आखिर सहाबए केराम ने बड़ी मुश्किल से आप को इस इरादे से बाज़ रखा और यह अहम काम मशहूर सहाबिए रसूल और रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के करीबी अज़ीज़ सैयदना सअ़द बिन अबी वक़ास के सुपुर्द किया गया। हज़रत फारुक़ आज़म ने इन्हें ईरान के फौजियों का गवर्नर बना कर इस जंग के लिए खुद मुकम्मल हिदायतें दीं और एक नक्शा भी बना कर दे दिया ताकि इस नक्शे को सामने रखकर ईरान में जदीद फतूहात का सिलसिला शुरू किया जावे। और हिदायत की कि उन्हें हर छोटे बड़े वाक़ए से बराबर मत्‌लअ़ किया जावे।

सअ़द बिन वक़ास जब मदीने से रवाना हुए तो उनके साथ सिर्फ चार हज़ार मुजाहिदीने इस्लाम का लश्कर था। लेकिन इनकी रवानगी के फौरन ही बाद हज़रत फारूक़ आज़म ने चार हज़ार का मज़ीद लश्कर ईराक के लिए रवाना कर दिया था। जो इनसे रास्ते ही में आ मिले।

इधर मुसना बिन हारिसा जिनके पास आठ हज़ार का

लश्कर था इनकी आमद का बड़ी बेचैनी के साथ इन्तिज़ार कर रहे थे। आपको जब हारिस इब्न मुसना के इन्तेक़ाल की ख़बर मिली तो आपको बेहद अफसोस हुआ।

शाह ईरान को दावते इस्लाम और जंगे क़ादसिया

हज़रत सअ़द इब्न वक़ास ईराक के इस्लामी कैम्प में पहुँचने के बाद सब से पहले यह काम किया कि आप ने ईरान पर हमला करने से कब्ल शहेन्शाह ईरान यज़दजर सोम को मुस्लिम वफ़द के ज़रिया इस्लाम की दावत दी। जिस वक्त इस्लामी मुजाहिदीन ने यज़दजर सोम को इस्लाम कुबूल करने की दावत दी। यह मुश्तइल होकर आग बगूला हो गये। और मुस्लिम वफद के नुमाइन्दों के साथ बड़ी गुस्ताख़ी से पेश आये। मुस्लिम वफ़द के नुमाइन्दा अगरचे इस वक्त मौत के मुँह में थे लेकिन फिर भी वह शाह ईरान के जाह व जलाल और गुस्से से जर्रा बराबर भी मुतास्सिर न हुए और उन्हों ने इससे कहा कि ऐ बादशाह! तेरे लिए यही बेहतर है कि या तो तू इस्लाम कुबूल कर ले या एताअ़त अख्तियार कर ले वरना तुझे ऐसी कौम से वास्ता पड़ने वाला है जिसे दुनिया की हर चीज़ से ज़्यादा मौत अज़ीज़ है।

वफ़द जब इस तरह शाह ईरान को मुतनब्बह कर के रुख़्सत हुआ तो बादशाह इनकी जुर्रात देखकर दंग रह गया। इस्लामी वफ़द के वापस आने के बाद हमला की तैयारियाँ शुरू हो गयीं और लश्करे इस्लाम आगे बढ़कर क़ादसिया के मक़ाम पर ख़ेमाज़न हो गया। मुसलमानों के क़ादसिया में क़दम रखने के बाद गर्द व नवाह के बाशिन्दे भागने लगे। उन्हों ने दरबारे ईरान से यह कहना शुरू किया कि या तो मुसलमानों का कोई इलाज किया जाये या फिर हम मजबूरन उनकी एताअ़त करेंगे और अपनी जान व माल महफ़ूज़ करा लेंगे।

शाहे ईरान ने अपनी रेआया की घबराहट और परेशानी को महसूस करतें हुए अपने वज़ीरे देफ़ाअ़ रूस्तम को हुक्म दिया कि

Scanned by CamScanner

वह खुद एक लश्करे अज़ीम लेकर क़ादसिया की जानिब रवाना हो जाये और मुसलमानों का मामला हमेशा के लिए ख़त्म कर दे। बादशाह का हुक्म पाते ही रूस्तम मदाएन से रवाना हो गया और उसके साथ एक लाख अस्सी हज़ार का लश्करे जर्रार था। जिस की कमान कई बड़े बड़े ईरानी सिपेह सालार कर रहे थे। इसके अलावा सैकड़ों जंगी हाथी भी थे। यह तमाम लश्कर आकर इस्लामी लश्कर के मुकाबले मे डट गये। बावजूद यह कि दोनों लश्कर आमने सामने थे लेकिन कई माह तक किसी ने जंग की पहल नहीं की। इस दरम्यान में रूस्तम ने कई बार सुलह की कोशिश की लेकिन सुलह के शरायत तय न हो सके और जंगी हालत बदस्तूर रही। ईरानी लश्कर को मुसलमानों के लश्कर के सामने पड़े हुए जब छः माह गुज़र गये तो दरबारे ईरान से जंग शुरू करने के पैग़ामात आने लगे। बिल आखिर रूस्तम ने अपनी फौज नहर से पार करके इस्लामी लश्कर के सामने सफ़आरा कर दिया और दोनों लश्करों में जंग शुरू हो गयी। एक तरफ पौने दो लाख मय हाथियों के लश्करे जर्रार था और दूसरी तरफ तीस हज़ार से भी कम मुजाहिदीन थे लेकिन इस कसरत व किल्लत के बावजूद पहले रोज़ की जंग बराबर रही। अलबत्ता पहले ही रोज़ हरमज़ और चन्द बड़े बड़े ईरानी सरदार मुसलमानों के हाथों गिरफ़्तार हुए।

दूसरे दिन जब जंग छिड़ी तो मुसलमानों की हिमायत के लिए शाम से एक ताज़ा दम लश्कर भी आ गया जिससे मुसलमानों की हिम्मत और बढ़ गयी और ईरानी ज़्यादा तर हाथियों पर एतमाद करते थे लेकिन मुसलमान अब हाथियों का मुकाबला करने के आदी हो चुके थे इस लिए हाथियों का गोल मुसलमानों का कुछ न बिगाड़ सका। दूसरे दिन का मुसलमानों का अहम कारनामा यह है कि इस रोज़ ईरानियों का सबसे बड़ा सिपेह सालार बहमन जादविया मैदाने जंग में मारा गया जिससे कि ईरानी लश्कर में घबराहट पैदा हो गयी।

तीसरे दिन की जंग गुज़िश्ता दिनों से कहीं ज़्यादा खतरनाक व ख़ौफ़नाक थी क्योंकि दोनों जानिब से पूरी ताक़त के

साथ हमले हो रहे थे। इस तीसरे दिन की जंग में जब ईरानियों ने हाथियों को बढ़ा कर इस्लामी लश्कर को कुचलना चाहा तो मुसलमानों ने ऐसी दीदा दिलेरी के साथ हाथियों पर हमले किये कि हाथियों का गोल उलटा ईरानी लश्कर पर पलट पड़ा और अपनी ही फौज को कुचलता चला गया। तीसरे दिन सुबह से रात तक लड़ाई बदस्तूर जारी रही। रात के वक्त मुसलमानों ने मुजतमअ़ होकर ऐसी सख़्ती के साथ हमले किये कि मुसलमान ईरानी लश्कर को काटते हुए रूस्तम तक पहुँच गये और रूस्तम को हर चहार तरफ से घेर लिया। रूस्तम ने तो पहले मुकाबला किया लेकिन जब ज़ख़्मी हो गया तो पीठ फेर कर भागा। हेलाल बिन अलक़मा ने बढ़कर भागते हुए उसपर बरछे का वार किया जिससे रूस्तम की कमर की हड्डी टूट गयी और वह नहर में गिर पड़ा। अलक़मा ने झुक कर उसकी टांगें पकड़ लीं और बाहर खींच लिया और उसका काम तमाम करने के बाद लश्कर में बआवाज़े बलन्द कहा "खुदा की क़सम मैंने रूस्तम को क़त्ल कर दिया है।" इस आवाज़ को सुनते ही इस्लामी फौज ने नारए तकबीर बुलन्द किया और ईरानी बदहवास हो कर भागने लगे। चुनान्चे इनमें से बेश्तर सिपाही भागते हुए मारे गये। ग़रज़ ईरानियों को इस जंग में जो 15 हिजरी में लड़ी गयी बुरी तरह शिकश्त का मुँह देखना पड़ा।

ईरानियों का मुकद्दस झण्डा "दरफ़श कादियाँ" हज़रत ज़र्रार इब्न उलख़त्ताब के हाथ लगा जिसके एवज़ इनको तीस हज़ार दिरहम दिये गये। रूस्तम का लिबास सामान असलहा हेलाल बिन अलक़मा के हवाले किया गया क्योंकि वही उसके मुस्तहिक़ थे। उन्होंने ही रूस्तम का सर क़लम किया।

रूस्तम के लिबास में हज़ार दीनार के जवाहरात लगे हुए थे। जो अलक़मा के कब्ज़े में आये। ईरानियों को अपने मुकद्दस झण्डे के छिनने का बेहद सदमा हुआ। क्योंकि इस झण्डे के छिन जाने के बाद ईरानी अक़ीदे के मुताबिक़ उन्होंने समझ लिया था कि अब ममलुकते ईरान का आतिश परस्तों के हाथ में रहना मुश्किल है। क़ादसिया की इस मश्हूर जंग में छः हज़ार मुसलमान

Scanned by CamScanner

शहीद हुए और तक़रीबन चालीस हज़ार ईरानी मारे गये। इस जंग के बाद मुसलमानों के हाथ बे अन्दाज़ा माले ग़नीमत आया जिसका पाँचवाँ हिस्सा फौरन ही ख़लीफ़ए इस्लाम के पास मदीना मुनव्वरा रवाना कर दिया गया। ख़लीफ़ए इस्लाम हज़रत उमर रज़िअल्लाहो अन्हो इस जंग के नतीजा का बड़ी बेसब्री से इन्तेज़ार फरमा रहे थे जब आपको मालूम हुआ की क़ादसिया में मौला ताला ने मुसलमानों को फ़तह नसीब फरमाई तो आप बेहद मसरूर हुए और सजदए शुक्र अदा किया। क़ादसिया की फतह का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि इस फ़तह के बाद मुसलमान ईरान के दारूल सल्तनत मदाएन के दरवाज़े पर पहुँच गये थे क्योंकि मदाएन क़ादसिया से सिर्फ तीस मील के फासले पर था।

शहर बसरा की तामीर

क़ादसिया की फ़तह के बाद सअ़द बिन वक़ास ने हज़रत उमर की हिदायत पर शहर बसरा की बुनियाद उस जगह रखी जहाँ दजला व फोरात मिलते हैं और हुक्म दिया कि बसरा की तामीर फौरन शुरू कर दी जाय। इस जदीद शहर की तामीर का मक़सद यह था कि एक ऐसे शहर की बुनियाद डाली जाय जहाँ से हिन्द और दूर दूर के मुमालिक से तिजारत करने में सुहूलत हो चुनान्चे आगे चल कर बसरा बहुत बड़ा तिजारती मर्कज़ बन गया।

इसी दरम्यान में हज़रत सअ़द बिन वक़ास को फिर हज़रत उमर की जानिब से हिदायत मिली कि वह क़ादसिया और मदाएन के दरम्यान छोटे छोटे शहरों की फ़तह की जानिब मोतवज्जह हो जायें और आप हुक्म पाते ही बाबिल की तरफ रवाना हो गये। क्योंकि क़ादसिया से फ़रार होने वाले बाबिल ही में पनाह लिए हुए थे। लेकिन अभी इस्लामी लश्कर बाबिल पहुँच भी न पाया था कि तमाम ईरानी सरदार बाबिल से भी फ़रार हो गये। कुछ तो मदाएन की जानिब और कुछ ने अहवाज़ व नहाविन्द की जानिब पनाह ली। बाबिल से जाते हुए उन्होंने रास्ते

के तमाम पुल तोड़ दिये और नहरों को नाक़ाबिले अ़बूर बना दिया। मुसलमानों ने मैदान ख़ाली पाकर बाबिल पर कब्ज़ा कर लिया।

मदायन की फ़तह

ईरानी सरदारों ने बाबिल से फरार होते वक्त दरियाए दजला का पुल तोड़ दिया था और कश्तियाँ भी हटा ली थीं, ताकि इस्लामी फौज मदायन में दाख़िल न हो सके। हज़रत सअ़द ने फरमाया कोई परवाह नहीं, अल्लाह तआ़ला का नाम लेकर और हज़रत फ़ारूक़ आज़म के अद्ल व इन्साफ़ का वास्ता बारगाहे इलाही में पेश कर के उसी बहरे ज़ख़्ख़ार में उन्होंने अपना घोड़ा डाल दिया। उनके घोड़े का दरिया में पड़ना था कि एक दम साठ हज़ार घोड़े दरिया में थे। तरतीब यह रखी गयी थी कि दो दो मुसलमान बाहम मिले जुले हुए चलें। हज़रत सलमान फारसी फरमाते हैं कि साठ हज़ार इस्लामी शहसवार दरियाए दजला में मोतहर्रिक पानी की सतह पर इस तरह फैले हुए थे गोया कि वह किसी बाग़ में चहल क़दमी कर रहे हैं और जहाँ घोड़े थक जाते थे वहाँ खुश्क टीला या ज़मीन नमूदार हो जाती थी। जिसपर खड़े हो कर घोड़े आराम कर लेते थे न कोई शख़्स दरिया में डूबा न किसी की कोई चीज़ ज़ाया हुई। सब के सब दरिया के पार पहुँच गये। एक सवार का प्याला अलबत्ता दरिया में बह गया था। रस्सी कमज़ोर थी दरिया के मौजों में टूट गई। पार उतर कर उन्होंने कहा कि खुदा की कसम यह नहीं हो सकता कि मेरा प्याला दरिया में रह जाय। यह कहना ही था कि एक मौज आई और उसने वह प्याला दरिया के किनारे पहुँचा दिया।

इस दिन का नाम तारीख़–ए–अरब में "यौमुल माअ" रखा गया। इस बईद अज़ क़यास ताईदे रब्बानी को देख कर ईरानियों ने शहर मदायन को खाली कर दिया। और बग़ैर जंग के मुसलमानों का उस पर कब्ज़ा हो गया।

Scanned by CamScanner

फ़तह रोम व शाम

14 हिजरी से सैयदना फारूक़ आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो ने रोम व शाम की तरफ तवज्जोह फरमाई और 22 हिजरी तक उसको मोकम्मल फरमा लिया।

ताईदे रब्बानी के अजीब व ग़रीब वाक़ेआत इन फ़तूहात में भी रोनुमा होते रहे। बाज़ मक़ामात बग़ैर जंग कब्ज़े में आ गये। बैतुल मोक़द्दस बग़ैर लड़ाई के इस तरह कब्ज़े में आ गया कि वहाँ के ईसाइयों और यहूदियों के उलेमा ने कहा कि उमर बिन आस बैतुल मोक़द्दस को फतह नहीं कर सकते क्योंकि फ़ातेह बैतुल मोकद्दस का हुलिया हमारी किताबों में लिखा हुआ है जो उमर बिन आस पर मुन्तबक़ नहीं होता। हज़रत उमर बिन आस ने इसकी खबर हज़रत उमर को दी और आप तशरीफ़ ले गये। जिस वक्त आप बैतुल मोकद्दस पहुँचे और आप को उन लोगों ने देखा, फौरन दरवाज़ा खोल दिया और कहा कि यह वही हैं।

बैतुल मोकद्दस में जाबिया के मक़ाम पर आपने एक दरबार किया और तमाम सरदाराने अफ़वाज को भी इसमें शरीक फरमाया और शआएरे इस्लाम का कमा हक्क़हू ऐलान फरमाया।

मिस्र, असकन्दरिया, हल्ब, अहवाज़, आज़र बाईजान वग़ैरह भी बड़े मारकों के बाद फ़तह हुए और कुस्तुनतुनिया और खुरासान की फतूहात का भी आग़ाज़ हुआ। जिसकी तकमील हज़रत उसमान इब्न अफ़्फ़ान के ज़माने में हुई।

हज़रत उमर का किरदार और मुल्की कारनामे

1. एक हज़ार छत्तीस शहर मआ इनकी मुज़ाफात के फतह किये। जो मकाम कब्जे में आता फौरन आप के हुक्म से वहाँ मस्जिद बनाई जाती ओर इमाम व मोअज़्ज़िन का तकर्रुर किया जाता।
2. चार हज़ार मस्जिदें नमाज़े पन्जगाना के लिये और नौ सौ जामेअ़ मस्जिदें आपके ज़माने में बनी।
3. मस्जिदे हराम की तौसीअ़ फ़रमाई।

4. मक्के और मदीने के दरमियान हर हर मन्ज़िल पर सरॉय का इन्तेज़ाम कराया और कुएं बनवाये।
5. हरम के हुदूद पर निशानात लगवाये।
6. मस्जिदे नबवी की तौसीअ़ फरमाई और मकामे अक़ीक़ से चटाइयाँ मंगवा कर बिछवायीं।
7. अहले किताब की औरत से निकाह की मुमानअ़त फरमायी मगर साथ ही यह भी फरमा दिया कि ये मुमानअ़त अज़ राहे मसलेहत है। खुदा ने इसको हलाल किया है मैं हलाल को हराम नहीं करता। वाक़ई किस कदर अन्जाम बीनी थी। इस हुक्म में आज मुसलमानों का इन नस्लों को कोई देखे जिनकी माँए यूरोप के ईसाई या यहूदी हैं। तो उसको इस हुक्म की कदर मालूम होगी।
8. आपका हुक्म था कि मुमालिक इस्लामिया के बाज़ारों में कोई शख्स दुकान नहीं रख सकता जब तक कि मसायले दीनिया का इल्म न रखता हो। यह कितनी ज़बर जस्त तदबीर थी इल्म दीन के तरवीज की।
9. अपने यहाँ उस की ज़्यादा तौक़ीर करते जो इल्मे कुरआन में फौक़ियत रखता। अकसर इल्मे कुरआन में इम्तिहान भी लेते। जो कामयाब होता उसकी बड़ी इज़्ज़त फरमाते।
10. बड़े दरिया दिल और फैयाज़ थे आप के पास जो भी माले ग़नीमत आता था उसे ग़रीबों और मिस्कीनों में तकसीम फरमा देते थे। अपने लिये दूसरे वकत के खाने के बकदर भी न रखते थे।
11. इस्लाम के पुराने ख़ादिमों और रसूलल्लाह के कुन्बा के अफराद के लिये गेराँ कद्र वज़ायफ मोकर्रर कर रखे थे। चुनान्चे हज़रते अब्बास रज़िअल्लाहो अन्हो अ़म्मे रसूलल्लाह का सालाना वज़ीफा दो लाख दिरहम था।
12. जिन मुजाहिदीन ने शाम ईरान और मिस्र में जंगी कारनामे अंजाम दिये थे उनको भी माकूल पेन्शन दी जाती थी।
13. अज़वाज मोताहिरात का वज़ीफा दस दस हज़ार दिरहम सालाना मोक़र्रर फरमाया था। मुल्की इस्लाहात में भी आपने बड़े बड़े कारनामे अन्जाम दिये। मुल्की कारोबार चलाने के लिए बैतुल

Scanned by CamScanner

माल यानी ख़ज़ाना क़ायम किया।

फ़ौज के लिए दफ़्तर क़ायम किये। रज़ाकारों की तनख़्वाहें मोक़र्रर कीं। मुल्क की पैमाइश का क़ायदा जारी किया। मर्दुम शुमारी करायी, नहरें खुदाईं, शहर आबाद किये, मकबूज़ा इलाक़ों को सूबों में तकसीम फरमाया। हर सूबा के लिए गवर्नर और हुक्काम मोक़र्रर फरमाये, जेल और पुलिस का महकमा क़ायम फरमाया। सी आई डी और मुख़बिरों को मोक़र्रर फरमाया, सड़कें बनवायीं और मुसाफ़िरों के लिए सड़कों पर सरायें तामीर कराये।

आप रात को खुद ही गश्त कर के रेआया के हालात मालूम फरमाते थे। आप ही के दौर में नमाज़े तरावीह बाजमाअत की इब्तेदा हुई। मालूम हुआ कि नमाज़े तरावीह बाजमाअत बिदअते हसनह है लेहाज़ा हर बिदअत गुमराही नहीं। बिदअत गुमराही का सबब है।

आपके ज़माना के फ़तूहात पर गौर करने के बाद अक्ल इंसानी हैरान रह जाती है। आपकी फतूहात का अन्दाज़ा इससे लगाया जा सकता है कि जो मुल्क आपके दौरे खेलाफत में फतह हुए उनका रक़बा 22 लाख मुरब्बा मील था। जिसके अन्दर 36 हज़ार शहर और क़िले मुसलमानों के कब्ज़े में आये।

कशफ़ व करामात

☆मदीना मुनव्वरा में जुमा का खुत्बा पढ़ रहे थे। दरम्यान खुत्बा ही दो या तीन बार बुलन्द आवाज़ से यह जुमला इरशाद फरमाया। या सारियह अलजबल। और इसके बाद फिर खुत्बा शुरू कर दिया। तमाम हाज़िरीन को हैरत थी कि दौराने खुत्बा यह बे रब्त जुमला आपकी ज़बान मुबारक से कैसे निकला। सैयदना अब्दुर्रहमान बिन औफ़ को बेतकल्लुफ़ी ज़्यादा थी। उन्होंने दरियाफ़्त फ़रमाया कि आज दरम्यान खुत्बा "या या सारियह अलजबल" कैसे फ़रमाया। तो आपने एक लश्कर का ज़िक्र फ़रमाया जो ईराक़ में था और नहाविन्द में जेहाद में मश्गूल था। इस लश्कर के सरदार सारिया थे। मैंने देखा कि वह पहाड़ के पास लड़ रहे हैं और दुश्मन की फौज सामने से भी आ रही है

और पीछे से भी आ रही है जिसकी उन लोगों को खबर नहीं। यह देख कर मेरा दिल क़ाबू में न रहा और मैंने आवाज़ दी कि ऐ सारिया पहाड़ से मिल जाओ। थोड़े दिनों के बाद जब हज़रत सारिया का कासिद आया तो उसने सारा वाक़ेआ बयान किया कि हम लोग लड़ाई में मश्गूल थे कि यकायक यह आवाज़ आई "या या सारियह अलजबल या सारियह अलजबल" इस आवाज़ को सुनकर हम लोग पहाड़ से मिल गये और फ़तह हुई।

(इस वाक़ेआ से पता चलता है कि हज़रत उमर को अल्लाह ने कितनी वसीअ़ नज़र दी थी और उनके इल्म की कितनी विसअ़त थी और उनकी आवाज़ को हवा ने इतनी दूर पहुँचाया। यह उनके अख्तियार की एक झलक है। तो जब रहमते आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम एक अदना गुलाम के अख्तियार का यह हाल है तो फिर नबी के अख्तियार का क्या हाल होगा।)

☆मिस्र के फ़तह होने के बाद अहले मिस्र ने हज़रत उमर बिन आस से कहा कि हम लोगों की काश्तकारी का दारो मदार दरियाए नील पर है और दरियाए नील का यह दस्तूर है कि हर साल एक कुँवारी लड़की जो हुस्न व जमाल में सबसे मुमताज़ होती थी दरिया में डाल दी जाती है अगर किसी साल ऐसा न किया जाय तो दरिया नहीं बढ़ता और कहत पड़ जाता है। आपने यह वाक़ेआ हज़रत फ़ारूक़ आज़म को लिखकर भेजा। आपने तहरीर फरमाया कि इस्लाम ऐसी वहशियाना रस्मों की इजाज़त नहीं देता और आपने एक खत दरियाए नील के नाम लिखकर भेजा जिसका मज़मून यह था। बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम। यह ख़त अल्लाह के बन्दे उमर बिन अलखत्ताब की तरफ से नील मिस्र के नाम है। अम्मा बाद ! अगर तू अल्लाह के हुक्म से जारी है तो अल्लाह के हुक्म से जारी रहना। इस खत के डालते ही दरियाए नील बढ़ना शुरू हुआ और सालहाए मा सबक के बनिस्बत छः गज़ ज़्यादा बढ़ा और यह रस्म बद मौकूफ़ हो गयी।(इस वाक़ेआ से हज़रत फ़ारूक़ आज़म के अख्तियार का अन्दाज़ा किया जा सकता है।)

Scanned by CamScanner

☆क़हत के ज़माना में हज़रत फारूक आज़म ने पानी बरसने की दुआ माँगी। और पानी बरसा तो कुछ बद्दू लोग बाहर आये और उन्होंने बयान किया कि अमीरूल मोमिनीन हम लोग फलाँ दिन फलाँ वक़्त अपने जंगलों में थे, यकायक एक अब्र उठा और उससे यह आवाज़ आ रही थी "अताकल ग़ौस अबा हफ़्स" यानी ऐ अबूहफ़्स (उमर) तुम्हारे लिये बारिश आ गयी।

☆एक मर्तबा आप के ज़माने में ज़लज़ला आया। बार बार ज़मीन हिलती थी तो आप ने अल्लाह की हम्द व सना बयान की और एक दुर्रा ज़मीन पर मारा और फरमाया। ऐ ज़मीन ! साकिन हो जा। क्या मैंने तेरे ऊपर अद्ल नहीं किया। इसके बाद फौरन ही ज़लज़ला मौक़ूफ़ हो गया।

☆हाबिस बिन सअद ताई ने ख्वाब देखा कि आफताब व माहताब में बाहम जंग हुई और हर एक के साथ कुछ कुछ सितारे हैं। यह ख़्वाब उन्होंने हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो से बयान फरमाया तो आपने फरमाया तुम किस जमात के साथ थे। उन्होंने कहा कि मैं चांद के साथ था। हज़रत फारूक आज़म ने फरमाया अब मैं तुमको किसी काम पर मोकर्रर नहीं करूँगा। तुम तारीक निशानी के साथ थे। चुनान्चे यह बुज़ुर्ग जंगे सिफ़ैन में हज़रत मआविया के साथ थे और इसी जंग में शहीद हुए।

☆एक पहाड़ की खोह से आग निकला करती थी और जहाँ तक पहुँचा करती थी जला कर खाकिस्तर कर देती थी। हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो के ज़माने में वह आग नमूदार हुई तो आपने हज़रत अबू मूसा अशअरी या हज़रत तमीम दारी को हुक्म दिया कि जाओ इस आग को इसी खोह में दाखिल कर आओ। चुनान्चा वह गये और अपनी चादर से उस आग को हँकाना शुरू किया यहाँ तक कि वह खोह में चली गयी और फिर कभी वह आग नमूदार न हुई।

☆एक बार एक अजमी शख़्स मदीना मुनव्वरा में आया। हज़रत फारूक आज़म को वह तलाश कर रहा था। किसी ने बता दिया कि वह जंगल में सो रहे हैं और वह जंगल की तरफ गया तो देखा कि आप ज़मीन पर दुर्रा सर के नीचे रखे हुए सो रहे

हैं। इस अजमी ने अपने दिल में ख्याल किया कि सारे जहाँ में इस शख़्स की वजह से फित्ना बरपा है, इस वक़्त इसका कत्ल कर देना बहुता आसान है। यह ख्याल कर के उसने तलवार निकाली। फौरन दो शेर नमूदार हुए और इस अजमी की तरफ लपके। अजमी फरियाद करने लगा। हज़रत फ़ारूक़ आज़म बेदार हुए। इस अजमी ने सारा किस्सा बयान किया और मुसलमान हो गया।

☆एक मर्तबा आप का एक लश्कर किसी दूर दराज़ मक़ाम पर मशगूल जेहाद था। एक दिन मदीना मुनव्वरा में बैठे बैठे आपने बुलन्द आवाज़ से फरमाया। "या लब्बैकाह" किसी के समझ में न आया कि क्या बात है यहाँ तक कि वह लश्कर वापस आया और सरदारे लश्कर ने फतूहात का बयान शुरू किया तो हज़रत फ़ारूक़ आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो ने फरमाया। इन बातों को रहने दो। उस शख़्स का हाल बयान करो जिसको तुमने जबरन पानी में भेजा था। सरदारे लश्कर ने अर्ज़ की। अमीरूल मोमिनीन अल्लाह की कसम मैंने उसके साथ बदी का इरादा न किया था। बात यह हुई कि हम लोग एक ऐसे दरिया पर पहुँचे जिसकी गहराई की हद मालूम न थी कि इसे अबूर किया जा सके। लेहाज़ा हमने उस शख़्स को बरहना किया और पानी में भेजा। हवा बहुत ठंडी थी। इस शख़्स पर हवा का असर हो गया और उस ने फरियाद की। वा उमराह, वा उमराह। इसके बाद वह शख़्स सर्दी की शिद्दत से हलाक हो गया। जब लोगों ने इस वाकेआ को सुना तो समझा कि वह उस दिन की लब्बैक इनकी इसी मज़लूम के जवाब में थी।

हज़रत फ़ारूक़ आज़म ने सरकारे लश्कर से फरमाया कि अगर यह अन्देशा न होता कि मेरे बाद एक दस्तूर क़ायम हो जायेगा तो यक़ीनन मैं तेरी गर्दन मार देता। अच्छा जा इस मकतूल के अह्ल व अयाल को खूँबहा अदा कर और अब कभी मुझे अपनी सूरत न दिखाना। एक मुसलमान का कत्ल हो जाना मेरे नज़दीक बहुत से काफिरों के कत्ल से ज़्यादा सख़्त है।

जिस दिन आपका वेसाल हुआ गैब से यह अशआर सुने गये।

Scanned by CamScanner

لبیک علی الاسلام من کان باکیا
فقد اوشکوا ھلکی وما قدم المعھد
وادبرد الدنیا وادبر خیرھا
وقد ملھا من کان یومن بالوعد

मफ़हूम यह है कि जिसको इंसलाम पर रोना हो खूब रोये। अभी ज़्यादा ज़माना नहीं गुज़रा कि लोग हलाकत को पहुँच गये। दुनिया से खैर व बरकत जाती रही। और अपने लोग दुनिया में परेशान हो गये।

हज़रत उमर की शहादत

आपकी शहादत इस्लाम के उन मसायब में से है जिनकी तलाफी न हुई और न हो सकती है। जिस दिन वह इस्लाम लाये दीने इलाही की शौकत व इज़्ज़त बढ़ती चली गयी और अपने अहदे खेलाफत में वह काम किये जिनकी नज़ीर चश्म फ़लक ने कभी नहीं देखी और जिस दिन से रूख्सत हुये मुसलमानों का एक़बाल भी रूख़्सत हुआ।

एक रोज़ अपने मामूल के मुताबिक बड़े सवेरे नमाज़ फज्र के लिए मस्जिद तशरीफ ले गये। उस वक्त दुर्रा आपके हाथ में होता था और सोने वालों को अपने दुर्रे से जगाते जाते थे। मस्जिद पहुँच कर सफें दुरूस्त करने का हुक्म देते थे। इसक बाद नमाज़ शुरू फरमाते थे और नमाज़ में तवील सूरतें पढ़ते थे। इस रोज़ भी आप ने ऐसा ही किया। नमाज़ शुरू की थी, सिर्फ तकबीर तहरीमा कहने पाये थे कि एक मजूसी काफिर अबू लूलू ने जो मुग़ीरा का गुलाम था एक ज़हर आलूद खन्जर लिये हुए मस्जिद की मेहराब में छुपा हुआ था आपके शिकम मुबारक में तीन ज़ख़्म कारी उस खन्जर से लगाये जिससे आप उसी वक्त बेहोश हो कर गिर गये और हज़रत अब्दुर्रहमान बिन औफ़ ने आगे बढ़ कर बजाये आपके इमामत की और मुख्तसर नमाज़ पढ़ाकर सलाम फेर दिया।

अबू लूलू ने चाहा कि किसी तरह मस्जिद से निकल कर

भाग जाये मगर नमाज़ियों की सफों से जो मिस्ल दीवार के हायल थीं निकल जाना आसान काम न था। लेहाज़ा इसने और सहाबियों को भी ज़ख्मी करना शुरू किया। इसी तरह तेरह सहाबी और जख्मी हुए जिसमें से सात जाँ बहक भी हो गये। इतने में नमाज़ खत्म हुई और अबू लूलू पकड़ लिया गया। जब इसने देखा कि मैं गिरफ्तार हो गया हूँ तो उसी खन्जर से उसने अपने को भी हलाक कर लिया।

हज़रत फ़ारूक़ आज़म ने दरियाफ्त फरमाया। मेरा कातिल कौन है ? हज़रत इब्न अब्बास ने कहा। अबू लूलू मजूसी काफिर। यह सुनकर आपने तकबीर इतनी बुलन्द आवाज़ से की कि बाहर तक आवाज़ गयी और फरमाया कि अल्लाह का शुक्र है कि उसने एक काफिर के हाथ से मुझे शहादत अता फरमाई। यह अबू लूलू एक मर्तबा अपने मौलवी का शिकायत लेकर आया था कि वह मौसूल ज़्यादा लेता है लेकिन जब आपने पूछा तू काम क्या करता है ? उसने कहा ! चक्की बनाता हूँ। तो फरमाया इतना मौसूल ज़्यादा नहीं है। फिर इस वाकये के बाद ही इसने खन्जर ज़हर में बुझाना शुरू कर दिया और आप के कत्ल की फिक्र में था।

दवा इलाज की कोशिश की गयी मगर कोई तदबीर काम में न आयी। सहाबा अजीब हसरत से आपको देखते थे और आप सब ने कहा अमीरूल मोमिनीन ! आपने किताबुल्लाह की पैरवी की और सुन्नत पर अमल किया। अल्लाह तआला आप को जज़ाए खैर दे।

फिर आपने अपने साहबज़ादे हज़रत अब्दुल्लाह को भेज कर अमीरूल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीका से हुजरए अक़दस में दफन होने की इजाज़त चाही। अमीरूल मोमिनीन हज़रत आयशा ने फरमाया कि वह जगह मैंने अपने लिए रखी थी मगर मैं उनको अपने ऊपर तरजीह देती हूँ। जिस वक्त आपको यह खुशखबरी मिली आप बहुत खुश हुए कि अल्लाह तआला ने यह आखिरी सबसे बड़ी खुशी भी पूरी फरमा दी।

27 ज़िल हज्जा को बरोज़ चहार शम्बा ज़ख़्मी हुए और पाँचवें दिन यकुम मोहर्रमुल हराम बरोज़ यकशम्बा बउम्र तिरसठ

Scanned by CamScanner

साल रेहलत फरमायी। रज़िअल्लाहो अन्हु वरज़ाहो अन्ना।

हज़रत सुहैब ने नमाज़ जनाज़ा पढ़ाई और खास रौज़ए नबवी में हज़रत अबूबकर सिद्दीक रज़िअल्लाह अन्हो के पहलू में आपकी कब्र मुबारक बनायी गयी।

☆☆☆

शफीक–ए–मिल्लत की

"औलियाए केराम"

की तारीख पर एक अहम किताब

तारीखे औलिया

मन्ज़रे आम पर आ चुकी है।

☆☆☆

दारूलउलूम अफ़ज़लुल मदारिस

आपका महबूब इदारा है।

उसको आप अपनी आँखों से एक बार ज़रूर देखें।

इमाम अहमद रज़ा रोड

करैला बाग, इलाहाबाद

इमामुल मोतसद्देक़ीन व जामेउल कुरआन

सैयदना हज़रत

उस्मान ग़नी

जुन्नूरैन रज़िअल्लाहो अन्हो

२४ हिजरी ता ३५ हिजरी

शफीके मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

Scanned by CamScanner

सैयदना उस्मान ग़नी जुन्नूरैन

रज़िअल्लाहो अन्हो

इब्तेदाई ज़िन्दगी व सिलसिलए नसब

आपका सिलसिलए नसब मर्रह में सैयदे आलम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ मिल जाता है। उस्मान बिन अफ्फ़ान बिन अबिल आस बिन उमैया बिन अब्द शम्श बिन अब्द मनाफ बिन कैसी बिन कलाब इब्न मर्रह बिन कअब बिन लुई इब्न ग़ालिब अलकरशी।

आमतुल फ़ील के छठे साल पैदा हुए। आप उन कुदमा सहाबा में से हैं जो हज़रत सिद्दीक़ अकबर रज़िअल्लाहो अन्हो की तरग़ीब व तबलीग़ से मुशर्रफ़ बा इस्लाम हुए। आपने हिजरते ऊला जो हबशा की तरफ हुई थी और हिजरते सानिया दोनों में शिरकत की। ऐलाने नबूवत से क़ब्ल हज़रत रोक़ैया बिन्त रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से आपका निकाह हुआ था जिनका वेसाल ग़ज़वए बद्र के मौके पर हुआ। हज़रत रोक़ैया ही की बीमारी के सबब आप ग़ज़वए मज़कूर में शिरकत न कर सके थे लेकिन अल्लाह के रसूल ने आप को एजाज़त भी दे दी थी और आप के लिए मुजाहिदीन का हिस्सा भी दिया और आपको बद्र बीन में से शुमार किया गया।

इसके बाद फिर आपसे हज़रत उम्मे कुलसूम बिन्त रसूलल्लाह का अक़्द हुआ जिनका वेसाल 9 हिजरी में हुआ।

उलेमा का कहना है कि यह फज़ीलत सिर्फ आपके लिए है एक ही नबी की दो बेटियाँ आपकी ज़ौजियत में आई और इसी वजह से आपका नाम जुन्नूरैन पड़ गया। आप साबेक़ीन अव्वलीन और अव्वलुल मुहाजिरीन से हैं और अशरए मोबश्शिरा में से और इन सहाबा में से एक हैं जिन्होंने कुरआन अज़ीम की तदवीन कराई।

आपकी फज़ीलत अहादीस की रौशनी में

हज़रात शेख़ैन ने हजरत आयशा से रेवायत की रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलेहे वसल्लम ने अपने कपड़े को यकजा कर लिए जिस वक्त हज़रत उस्मान दाख़िल हुए और कहा क्यों ना ऐसे शख़्स से हया फ़रमाऊँ जिससे फ़रिश्ते हया करते हैं।

तिरमिज़ी ने अब्दुर्रहमान इब्न ख़ुबाब से तख़रीज की। कहा मैं नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ हाज़िर था। आप लोगों को जैसुल उसरा पर बर अंगेख़्ता फ़रमा रहे थे तो हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान खड़े हुए और अर्ज़ की। या रसूलल्लाह मैं फी सबीलिल्लाह सौ ऊँट मय साज़ व सामान पेश कर रहा हूँ। फिर रसूलल्लाह ने तरग़ीब फ़रमाई तो उस्मान बोले दो सौ ऊँट साज़ व सामान के साथ हाज़िर हैं। फिर रसूलल्लाह ने तरग़ीब फ़रमाई तो उस्मान ने अर्ज़ की। तीन सौ ऊँट साज़ व सामान के साथ फी सबीलिल्लाह हाज़िर हैं। تنزل رسول الله صلی الله علیه وسلم وهو یقول ما علی عثمان ما عمل بعد هذه यानी अब उस्मान कुछ भी न करें उनका कोई नुकसान नहीं होगा।

हाकिम और तिर्मिज़ी ने तख़रीज की है عن عائشه ان النبی صلی الله علیه وسلم قال یا عثمان انه لعل الله یقمص قمیصا فان ارادك المنافقون علی خلعه فلاتخلعه حتی تنفانی-

यानी नबी सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया। ऐ उस्मान अनक़रीब अल्लाह तआला तुमको एक कमीस पहनायेगा तो मुनाफिक़ीन तुमसे उसको उतरवाना चाहेंगे, तो तुम उसको न उतारना यहाँ तक कि मुझसे तुम मुलाक़ात करोगे।

तिबरानी ने अस्मा बिन मालिक से रवायत की कि जब हुज़ूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की साहबज़ादी जो आपकी ज़ौजियत में थीं का इन्फ़िाल हुआ तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फरमाया।

Scanned by CamScanner

زوجـوا عثـمـان لو كان لى ثالثة لزوجته وما زوجة الا بالوحى من الله۔

ऐ लोगो उस्मान से शादी कर दो क्योंकि अगर मेरे पास तीसरी लड़की होती तो ज़रूर उनसे निकाह कर देता और यह हुक्मे खुदा है।

और इब्ने असाकर ने हज़रत अली से तख़रीज. की

عـن عـلـى سـمـعـت الـنـبـى صلى الله عليه وسلم يقول لـعـثـمـان لوان اربعين ابنة زوجتك واحدة بعد واحدة حتى لا يبقى من هن واحدة۔

यानी अगर मेरे चालीस बच्चियाँ होतीं तो मैं यके बाद दीगर तुम्हारी ज़ौजियत में देता रहता यहाँ तक कि एक भी इनमें से न बाकी रहतीं।

और इब्ने असाकर ने ज़ैद इब्न साबित से तख़रीज की।

قـال سـمـعـت رسـول الـلـه صلى الله عليه وسلم يقول مـربـى عثمان وعندى ملك من الملائكة فقال شهيدٌ يقتلهٗ قومهٗ ان نستحى منه۔

यानी उस्मान का गुज़र मेरे पास हुआ और एक फरिश्ता जो मेरे पास बैठा हुआ था बोला कि यह शहीद हैं उन्हें कौम क़त्ल कर देगी। हम इनसे हया करते हैं।

हज़रत उस्मान का दौरे खे़लाफ़त

सैयदना फ़रूक़ आज़म ने वेसाल से कब्ल छ. मुक्तदिर हज़रात की मजलिसे मशाविरत क़ायम कर दी थी और अरकाने मजलिस को ताकीदी वसीयत फरमाई थी कि मेरे वफ़ात के तीन रोज़ के अन्दर मजलिस के अराकीन इन छः मोअज़्ज़ीन में से जिसको मुनासिब समझें मुसलमानों के लिए ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लें। इन छः आदमियों के अस्माये गेरामी यह हैं। हज़रत उस्मान ग़नी, हज़रत अली, हज़रत अंब्दुर्रहमान बिन औफ़, हज़रत तलहा, हज़रत जुबैर बिन अलअवाम, हज़रत सअ़द बिन अबी वक़ास।

हज़रत फ़रूक़ आज़म की तजहीज़ व तदफ़ीन से फ़रागत के बाद मजलिसे शूरा के तमाम अराकीन सिवाए हज़रत तलहा के

जो मदीना तैयबा से बाहर थे हज़रत सिद्दीका तैयबा ताहेरा सैयदतेना आयशा के मकान में मुजतमेअ़ हुए और जदीद इन्तेख़ाब पर ग़ौर व ख़ौज़ हुआ।

इस मौके पर हज़रत अब्दुर्रहमान इब्न औफ ने फरमाया कि हम को ख़लीफ़ा के इन्तेखाब के लिए कोई मुनासिब तरीका अख़्तियार करना होगा। मेरी राय में इन्तेखाब के सिलसिले का बेहतर तरीका यह होगा कि हज़रत उमर ने इन्तेख़ाब के लिए जिन छः हज़रात के नाम पेश किये थे उनमें जो हज़रात हके ख़ेलाफत से दस्त बरदार हो जायं उन्हीं को नया ख़लीफ़ा के इन्तेख़ाब का हक दे दिया जाय, और जिसको अफ़ज़ल व बेहतर जानें उसको ख़लीफ़ा मुन्तख़ब करें।

थोड़ी देर तक तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने अपनी इस तजवीज़ के जवाब का इन्तेज़ार किया लेकिन जब किसी ने जवाब न दिया तो हज़रत अब्दुर्रहमान ने खुद ही एलान फरमाया कि मैं ख़ेलाफ़त के हक से दस्त बरदार होता हूँ और चूँकि कोई दूसरा इस हक से दस्त बरदार होने के लिए तैयार नहीं है इस लिए मेरे लिए इसके सिवा कोई चारा नहीं कि जदीद ख़लीफा के इन्तेख़ाब की ज़िम्मेदारी अपने सर ले लूँ। मौलाए कायनात हज़रत अली के सिवा तमाम अराकीन ने इस तजवीज़ की ताईद की और उन्हें ख़लीफा के इन्तेखाब का हक दे दिया। हज़रत अली इब्तेदा में तो ख़ामोश रहे लेकिन बाद में जब खास तौर पर उनकी राय तलब की गयी तो उन्होंने फरमाया कि मुझे अब्दुर्रहमान बिन औफ की राय से पूरा इत्तेफ़ाक है बशर्ते कि वह इस बात का इक़रार करें कि जो भी फैसला करेंगे ईमान व दयानत और गैर जानिबदारी पर मामूल होगा। हज़रत अब्दुर्रहमान ने इकरार किया कि वह जदीद ख़लीफ़ा के इन्तेख़ाब में पूरी ईमानदारी और गैर जानिबदारी से काम लेंगे फिर आपने तमाम उम्मीदवाराने ख़ेलाफ़त से कहा कि अब आप सब भी इकरार करें कि जिसको ख़लीफ़ा मोकर्रर करूँगा आप सब उस इन्तेख़ाब को तस्लीम कर लेंगे। हज़रत उस्मान, हज़रत अली और तमाम अराकीन ने इक़रार कर लिया कि वह आपके मुन्तखब खलीफ़ा को बे चूँ व चेरा तस्लीम

Scanned by CamScanner

कर लेंगे और इस कार्यवाई के बाद यह मजलिस मुन्तशिर हो गयी।

मंजलिसे शूरा ने इन्तेखाब का हक हासिल करने के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान तकरीबन तमाम अरबाब हल व अक़्द से राय हासिल करते रहे और बराबर साहिबे फ़हम हज़रात से इस ममाले में मशवरे करते रहे। हज़रत अब्दुर्रहमान को इस काम में आगे चल कर सहूलत इस लिए भी पैदा हो गयी क्योंकि दो दिन के अन्दर हज़रत उस्मान और हजरत अली के अलावा मजलिसे शूरा के बाकी तमाम अराकीन हके खेलाफत से दस्त बरदार हो गये क्यों कि उन्हें मालूम हो गया था कि अकसरियत हज़रत उस्मान व अली के हक में है और ऐसी हालम किसी दूसरे के लिए इन्तेखाब में कामयाब होना तकरीबन ना मुमकिन है।

अब मैदान में चूँकि सिर्फ दो उम्मीदवार ही थे इसलिए दोबारा हज़रत अब्दुर्रहमान ने साहिबे फ़हम हज़रात से मशविरा करनी शुरू कीं। तमाम मोक्तदिर हज़रात से तबादलये खयाल के बाद यह अन्दाजा हुआ कि हजरत उस्मान ग़नी की तरफ लोगों का रूझाने तबअ ज़्यादा है लेहाजा काफी गौर व ख़ौज़ के बाद उन्होंने यह तय किया कि हजरते उस्मान गनी के इन्तेखाब का मजमए आम में एलान कर दिया जाय।

हज़रत उमर की वसीयत के मुताबिक चूँकि तीसरे दिन खलीफा के इनतेखाब का एलान होना ज़रूरी था। इस लिए सुबह की नमाज़ के बाद ही से मस्जिदे नबवी में मुसलमान जमा होने शुरू हो गये और मस्जिद में तिल रखने की जगह बाकी न रही। यहाँ तक कि खरिजे मस्जिद भी हज़ारों की तादाद में मुसलमान मौजूद थे और एलान का बड़ी बेताबी से इन्तेज़ार कर रहे थे। मस्जिदे नबवी में हज़रते तलहा के अलावा जो बाहर गये हुए थे सब ही अराकीन मजलिस मौजूद थे। हज़रत अब्दुर्रहमान ने अरकाने मजलिस और मजमए आम के सामने खलीफा के इन्तेख़ाब के सिलसिला में एक मुख्तसर सी तकरीर करते हुए कहा कि मैं ने खलीफा का इन्तेखाब अपनी ज़ाती राये से नहीं किया है बल्कि जहाँ तक मेरी ताकत में था मैंने हर तबक़ा हर गिरोह और हर

क़बीला से राय मालूम कर ली है मैं समझता हूँ कि मैं ने अपने फर्ज़ की अन्जाम दही में पूरी ज़िम्मादारी से काम लिया है आप हज़रात को मालूम है कि तमाम अराकीन मजलिस शूरा ने जिन्हें फारूक आज़म ने ख़लीफ़ा के लिए नामज़द किया था उन्होंने बरज़ा व रग़बत मेरे फैसला को नातिक़ तस्लीम कर लिया है इस लिए अब किसी को भी एतराज़ की गुन्जाइश बाकी नहीं है। मुझे उम्मीद कवी है कि इस ओहदा के लिए जो भी नाम पेश करूँगा उसे पसन्द किया जायेगा और मुझे मुस्लिम अवाम की पूरी ताईद हासिल होगी।

इस मुख़्तसर तकरीर के बाद हज़रत अब्दुर्रहमान ने हज़रत उस्मान ग़नी के ख़लीफ़ा मुन्तख़ब किये जाने का एलान कर दिया। आप ने मजमए आम में हज़रत उस्मान को अपने पास बुलाया और कहा कि सुन्नत रसूल और खुदा व रसूल के एहकाम और सुन्नते शेखैन पर चलने का इकरार करो। हज़रत उस्मान ने बावाज़े बुलन्द इकरार किया कि मैं खुदा व रसूल के हुक्म के मुताबिक अमल करूँगा और सिद्दीक व फ़ारूक़ के नक़्शे कदम पर चलने की पूरी कोशिश करूँगा।

उस्मान गनी के इस इकरार के बाद हज़रत उस्मान ग़नी के हाथ पर सब से पहले हज़रत अब्दुर्रहमान ने बैअत की। उसके बाद दूसरे लोग बैअत करने पर टूट पड़े। अभी हज़रत अली ने बैअत न किया था लेकिन जब हजरत अली ने देखा कि एक जमात सिर्फ इस लिए पस व पेश कर रही है कि मैंने बैअत नहीं की है तो आपको ख़ानाए जंगी का ख़तरा महसूस हुआ तो आप फ़ौरन ही बड़ी तेज़ी के साथ पलटे और सफों को चीरते हुए हज़रते उस्मान ग़नी के हाथ पर बैअत कर ली। आपका बैअत करना था कि मस्जिदे नबवी अल्लाहो अकबर के नारों से गूँज उठी।

फुतूहाते इस्लामिया

हज़रत उमर रज़िअल्लाहो अन्हो की वफ़ात के बाद रोमियों के हौसले नेहायत बुलन्द हो गये थे और वह यह समझने

Scanned by CamScanner

लगे थे कि मुसलमानों से शदीद इन्तेक़ाम लेने का वक्त आ गया है। इस ज़माना में हरकुल के बाद उसका बेटा कुस्तुनतीन रोम पर हुकूमत कर रहा था। उसका कामिल यकीन था कि वह आसानी से मुल्क मिस्र को मुसलमानों के कब्ज़े से निकाल लेगा। चुनान्चे उसने बज़रियए जहाज़ एक लश्करे अज़ीम को इस्कन्दरिया के लिए रवाना कर दी। जब यह फौज इसकन्दरिया के साहिल पर उतरी तो मुसलमानों के हलीफ़ मक़ूक़स साबिक़ हाकिमे मिस्र और इस्लामी लश्कर ने मुत्तहिद होकर ऐसी मज़बूती के साथ रोमी ईसाइयों का मुकाबला किया कि इनके पाँव उखड़ गये और रोमियों को महसूस हो गया कि उमर बिन आस जैसे लायक गवर्नर की मौजूदगी में मिस्र का मुसलामनों से वापस लेना नामुमकिन है और वह बेहद नुकसान उठाने के बाद 25 हिजरी में नाकाम व नामुराद वापस चले गये।

ईरान के बाग़ियों की सरकूबी

ईरान में भी आतिश परस्तों के हौसले बढ़े हुए थे। इसी लिए हमदान, रै, और चन्द दूसरे मक़ामात पर ईरानी इलाक़ों में मुसलमानों के ख़िलाफ़ मुनज़्ज़म बग़ावतें शुरू कर दी थीं। जब इन बग़ावतों का इल्म हज़रत उस्मान को हुआ तो आपने हज़रत अबू मूसा अशअरी औरं चन्द दूसरे सरदारों को इन बाग़ियों की सरकूबी के लिए भेज दिया जिन्होंने जल्द ही इन बग़ावतों को दबा दिया और खुरासान और फिरोजाबाद और शीराज़ और तूस और नीशापुर और हेरात और बल्ख़ वग़ैरह फ़तेह हो गये।

आज़रबाएजान में बग़ावत

हज़रत फ़ारूक आज़म के इन्तेक़ाल के वक्त सैयदना मुग़ीरा बिन शोअ़बा कूफ़ा के गवर्नर थे। हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो जब मस्नदे खेलाफ़त पर बैठे तो आपने सअ़द बिन अबी वक़ास को जिन्हें हज़रत उमर ने माज़ूल कर दिया था दोबारा कूफ़ा का गवर्नर मोक़र्रर कर दिया और मुग़ीरा माज़ूल कर दिये गये। लेकिन अभी चन्द ही माह गुज़रे थे कि हज़रत उस्मान

ने सअ़द बिन अबी वक़ास और उनके मातहत अफ़सर उत्बा को भी माज़ूल कर दिया और हज़रत वलीद इब्न मुग़ीरा को जो हज़रत उस्मान के रज़ाई भाई भी थे कूफ़ा और आज़रबाईजान का गवर्नर मोकर्रर कर दिया। इन तब्दीलियों का नतीजा यह हुआ कि 26 हिजरी में आज़रबाइजान में सख़्त बग़ावत फैल गयी जिसको वलीद बिन मग़ीरा ने बड़ी मुश्किल से दबाया।(ख़ुरासान, फिरोज़ाबाद, शीराज़, तूस, नीशापुर, हेरात और बल्ख वग़ैरह फ़तह हो गये।)

अफ़्रीका पर यूरिश

अब्दुल्ला इब्न सअद अफ़्रीका के सरहदी इलाक़ों की जानिब मोतवज्जा हुए। उन्होंने दस हज़ार का लश्कर लेकर 26 हिजरी में इलाक़ा बरक़ा के सरदारों पर हमला कर दिया और इन सरदारों ने फौरन एताअ़त कर ली। उमर इब्न आस के ज़माना में भी यह मग़लूब हो चुके थे और बराबर जुज़िया अदा करते थे लेकिन जब बाद में हुकूमते इस्लामिया की गिरफ़्त ढीली पड़ गयी तो यह मौक़ा से फ़ायदा उठाते हुए ख़ुद मुख़्तार बन गये। अब फिर उनपर दोबारा हमला किया गया तो उन्होंने फिर एताअ़त कुबूल कर के जुज़िया देना शुरू कर दिया।

हज़रत उस्मान ग़नी ने यह समझते हुए कि मिस्र में फौज इस वक्त मौजूद है वह अफ़्रीका जैसे वसीअ़ मुल्क के लिए नाकाफी है एक बहुत बड़ी फौज अब्दुल्लाह इब्न सअद के लिए मदीना से रवाना कर दी। इस फौज में हज़रत इमाम हसन इब्न अली, हज़रत इमाम हुसैन, हज़रत अब्दुल्लाह इब्न उमर, हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास, हज़रत अब्दुल्लाह इब्न जुबैर और हज़रत अब्दुल्लाह इब्न जअ़फ़र तैयार जैसे मुक्तदिर हज़रात भी शामिल थे इनके अलावा हज़रत उमर बिन आस साबिक़ गवर्नर मिस्र को भी इस फौज के साथ शामिल कर दिया गया था ताकि अब्दुल्लाह इब्न सअ़द को उनके साबेक़ा तजुर्बात से पूरी मदद मिल सके।

इस फौज के पहुँचने के बाद हज़रत अब्दुल्लाह इब्न

Scanned by CamScanner

सअ़द ने तराबलस पर हमला कर दिया अगरचे नौ मुस्लिम बूक़ना की कोशिशों से हज़रत उमर के अहदे खेलाफ़त में पहले ही ज़ेर हो चुका था लेकिन बाद में वह खुद मुख़्तार बन गया था। अब इस्लामी लश्कर ने जब दोबारा तराबलस पर हमला किया तो वहाँ का हाकिम मुकाबला की ताब न ला सका और उसने 26 हिजरी में एताअ़त कुबूल कर ली।

तराबलस की फतह के बाद हज़रत उमर बिन आस और दूसरे सरदाराने लश्कर तो मदीना वापस आ गये मगर लश्करे इस्लामिया अफ़्रीका के मज़ीद इलाकों की फतह के लिए आगे रवाना हो गया।

खूँरेज़ जंग के बाद अफ़्रीका की फ़तह

इस वक्त अफ़्रीका पर ईसाई बादशाह जरजीस की हुकूमत थी। यह कैसरे रोम का बाजगुज़ार था। जब उसको मालूम हुआ कि इस्लामी लश्कर अफ़्रीका के फ़तह के लिए आ रहा है तो वह एक लाख बीस हज़ार का लश्करे जर्रार लेकर मुसलमानों के मुकाबले पर आ गया और दोनों लश्करों में घमसान की लड़ाई छिड़ गयी। हज़रत उस्मान ग़नी बड़ी बेचैनी के साथ अफ़्रीका की फ़तेह के मुन्तज़िर थे। जब उनको अफ़्रीका से कोई ख़बर न मिली तो उन्होंने हज़रते ज़ुबैर बिन अलअवाम की सरकर्दगी में एक ताज़ादम फौज अफ़्रीका के लिए और रवाना कर दी। हज़रत ज़ुबैर ने अफ़्रीका पहुँच कर देखा कि इस्लामी लश्कर बड़ी बेदिली से लड़ रहा है और फौज के सिपेहसालार अब्दुल्लाह बिन सअ़द लश्कर से ग़ायब हैं आपने इसका सबब पूछा तो बताया गया कि शाह अफ़्रीका ने यह एलान कर दिया है कि जो शख़्स अब्दुल्लाह बिन सअ़द का सर काट कर लायेगा उससे बादशाह की लड़की की शादी कर दी जायेगी और एक लाख दीनार ईनाम में दे दिये जायेंगे। इस एलान के बाद अब्दुल्लाह बिन सअ़द ने मैदान आना बन्द कर दिया है और खेमा में ही हैं।

हज़रत ज़ुबैर ने जब देखा कि अफ़्रीका की जंग तवालत पकड़ती जा रही है तो आपने यह जंगी चाल चली कि आधी फौज

को तो अपने कमान में लेकर रोक लिया और आधी फौज को अब्दुल्लाह इब्न सअ़द की सरकर्दगी में लड़ने के लिए भेज दिया। यह फौज तमाम दिन लड़ती रही, जब दोपहर हो गयी और दोनों फ़रीक़ की फौजें थक कर अपने अपने खेमों में वापस चली गयीं तो हज़रत ज़ुबैर ने इस ताज़ा दम फौज को लेकर जो उन्होंने रोक ली थी अफ़्रीका की थकी हुयी फौज पर टूट पड़े। अफ़्रीकी फौज जो थकान से फौरन ही चूर थी मुसलमानों की ताज़ा दम फौज के अचानक हमला से घबरा गयी। मुख़्तसर यह कि अफ़्रीकी फौज में अबतरी फैल गयी और अफ़्रीकियों शिकश्त फाश हुई। मुसलमानों के हाथों उनके बेशुमार सिपाही मारे गये। अफ़्रीका का बादशाह जरजीस हज़रत ज़ुबैर बिन अलअवाम के हाथों कत्ल हुआ और शाह अफ़्रीका की खूबसूरत बेटी जो बाप के दोश बदोश लड़ रही थी गिरफ़्तार हो गयी और इस तरह हज़रत ज़ुबैर की इस जंगी तदबीर की बदौलत 26 हिजरी में अफ़्रीका फतह हो गया।

इस मारका से फराग़त के बाद इस्लामी लश्कर ने अफ़्रीका के बाज़ दूसरे इलाकों को फतह किया और हज़रत ज़ुबैर बिन अलअवाम अफ़्रीका की तस्ख़ीर के बाद मदीना वापस चले गये और अब्दुल्लाह इब्न सअ़द ने यह सोचते हुए कि इस्लामी फौज कम रह गयी है दस लाख दीनार पर अफ़्रीकियों से 27 हिजरी में सुलह कर ली और मिस्र वापस चले गये और अफ़्रीका पर मुसलमानों का कामिल तसल्लुत न हो सका।

कब्रस और रोड्स की फ़तह

कैसरे रोम कुस्तुनतीन ने 28 हिजरी में एक बहरी फौज साहिले अफ़्रीका पर उतार दी और अफ़्रीकियों से इस खेराज का मोतालबा किया जो रोमी सल्तनत अफ़्रीका से मुसलमानों के हमला से कब्ल वसूल किया करती थी। अफ़्रीकियों ने कहा कि जब मुसलमानों ने हम पर हमला किया तो कैसरे रोम ने हमारी ख़बर नहीं ली। ऐसी हालत में वह किसी खेराज का हकदार नहीं है। इस इन्कार के बाद रोमी और अफ़्रीकी फौजों में जंग छिड़

Scanned by CamScanner

गयी। और अफ्रीकियों को शिकस्त हो गयी यानी मुसलमानों के बाज गुज़ार मुल्क पर कैसरे रोम का दोबारा कब्ज़ा हो गया।

अफ्रीका की फतह के बाद रोमी अफवाज इस्कन्दरिया की तरफ बढ़ी। इधर कैसरे रोम कुस्तुनतीन भी छः सौ कश्तियों में ताज़ा दम लश्कर लेकर इस्कन्दरिया आ पहुँचा और इस्लामी लश्कर के साथ उसकी जंग छिड़ गयी लेकिन जब रोमियों को शिकश्त हुई तो कुस्तुनतीन अपनी फौज लेकर कश्तियों के ज़रिए फ़रार हो गया ओर जज़ीरए कब्रस पर जा उतरा।

कब्रस रोमी फौजों का हेडक्वार्टर था लेकिन रोमियों की बदकिस्मती कि एक तरफ तो मिस्र का इस्लामी मिस्र लश्कर कश्तियों में सवार होकर उसका तअक़ुब करता हुआ क़ब्रस जा उतरा और दूसरी जानिब सैयदना अमीर मआविया हाकिमे शाम का भेजा हुआ बहरी लश्कर कश्तियों के ज़रिए कब्रस आ पहुँचा।

शाम व मिस्र के इस्लामी लश्करों की कैसरे रोम की बहरी फौज के साथ कब्रस के लिए खूँरेज़ मारका शुरू हो गया। अमीर मआविया उस वक्त पूरे शाम के गवर्नर थे चूँकि हज़रत उस्मान ने हम्स व फिलिस्तीन के इलाके भी उन्हीं की हुकूमत में शामिल कर दिये थे इस तरह वह 27 हिजरी में पूरे मुल्क शाम के गवर्नर हो गये थे।

शाम के इस बहरी लश्कर ने जब मिस्र के बहरी के साथ मिलकर जज़ीरए कब्रस पर हमला किया तो कैसरे रोम इस हमले की ताब न ला सका और जान बचाकर कब्रस से कुस्तुनतुनिया भाग गया और मुसलमानों ने जज़ीरए कब्रस पर कब्ज़ा जमा लिया। यह पहली बहरी फतह थी जो मुसलमानों को जज़ीरए कब्रस पर हासिल हुई। कब्रस की फतह के बाद खुद अमीर मआविया भी इस जज़ीरा में आ पहुँचे। उनके आने के बाद दूसरा बहरी हमला जज़ीरा रोड्स पर किया गया। यह जज़ीरा कब्रस के मगरिब में था। रोड्स वालों ने खूब जमकर इस्लामी लश्कर से मुकाबला लिया लेकिन कई खूँरेज़ जंगों के बाद मुसलमानों ने रोड्स भी फतह कर ली। इस तरह 28 हिजरी में इस्लामी फौजें इन दो अहम जज़ीरों पर कब्ज़ा जमाने के बाद कुस्तुनतुनिया के

दरवाज़े पर जा पहुँची।

चूँकि इन दोनों जज़ीरों की फतह पहली बहरी फतह थी इस लिए इसकी वजह से हज़रत अमीर मआविया की शोहरत बहुत ज़्यादा बढ़ गयी थी।

तदवीने कुरआन

कुरआन पाक लौहे महफ़ूज़ में लिखा हुआ था। इरशादे रब्बानी है "कुरआनुन मजीदुन फी लौहिम महफ़ूज़" फिर वहाँ से पहले आसमान पर लाया गया। फिर वहाँ से 23 साल में आहिस्ता आहिस्ता हुज़ूर अलैहिस्सलाम पर नाज़िल होता रहा। मगर यह नाज़िल होना इस लिखे हुए की तरतीब के मवाफ़िक न था क्योंकि यह नज़ूल बन्दों की ज़रूरत के मुताबिक होता था। जिस आयत की ज़रूरत हुई वही आ गयी। मसलन अगर अव्वल ही से शराब के हराम होने की आयतें उतर आतीं तो यक़ीनन अरब के नये मुसलमानों को दुशवारी वाकेअ़ होती क्योंकि वहाँ आम तौर पर शराब पी जाती थी। इस तरह सारे एहकाम को समझ लीजिए लेकिन चूँकि हुज़ूर अलैहिस्सलाम की निगाहे पाक लौहे महफ़ूज़ वगैरह पर थी इस लिए आप हर आयत के नज़ूल के वक्त उसको तरतीब से जमा करा देते थे कि यह आयत फलाँ सूरत में फलाँ आयत के बाद रखो और यह तरतीब लौहे महफ़ूज़ की तरतीब के मवाफ़िक़ थी और तरीका उस वक्त यह था कि हज़रत ज़ैद इब्न साबित व दीगर बाज़ सहाबा रज़िअल्लाहो तआला अन्हुम इस ख़िदमत को अन्जाम देने के लिए मोकर्रर थे। जिस वक्त जो आयत नाज़िल होती थी हुज़ूर अलैहिस्सलाम के हुक्म के मुताबिक़ ऊँट की हड्डियों पर खजूर के पुटठों पर और मुख्तलिफ़ कागज़ों पर लिख लेते थे और यह चीजें मुतफर्रिक तरीका पर लोगों के पास रहीं लेकिन इन हज़रात को ज़्यादा एतमाद हिफ़्ज़ पर था यानी आम सहाबा कराम रज़िअल्लाहो तआला अन्हुम पूरे कुरआन के हाफ़िज़ थे। तो इस तरह कुरआन पाक की तरतीब खुद हुज़ूर अलैहिस्सलाम ने दी थी लेकिन एक जगह किताबी शक्ल में जमा न फरमाया था। इसकी तीन वजह थीं एक तो

Scanned by CamScanner

सदहा हुफ़्फ़ाज़ इसको इसी तरतीब से याद कर चुके थे जो आज तक चली आ रही है और नमाज़ में पढ़ना फर्ज़ था और नमाज़ के अलावा भी सहाबा कराम बरकत के लिए इसको अकसर औक़ात पढ़ते ही रहते थे इस लिए इसके ज़ाया होने का कुछ अन्देशा न था।

दूसरे यह कि जेहाद और दीगर ज़रूरियात दीनिया की वजह से इतना मौका न मिल सका कि इसको एक जगह जमा किया जाता और तीसरे यह कि जब तक पूरा कुरआन न उतर आता इसको जमा करना गैर मुमकिन था क्योंकि हर सूरत की कुछ आयात उतर चुकी थीं कुछ उतरने वाली होती थीं। हुजूर की वफ़ात से कुछ रोज़ कब्ल नुजूल कुरआन की तकमील हुई। गरज़ यह कि हुजूर अलैहिस्सलाम की ज़िन्दगी पाक में कुरआन करीम किताबी शक्ल में एक जगह जमा न हो सका अलबत्ता मुरत्तिब हो गया। अल्लाह तआला की शान कि हज़रत सिद्दीक अकबर रज़िअल्लाहो अन्हो के ज़माने में भी यानी हुजूर अलैहिस्सलाम की वफ़ात ही के साल मुल्के यमामा के झूठे मुद्दई नबूवते मुस्लिमा कज़्ज़ाब और उसके साथियों से सहाबा कराम को सख़्त जंग करनी पड़ी और इस जंग में तकरीबन सात सौ हाफ़िज़े कुरआन भी शहीद हो गये तब हज़रत उमर बारगाहे सिद्दीक़ में हाज़िर हुए और अर्ज़ किया कि अगर इसी तरह हाफ़िज़े कुरआन शहीद होते रहे तो बहुत जल्द कुरआन पाक ज़ाया हो जायेगा।

हज़रत सिद्दीक अकबर रज़िअल्लाहो अन्हो ने उन सहाबा कराम को जमा फरमाया जिन्होंने हुजूर सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम क ज़माने पाक में वही लिखने की ख़िदमत अन्जाम दी थी और उसका मोहतमिम हज़रत ज़ैद बिन साबित रज़िअल्लाहो अन्हो को क़रार दिया कि तुम तमाम जगह से कुरआन पाक की आयतें जमा कर के किताबी शक्ल में तैयार करो। ज़ैद इब्न साबित कहते थे कि आप वह काम क्यों करते हैं जो हुजूर अलैहिस्सलाम ने न किया। हज़रत सिद्दीक अकबर ने फरमाया यह काम अच्छा है। हज़रत ज़ैद इब्न साबित ने नेहायत मेहनत व जाँफिशानी से उन तमाम आयतों को यकजा जमा किया जो लोगों

के सीनों और खजूर के पुटठों और हड्डियों में लिखी हुयी थीं। और तरतीब वही रही जो हुजूर अलैहिस्सलाम ने फरमाई थी। यह नुस्ख़ा कुरआन पाक सिद्दीक अकबर रज़िअल्लाहो अन्हो की हयात तक हज़रत सिद्दीक ही के पास रहा फिर हज़रत फारूक आज़म के पास रहा फिर उनके बाद हज़रत फ़ारूक आज़म की बेटी और उम्मुल मोमिनीन ज़ौजए रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम हज़रत हफ़्सा रज़िअल्लाहो अन्हा के पास महफ़ूज़ रहा। दौरे ख़ेलाफ़त हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो में हज़रते हज़ैफ़ा इब्नुलयमान रज़िअल्लाहो अन्हो जो कि आरमीनिया और आज़र बाइजान के कुफ़्फ़ार से जंग फरमा रहे थे वहाँ की मुहिम से फ़ारिग हो कर हाज़िर बारगाह हुए और अर्ज़ किया। ऐ अमीरूल मोमिनीन ! लोगों में कुरआन पाक के मोतअल्लिक इख़्तेलाफ़ शुरू हो गये हैं अगर यह इख़्तेलाफ़ बढ़ते रहे तो मुसलमानों का हाल यहूद व नसारा की तरह हो जायेगा, लेहाज़ा इसका जल्द कोई इन्तेज़ाम कीजिए। वजह इख़्तेलाफ़ यह थी कि बाज़ सहाबा कराम के नुस्ख़ों में हुजूर अलैहिस्सलाम के वह अल्फ़ाज़ भी लिखे थे जो आपने बतौर तफ़्सीर इरशाद फरमाये थे वह हज़रात उसको कुरआन का ही जुज़ समझते थे हालाँकि वह अल्फ़ाज़ कुरआन न थे। जैसे कि मुसहफ़ इब्न मसऊद वगैरह नीज़ एक नुस्ख़ा तमाम मुल्क के लोगों के लिए अब काफ़ी न था। नीज़ हाफ़िज़ सहाबा कराम को जो लुकमा कुरआन मजीद में लगता था उसको निकालने में बहुत दुशवारी होती थी। इन वजूह की बिना पर हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो ने फिर हज़रत ज़ैद इब्न साबित रज़िअल्लाहो अन्हो को हुक्म दिया और उनकी मदद के लिए अब्दुल्लाह इब्न जुबैर और सईद इब्न आस और अब्दुल्लाह इब्न हारिस इब्न हेशाम वग़ैरह को मोकर्रर फरमाया।

इन हज़रात ने हज़रत हफ़्सा के पास से पहले जमा किये हुए कुरआन को मंगाया और फिर उनका मुकाबला हुफ़्फ़ाज़ के हिफ़्ज़ कुरआन से नेहायत तहकीक से कर के छः या सात नुस्ख़े नकल किये और यह नुस्खे ईराक़, शाम, मिस्र वग़ैरह इस्लामी मुमालिक में भेज दिये और असल नुस्ख़ा हज़रत हफ़्सा

रज़िअल्लाहो अन्हा को वापस फ़रमाया और जिन सहाबा के पास तफ़्सीर से मिले हुए नुस्खे़ मौजूद थे उनको मंगा कर जलवा दिया गया क्योंकि इन नुस्ख़ों का बाक़ी रहना आइन्दा फ़ित्नों का दरवाज़ा खोल देता कि आइन्दा लोग इसको कुरआन पाक ही समझने लगते।

सैयदना उस्मान को जामेउल कुरआन इसी मानी करके कहा जाता है कि जामेउल उम्मते अला कुरआनिन वाहिदिन बेहरफ़िन वाहिदिन, यानी पूरी उम्मत को एक ही लोग़त पर कुरआन पढ़ने पर इकट्ठा किया।

शोरिश का आग़ाज़

जब तमाम इलाक़ों के अमीर मदीना में मशविरा के लिए आये हुए थे फ़ित्ना के सरग़नों ने तमाम इलाक़ों में एकदम बग़ावत करने का फ़ैसला किया। लेकिन सिवाय कूफ़ा के वह कहीं अपने इरादों में कामयाब न हो सके। अहले कूफ़ा यह बहाना बना कर कि वह मदीना अपने आमिल सईद बिन आस को तब्दील कराने की नियत से जा रहे हैं। मदीना वाले रवाना हो गये। जरआ के मक़ाम पर जो मदीना और कूफ़ा के दरम्यान वाक़े है उनकी मुठभेड़ सईद से हुई और सईद को मदीना वापस होना पड़ा। अहले कूफ़ा ने सईद की जगह अबू मूसा अशअरी को आमिल बनाने का मोतालबा किया जिसको हज़रत उस्मान ने मन्जूर कर लिया।

जब तमाम उमरा अपने अपने इलाक़ों में पहुँच गये तो फ़ित्ना परदाज़ों के बग़ावत बरपा करने का कोई इमकान न रहा। उन्होंने मुख़्तलिफ़ शहरों में अपने हम ख़्याल लोगों से इस सिलसिले में खत व किताबत शुरू की और फ़ैसला किया गया कि तमाम इलाक़ों से कुछ लोग एक वफ़्द की शक्ल में मदीना पहुँचें और वहाँ अपने आइन्दा तरीक़ कार के मोतअल्लिक़ सलाह व मशविरा करें। लोगों पर यह ज़ाहिर किया जाये कि वह इस्लाम की फ़लाह व बहबूद के लिए मदीना जा रहे हैं। मदीना पहुँच कर वह हज़रत उस्मान से चन्द सवाल करें। ओम्माल और उमरा की

बेराह रवी और जुल्म व सितम की उनसे शिकायत की जाय। फिर इन बातों को बिलादे इस्लामिया में फैला दिया जाय कि हज़रत उस्मान और ओम्माल के खिलाफ़ जो इल्ज़ाम लगाये जाते हैं वह सब दुरूस्त हैं। चुनान्चा तीन शहरों कूफ़ा, बसरा, और मिस्र से तीन वफ़्द इस ग़रज़ के लिए मदीना की तरफ चले। जब वह मदीना पहुँचे तो उनके आमद का इल्म होने पर हज़रत उस्मान ने दो आदमियों को भेजा कि उनकी गर्ज़ व ग़ायत का पता लगाया जाय। फ़ित्ना के सरग़नों ने उनको देख कर यह ख़्याल किया कि यह भी उन्हीं में से हैं चुनान्चा उन्होंने जो कुछ उनके दिल में था बिला कम व कास्त उनपर ज़ाहिर कर दिया कि ख़लीफ़ा से इन उमूर के सिलसिले में बात चीत करने मदीना जा रहे हैं। जिनको वह पहले ही मुख़्तलिफ़ शहरों और इलाक़ों में फ़ैला चुके हैं। इसके बाद वह अपने इलाक़ों में वापस जाकर लोगों को यह बतायेंगे कि हमने ख़लीफ़ा से इन उमूर में बात चीत की। ख़लीफ़ा ने इन्कार तो नहीं किया लेकिन इनसे तौबा भी नहीं की। इसके बाद हम अगले साल हज के महीना में बतादाद कसीर मक्का में जमा होंगे और यह ज़ाहिर करेंगे कि हम हज के लिए आये हैं। मक्का पहुँच कर हम हज़रत उस्मान का मोहासरा करेंगे। उन पर तर्के खेलाफ़त के लिए ज़ोर देंगे और अगर उन्होंने इन्कार किया तो उनको कत्ल कर देंगे। इन दोनों आदमियों ने वापिस जाकर हज़रत उस्मान के पास सारी बातें दुहरायीं।

फिर आपने तमाम सहाबा केराम से मशविरा लिया। इस पर तमाम सहाबा ने मुत्तफ़ेका तौर पर हज़रत उस्मान को यह सलाह दी कि इन सबको कत्ल करा दीजिए लेकिन हज़रत उस्मान ने ऐसा करने से इन्कार कर दिया और फ़रमाया कि हम अफ़ू व दरगुज़र से काम लेंगे। उनके उज़्र कुबूल और उनको राह रास्त पर लाने की पूरी कोशिश करेंगे। जब तक इनमें से कोई किसी हदे शरई को न तोड़े, या कुफ़्र का इज़्हार न करे उसकी मुख़ालेफ़त न करेंगे।

अहले मिस्र के उमरा मुन्दरजा ज़ैल थे।

Scanned by CamScanner

1. अब्दुर्रहमान इब्न अदलीस अलबलवी।
2. कनाना इब्न बशरूल लैसी।
3. सौदान इब्न हमरान अलसकूनी।
4. कैसरा अलसकूनी।

इन सबका अमीर ग़ाफ़की इब्न हरबुल अकी था। इनके साथ इब्नुस्सौदा अब्दुल्लाह भी था।

अहले कूफ़ा के सरदार मुन्दरजा ज़ैल थे।

1. ज़ैद बिन सौमानुल अबदी। 2. अश्तर नख़ई।
3. ज़याद इब्न नज़र हारसी। 4. अब्दुल्लाह इब्न असम आमरी।

इनका सरदार आमिर इब्न असम था।

अहले बसरा भी चार गिरोहों में निकले। उनके सरदार मुन्दरजा ज़ैल थे।

1. हकीम इब्न जबलहुल अबदी।
2. ज़रीह इब्न एबादुल अबदी।
3. बशर इब्न शरीहुल कैसी।
4. इब्नुल महरश अलखनी।

इन सब का सरदार हरकूस बिन जुबैर अलसअदी था।

हज़रत उस्मान और सफ़रे आख़िरत

सैयदना उस्मान ग़नी की शहादत अपनी मज़लूमियत और मुसीबत के लेहाज़ से इस उम्मत में पहली और बेनज़ीर शहादत है। मुसलमान मुत्तहिद व मुत्तफ़िक़ होकर कुफ़्र व शआएर कुफ़्र को फ़ना कर रहे थे और नबूवत की बरकतें उनमें मौजूद थीं।

लेकिन हज़रत उस्मान की शहादत के बाद वह तमाम बरकतें ले ली गईं और जो तलवार काफ़िरों के कत्ल के लिए थी आपस में चलने लगी और इख़्तेलाफ़ व इफ़्तेराक़ का दायरा वसीअ़ से वसीअ़ तर होता चला गया। हज़रत उस्मान की शहादत की ख़बर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने पहले ही से दी थी। जो मुतवातिरूल मानी की हद तक पहुँच चुकी हैं।

तिर्मिज़ी ने इब्ने उमर से रवायत की है कि रसूले खुदा

सल्लल्लाहो तआला अलैहे वसल्लम ने एक फ़ित्ने का ज़िक्र फरमाया और हज़रत उस्मान की तरफ इशारा कर के फरमाया। यह इस फ़ित्ने में ज़ुल्मन कत्ल किये जायेंगे। मुस्तदरिक में हाकिम ने रवायत की हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसऊद से कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि इस्लाम की चक्की पैंतीस साल के बाद अपने जगह से हट जायेगी। हज़रत उस्मान की शहादत ठीक 35 हिजरी में हुई।

हज़रत अनस से मरवी है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया कि खुदा की तलवार म्यान में रहेगी जब तक कि उस्मान ज़िन्दा हैं और जिस वक्त उस्मान शहीद कर दिये जायेंगे वह तलवार म्यान से निकाल ली जायेगी और फिर क़यामत तक म्यान में न जा सकेगी।

शहादत क्यों और कैसे ?

इब्तेदा यूँ हुई कि अंगुश्तरी मुबारक जो हुज़ूर के बाद सिद्दीक़ अकबर के हाथ में रही और उसके बाद फ़ारूक आज़म के हाथ में रही और उनके बाद हज़रत उस्मान के हाथ में आयी। एक रोज़ हज़रत उस्मान अरीस नामी कुएँ पर बैठे हुए थे और वह अंगूठी हाथ में थी। हाथ से उस कुएँ में गिर पड़ी। तीन दिन तक वह अंगूठी तलाश की गयी। तमाम पानी कुएँ से निकाला गया। उसकी बालू देखी गयी मगर कहीं अंगूठी का पता न चला। इस अंगुश्तरी का गुम होना था कि सारा निज़ाम दरहम बरहम हो गया। और हज़रत उस्मान पर नुक्ता चीनियाँ शुरू हो गयीं। आप पर सबसे बड़ा एतराज़ यह था कि अपने ख़ानदान के लोगों को बड़े बड़े ओहदों पर मोक़र्रर कर रखा था। इसी तरह और भी एतराज़ात थे मगर कोई भी एतराज़ ऐसा न था जो शरई तौर पर काबिले गिरफ़्त हो सके। एक बार हाकिम मिस्र अब्दुल्लाह बिन सरह की शिकायत आयी कि वह बहुत ज़ुल्म करता है हज़रत उस्मान ने उसको एक फरमान तहदीद आमेज़ भेजा मगर बजाय इसके कि वह उसपर अमल करते शिकायत करने वालों को खूब पीटा यहाँ तक कि उनमें से एक आदमी मर भी गया।

Scanned by CamScanner

फिर सात सौ आदमी मिस्र से आये और मस्जिदे नबवी में सहाबा केराम से उन्होंने अपने मज़ालिम की दास्तान बयान की। हज़रत अली, तलहा, उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा ने हज़रत उस्मान से इसके मोतअल्लिक बहुत कुछ कहा। हज़रत उस्मान ने अब्दुल्लाह इब्न सरह को हुकूमत से माजूल कर दिया और अहले मिस्र से दरियाफ़्त किया तुम किसको अपना हाकिम पसन्द करते हो ? सबने कहा मोहम्मद इब्न अबी बकर को तजवीज़ किया। चुनान्चे हज़रत उस्मान ने उनको फरमान लिख दिया और मुहाजिरीन और अन्सार की एक जमाअत को उनके साथ कर दिया कि मिस्र पहुँचकर अब्दुल्लाह इब्न सरह के मामलात की तहक़ीकात करें। यह सब लोग बजानिब मिस्र रवाना हो गये।

तीन मन्ज़िलें तय कर चुके थे, चौथी मन्ज़िल में देखते क्या हैं कि एक हब्शी गुलाम एक ऊँट पर सवार चला जा रहा और उसकी हालत ऐसी है जैसे कोई भागा हुआ हो। इन लोगों ने उस से पूछा तू कहाँ जा रहा है उसने कहा अमीरूल मोमिनीन ने मुझे हाकिम मिस्र के पास भेजा है लोगों ने कहा हाकिम मिस्र तो मोहम्मद इब्न अबी बकर यहाँ मौजूद हैं। उसने कहा मैं उनके पास नहीं भेजा गया हूँ। यह सुनकर मोहम्मद इब्न अबी बकर ने उसको गिरफ्तार कर लिया। उससे पूछा तू किसका गुलाम है तो कभी कहता अमीरूल मोमिनीन का गुलाम हूँ कभी कहता मरवान का गुलाम हूँ। उससे पूछा गया तेरे पास कोई तहरीर है उसने साफ इन्कार कर दिया। तलाशी ली गयी तो एक ख़त निकला। वह ख़त खोला गया तो उस्मान की तरफ़ से अब्दुल्लाह इब्न सरह की जानिब यह मज़मून था कि मोहम्मद इब्न अबी बकर और उनके साथ जो लोग आ रहे हैं उन्हें किसी हीले से कत्ल करा दो और जो तहरीर मेरी उनके पास है उसपर अमल न करो बदस्तूर तुम हुकूमत मिस्र पर क़ायम रहो और जो लोग मेरे पास तुम्हारी शिकायात लेकर आना चाहें उन्हें मत आने दो और मेरे हुक्म सानी का इन्तेज़ार करो।

इस ख़त को देखकर मोहम्मद इब्न अबी बकर और उनके साथियों के गैज़ व ग़ज़ब की कोई इन्तेहा न रही। सब लोग

मदीना वापस आ गये और हज़रत अली, तलहा, जुबैर, सअद रज़िअल्लाहो अन्हुम को जमा करके उनके सामने वह ख़त पेश किया। उस ख़त को देखकर नेहायत ग़म हुआ और हज़रत अली और उनके साथ सहाबा केराम वह ख़त और गुलाम लेकर हज़रत उस्मान के पास तशरीफ़ ले गये और उनसे पूछा यह गुलाम आप का है, उन्होंने फरमाया हाँ। फिर ख़त पढ़कर मज़मून सुनाया और पूछा यह ख़त आपने लिखवाया है तो आपने क़सम खाकर कहा नहीं। तमाम सहाबा को उनकी क़सम का यक़ीन हो गया कि उस्मान झूठी क़सम नहीं खा सकते।

ख़त पहचाना गया तो मालूम हुआ कि मरवान का लिखा हुआ है। लोगों ने कहा कि मरवान को हमारे हवाले कीजिए ताकि हम इस मामला की तहकीकात करें। मगर उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो ने मरवान के हवाले करने से इन्कार कर दिया। आपने यह चाहा था कि किसी मुनासिब तदबीर से उसको अलाहेदा कर देंगें।

सहाबा केराम तो जाकर अपने घर बैठ रहे और अहले मिस्र ने हज़रत उस्माने के घर का मोहासरा कर लिया और उन पर पानी बन्द कर दिया। जब हज़रत अली को इसकी इत्तेला मिली तो उन्होंने थोड़ा सा पानी भेजा जो बमुश्किल तमाम हज़रत उस्मान तक पहुँचा और कई आदमी पानी ले जाने की वजह से ज़ख़्मी हुए। हज़रत अली ने यह फ़रमाया कि हम सिर्फ यह चाहते थे कि मरवान हमारे हवाले कर दिया जाय लेकिन हज़रत उस्मान का कत्ल करना हम किसी तरह गवारा नहीं कर सकते और हज़रत हसनैन को हुक्म दिया कि तुम दोनों तलवार लेकर हज़रत उस्मान के दरवाज़े पर खड़े रहो किसी को अन्दर न जाने देना। हज़रत तलहा व जुबैर और चन्द दूसरे सहाबा केराम ने भी अपने साहबज़ादों को हिफ़ाज़त के लिए भेज दिया। बलवाइयों ने तीर अन्दाज़ी शुरू कर दी। एक तीर मरवान को लगा। बक़िया तीर मुहाफ़िज़ीन को लगे। हज़रत इमाम हसन खून में नहा गये। मोहम्मद इब्न तलहा भी ज़ख़्मी हुए। हज़रत अली के गुलाम कनबर को भी ज़ख़्म लगा। यह हाल देखकर मोहम्मद इब्न अबी

Scanned by CamScanner

बकर ने कहा यह बात अच्छी न हुयीं। अन्देशा है कि बनी हाशिम हमारे मुकाबले पर आ जायें लेहाज़ा जल्दी करो। और उनके साथ दो आदमी दीवार से मकान के अन्दर फाँद पड़े। मोहम्मद इब्न अबी बकर हज़रत उस्मान के पास गये और रेश मुबारक पकड़ ली। हज़रत उस्मान ने फरमाया ऐ मोहम्मद ! तुम्हारे वालिद सिद्दीक अकबर अगर तुमको मेरे साथ यह बर्ताव करते देखते तो खुदा की कसम उनको बड़ा रन्ज होता। यह सुनकर मोहम्मद इब्न अबी बकर के हाथों में लरज़ह पड़ गया। फौरन ही वह पीछे हट गये। मगर वह दोनों शख्स जो उनके साथ थे उन्होंने अमीरूल मोमिनीन को ज़बह कर दिया, रज़िअल्लाहो अन्हो व अरज़ाहो अन्हा। उनकी बीवी हज़रत नायला ने बहुत शोर किया मगर उनकी आवाज़ बाहर तक नहीं जा सकी। आखिर कोठे पर चढ़कर उन्होंने आवाज़ दी। ऐ लोगो ! अमीरूल मोमिनीन शहीद कर दिये गये।

यह आवाज़ सुनकर लोग अन्दर दाखिल हुए तो देखा कि आप शहीद हो गये और क़ातिल पुश्त की दीवार कूदकर भाग गये। हज़रत अ़ली आये और अपने दोनों साहब ज़ादों को मारा कि तुम दोनो दरवाज़ों पर खड़े रहे और अमीरूल मोमिनीन शहीद कर दिये गये। हसनैन ने कहा। हम लोग क्या कर सकते थे। क़ातिल दरवाज़े से नहीं गये बल्कि मकान की पुश्त से घर के अन्दर दाखिल हुए। "इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहे राजेऊन"

जिस वक्त हज़रत उस्मान शहीद किये गये तिलावते कलाम पाक में मशगूल थे। उनका खून बहा तो कुरआन पाक की इस आयत पर गिरा "फसयकफ़ीकहोमुल्लाहो वहोवस्समीउल अलीम।"

शहादत से कुछ पहले हज़रत उस्मान बाला ख़ाना पर तशरीफ़ लाये। और चन्द सहाबा केराम को आपने पुकारा। वह बुला दिये गये। आपने बतौर इतमामे हुज्जत के चन्द अहादीस पढ़ीं और सहाबा कराम से पूछा यह हदीसें आप लोगों ने भी रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम से सुनी हैं या नहीं। सब ने तस्दीक़ की। उसके बाद अन्सार ने कहा ऐ अमीरूल मोमिनीन!

आपकी मज़लूमियत अब इन्तेहा को पहुँच गयी। हमसे नहीं देखी जाती। अगर आप हुक्म दें तो हम इन बाग़ियों को तहे तेग़ कर दें। आपने फरमाया मैं इसको पसन्द नहीं करता कि मेरे हुक्म से किसी लाइलाहा इल्लल्लाह पढ़ने वाले का खून बहाया जाय।

लोगों ने कहा फिर आप खिलाफ़त से दस्त बरदार हो जायें। आपने फरमाया मैं यह भी नहीं कर सकता इसलिए कि रसूले खुदा ने मुझसे फरमाया था कि ऐ उस्मान ! अल्लाह तुमको एक कमीज़ पहनायेगा। लोग उसको उतारना चाहेंगे। अगर तुमने लोगों के कहने से उतार दिया तो जन्नत की खुशबू तुमको नसीब न होगी। लेहाज़ा मैं उसपर क़ायम रहूँगा। लोगों ने कहा फिर इस जुल्म से आपको किस तरह निजात मिलेगी।

बलवाई हज़रत उस्मान को शहीद करने के बाद हज़रत अ़ली के पास दौड़े गये और कहा हम आपसे बैअ़त करते हैं। आप ने कहा यह काम तुम्हारा नहीं है। अहले बद्र जिसके हाथ पर बैअ़त करेंगे वही खलीफ़ा होगा। वह लोग असहाब बद्र को बुलाकर लाये। सबने बिल इत्तेफ़ाक कहा कि अब आपसे ज़्यादा कोई मुस्तहिक़ खेलाफ़त नहीं। आपने फ़रमाया मुझे अल्लाह से ह़या आती है कि उस्मान शहीद कर दिये गये और अभी दफ़्न भी न हुए और मैं बैअ़त ले लूँ। आपके इस फरमाने से लोगों ने दफ़्न की इजाज़त दे दी।

सहाबा के अक़वाल

मोहम्मद इब्न हातिब कहते हैं मैं मदीना आने लगा तो मैंने हज़रत अली से कहा कि अगर हमसे लोग उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो के बारे में दरियाफ़्त करेंगे तो हम क्या जवाब देंगे। हज़रत अली ने फरमाया तुम यह कह देना कि अल्लाह की क़सम उस्मान इस आयत के मिस्दाक़ थे। "अल्लज़ीना आमनू सुम्मत्तक़ौ वअहसनू वल्लाहो योहिब्बुल मोहसेनीन।"

हज़रत सईद बिन ज़ैद कहते थे कि ऐ लोगो! तुमने जो जुल्म उस्मान पर किया अगर उसकी वजह से ओह़द पहाड़ हट जाता तो हक़ बजानिब था।

Scanned by CamScanner

हज़रत अब्दुल्लाह इब्न मसऊद फरमाते थे कि लोग अगर उस्मान को शहीद कर देंगे तो उनका बदला न पायेंगे।

हज़रत हुज़ैफ़ह से लोगों ने पूछा यह मिस्री लोग जो हज़रत उस्मान पर बग़ावत करके आये हैं क्या करेंगे ? हज़रत हुज़ैफ़ह ने कहा क़त्ल कर देंगे मगर वह जन्नत में जायेंगे और उनके क़ातिल दोज़ख़ में जायेंगे।

हज़रत अबूज़र ग़फ़्फ़ारी फ़रमाते थे कि अगर उस्मान मुझे सर के बल चलने का हुक्म देते तो मैं सर के बल चलता।

हज़रत ज़ैद इब्न साबित हज़रत उस्मान की शहादत के दिन बहुत रोये। हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अब्बास फरमाते थे अगर सब लोग हज़रत उस्मान के क़त्ल पर मुत्तफ़िक़ हो गये होते तो यक़ीनन आसमान से पत्थर बरस पड़ते।

यज़ीद इब्न हबीब कहते हैं जिस कदर लोग मिस्र से हज़रत उस्मान पर बग़ावत करके आये थे उनमें एक भी ऐसा न था जिसको जुनून न हो गया हो।

हज़रत उस्मान का सरापा

क़द मोतवस्सित और रंग सफेद माएल ब ज़र्दी था। चेहरा मुबारक पर चेचक के चन्द निशानात थे। सीना कुशादा था। दाढ़ी घनी थी। सर में बाल रखते थे। अख़ीर उम्र में ज़र्द ख़ेज़ाब बालों में लगाते थे। और दाँतों को सोने के तार से बंधवाया था।

हज़रत उस्मान के दौरे हुकूमत पर एक नज़र

हज़रत उस्मान गनी की नेकी व पाकबाज़ी मुसल्लमह है। आप एक नेहायत ही सीधे साधे और सच्चे पक्के मुसलमान थे लेकिन कुछ ऐसे भी हुकमरान मरवान बिन अलहिकम जैसे आप की दौरे हुकूमत व खेलाफ़त में आ गये थे जो खुद गर्ज़ व इब्नुल वक्त थे जिन की वजह से हज़रत उस्मान के खेलाफ बुरी नागवारी फैल गयी थी। जिसका इख़्तेताम हज़रत उस्मान की शहादत पर भी न हुआ बल्कि हज़रत अली को इसी तलवार को जो मुश्रेकीन पर चला करती थी अपनों पर चलानी पड़ी।

हज़रत उस्मान ने एशाअत इस्लाम के लिए मुख़्तलिफ़ मुमालिक में तबलीग़ी वफ़ूद भी रवाना किये थे जिसमें एक वफ़द मुग़ीरा बिन शोअ़बा साबिक गवर्नरं कूफ़ा की सरकर्दगी में बज़रिए जहाज हिन्दुस्तान भी आया था। और मालाबार में उसने एशाअ़ते इस्लाम के लिए बड़ा काम भी किया था। राजा ज़मूरन ने अमीर वफ़द की ज़बानी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के हालात सुनने के बाद इस्लाम क़ुबूल कर लिया था।

आज़रबाइजान और ईरान में बग़ावत को खत्म किया गया। अफ़्रीका पर हमला करके उसको फतह कर लिया गया।

हज़रत उस्मान पर जो एतराज़ात किये गये उनके जवाबात

(रज़िअल्लाहो अन्हो)

आप पर जिस कदर एतराज़ात किये गये हैं उनमें मशहूर इल्ज़ामात यह हैं।

(1.) पहला इल्ज़ाम यह है कि आपने कुब्बार सहाबा को उनके ओहदों से माज़ूल कर दिया।

इसका जवाब यह है कि अगर इस एतराज़ को दुरूस्त मान लिया जाय तो फिर कौन है जो इससे बचा हुआ है। क्या आदलुल असहाब उमर फारूकुल आज़म जिनकी फेरासत दूर अन्देशी और अद्ल व इन्साफ दुनिया भर में ज़र्बुलमिस्ल है यह इल्ज़ाम आयद नहीं होता ? आपने हज़रत ख़ालिद बिन वलीद जैसे लायक सिपेहसालार जिनको रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सैफुल्लाह का खिताब दिया था, हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा और हज़रत सअ़द इब्न वक़ास फ़ातेह ईरान को माज़ूल कर दिया था। फिर क्या यह इल्ज़ाम असदुल्लाहुल ग़ालिब हज़रत अ़ली पर आयद नहीं होता जिन्होंने खिलाफ़त संभालते ही हज़रत उस्मान के तमाम ओम्माल को माज़ूल कर दिया, और उन माज़ूलीन में तराबलस आरमीनिया और कब्रिस के फातेहीन भी शामिल थे।

Scanned by CamScanner

हज़रत उस्मान ने जिन हज़रात को माजूल फ़रमाया उनके इस्माये गिरामी मुन्दरजा ज़ैल हैं।

(1) हज़रत उमर बिन आस फ़ातेह ईरान। (2) हज़रत सअद बिन अबी वक़ास गवर्नर कूफ़ा। (3) हज़रत अबू मूसा अशअरी वालिए बसरा। (4) हज़रत मग़ीरा बिन शोअ़बा। (5) हज़रत अब्दुल्लाह इब्न अरकम मोहतमिम बैतुल माल।

1. हज़रत उमर बिन आस के माजूल करने की वजह यह थी कि उन्होंने स्कन्दरिया की बग़ावत फुरू करने में ज़िम्मियों के साथ ग़ैर मुन्सिफ़ाना सुलूक किया था लौंडी गुलाम बना लिया था। नीज़ नई नहरें जारी होने के बावजूद वह मिस्र के मालियात में इज़ाफ़ा न कर सके। लेकिन हज़रत अब्दुल्लाह इब्न सरह रज़िअल्लाहो अन्हो के तक़र्रुर के बाद मालिया बहुत ज़्यादा आना शुरू हो गया था।

2. सअ़द इब्न वकास ने बैतुल माल से एक बड़ी रक़म कर्ज़ ली लेकिन उसको वक्त पर अदा न कर सके। इसी वजह से हज़रत अब्दुल्लाह बिन सअ़द मोहतमिम बैतुल माल से तनाज़अ भी हुआ।

3. अबू मूसा अशअ़री के माजूली का सबब यह हुआ कि वह वहाँ की रेआ़या को खुश न रख सके और लोगों ने उनकी माजूली का मोतालबा किया।

4. मुग़ीरा बिन शोअ़बा पर रिश्वत सतानी का इल्ज़ाम लगाया गया अगरचे यह सरासर बोहतान था। लेकिन हज़रत उमर ने उनकी जगह सअ़द इब्न वकास के तक़र्रुर की वसीयत की थी। इस लिए माजूल कर दिया गया।

5. अब्दुल्लाह इब्न अरक़म के माजूल की वजह उनका बुढ़ापा था इसलिए इस खिदमत को ज़ैद इब्न साबित के सुपुर्द किया गया। ज़ाहिर है कि ओम्माल और दूसरे ओहदेदारों के माजूल करने के जवाब ऊपर लिखे गये उनपर किसी भी दानिशमन्द को एतराज़ नहीं हो सकता फिर यह कैसे माना जा सकता है कि हज़रत ने महज़ ज़ाती एनाद की वजह से इन बुज़ुर्गों को माजूल कर दिया।

(2.) दूसरा इल्ज़ाम यह है कि आपने नाअहल और ना तजुर्बाकार लोगों को बड़े बड़े ओहदों पर मोक़र्रर कर दिया।

अगर ऐसा है और आपके मोक़र्रर करदा अ़माल बेराह रू होते तो जब तफ़तीश अहवाल के लिए हज़रत उस्मान ने अपने कलमरो में मदीना से लोगों को भेजा तो वह लोग हरगिज़ हरगिज़ यह रिपोर्ट न लाते कि तमाम ओ़म्माल बहुत अच्छे काम कर रहे हैं। उनसे रेआ़या के किसी फ़र्द को शिकायत नहीं है और उन्होंने अद्‌ल व इन्साफ़ को पूरी तरह मुल्क में कायम रखा है अगर वह नाअहल व ना तजुर्बेकार होते तो रेआ़या का एक बड़ा हिस्सा उनसे खेलाफ़ हो जाता और शोरिश बर्पा कर देता। लेकिन हम देखते हैं कि सिवाय चन्द फ़िला पर्दाज़ों के जिन्होंने महज़ अपनी ज़ाती अग़राज़ हासिल करने के लिए ओ़म्माल के खिलाफ शोर व ग़ोगा बुलन्द किया था बाकी रेआ़या इस फ़िला से बिल्कुल अलाहेदा रही। बेशक वलीद इब्न उकबा, सईद इब्न आस, अब्दुल्लाह बिन सरह और अब्दुल्लाह इब्न अ़ब्बास इस बुलन्द हैसियत के मालिक न थे जो सहाबा कराम को हासिल थी लेकिन इनके इन्तेज़ामी कारनामे और बड़ी बड़ी फतूहात जो अहदे उस्मान में उन्होंने कीं किसी तरह भी नज़र अन्दाज़ नहीं की जा सकतीं। उन्हीं की हिम्मत व दिलेरी और जुर्रात से तिब्रिस्तान, आरमीनिया, तराबलस, कब्रस, हेरात, सजिस्तान और नीशापुर इस्लामी हुदूद में शामिल हुए और इस्लामी हुकूमत वसीअ़ से वसीअ़तर होती चली गयी। क्या यह सब फ़तूहात ना अहल और ना तजुर्बाकार अ़माल के हाथ से अन्जाम पाती रहीं।

(3) यह इल्ज़ाम भी बहुत मशहूर है कि आपने रिश्तेदारों और ख़ानदान के लोगों को बड़े बड़े ओहदों पर मोकर्रर किया। इस इल्ज़ाम का जवाब खुद हज़रत उस्मान ने मजमए आ़म में दिया था। जिसमें बाज़ सहाबा भी मौजूद थे। आपने फ़रमाया "लोग मुझ पर ऐतराज़ करते हैं कि मैं अपने ख़ानदान के लोगों को कलीदी ओहदे देने में दूसरे लोगों पर तरजीह देता हूँ मगर क्या रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम कुरैश को बाकी अरब वालों पर तरजीह न देते थे ? और क्या कुरैश में से बनू हाशिम

Scanned by CamScanner

का सबसे ज़्यादा ख़्याल नहीं रखते थे ?

देखने की बात यह है कि जिन लोगों को हज़रत उस्मान ने अहम ओहदों पर मोक़र्रर किया वह दर हक़ीक़त इन ज़िम्मेदारियों के पूरा करने के अहल भी थे या नहीं ? अगर वह लोग अहल थे और अपनी ज़िम्मेदारियों को अच्छी तरह निभाते थे तब यह एतराज़ सरासर बातिल हो जाता है कि आपने अपने रिश्तेदारों को बड़े बड़े ओहदे दिये। वाक़ेआ यही है कि आपने जिन लोगों को बड़े बड़े ओहदे दिये बिल उमूम वह उमूरे मुमलिकत को सर अन्जाम देने की पूरी सलाहियत रखते थे जब ही यह बात थी कि ग्यारह बरस की तवील मुद्दत में सल्तनत के कामों में किसी तरह का कोई ज़ोअफ़ नहीं आया और हर काम खुश उस्लूबी के साथ अन्जाम पाता रहा। फ़तूहात भी होती रहीं और मुल्की इन्तेज़ाम में भी किसी तरह की कोई ख़राबी वाक़ेअ नहीं हुई और यह सूरत उस वक्त तक नहीं हो सकती जब तक अमाल, हाकिम और कारकुन लायक, क़ाबिल और फ़र्ज़ शनास न हों।

(4) यह एतराज़ भी किया जाता है कि आपने बैतुल माल से अपने अज़ीज़ व अक़ारिब को कसरत से दौलत अता की और बेजा तसर्रूफ किया। इन ऐतराज़ के सबूत में जिन वाक़ेआत को पेश किया जाता है वह या तो अज़ सर ता पा ग़लत हैं या रंग आमेज़ कर के उनकी सूरत बदल दी गयी है।

हज़रत उस्मान ज़ाती तौर पर नेहायत मालदार थे। तेजारत से आपको लाखों रूपयों की आमदनी होती थी। आपने एक कसीर रक़म खर्च करके मस्जिदे नबवी की तौसीअ की। लाखें रूपये से जैशे इसरत को आरास्ता किया। हज़ारहा रूपये देकर सरे रोमा को एक यहूदी से ख़रीद कर मुसलमानों पर वक्फ़ कर दिया। ऐसा शख़्स जो खुदा की राह में लाखों रूपये खर्च करने से भी दरेग़ न करे अपने माल में से अज़ीज़ व अक़ारिब को कुछ नहीं दे सकता था। हज़रत उस्मान के सामने भी मोअतरेज़ीन ने यही एतराज़ किया था जिसका जवाब खुद उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो ने अपनी तक़रीर में यूँ दिया। यह तक़रीर तिबरी में भी दर्ज है।

हज़रत उस्मान ने फ़रमाया। लोग कहते हैं कि मैं अपने ख़ानदान वालों से मुहब्बत करता हूँ और उनके साथ फैयाज़ी करता हूँ लेकिन मेरी मुहब्बत ने मुझे जुल्म की तरफ मायल नहीं किया। बल्कि मैं सिर्फ उनके वाजिबी हुक़ूक़ अदा करता हूँ और इसी तरह मेरी फ़ैयाज़ी भी मेरे ही माल तक महदूद है। मुसलमानों का माल न तो मैं अपने लिए हलाल समझता हूँ और न किसी दूसरे के लिए। मैं रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और अबूबकर व उमर के अहद में भी अपने माल से अज़ीज़ों को गेराँ कद्र अतिया दिया करता था। और अब जबकि मैं तबई उम्र को पहुँच चुका हूँ और मैंने अपना तमाम सरमाया अहल व अयाल के सुपुर्द कर दिया है तो मुफ़सिद ऐसी बातें मशहूर करते हैं। खुदा की कसम मैंने किसी शहर पर ख़ेराज का कोई ऐसा बार नहीं डाला कि इस क़िस्म का इल्ज़ाम देना जायज़ हो। जो कुछ वसूली हुआ वह उन्हीं लोगों की बेहतरी और तरक्की पर सर्फ हुआ। मेरे पास सिर्फ ख़म्स आता है। और उसमें से भी मेरे लिए कुछ लेना जायज़ नहीं। खुदा के माल में एक पैसा का भी तसर्रूफ़ नहीं किया जाता। मैं इसमें से कुछ नहीं लेता। यहाँ तक कि खाना भी खाता हूँ तो अपने ही माल से।

(तर्जमा अज़ तिबरी)

(5) मरवान को तराबलस अलग़र्ब के माले ग़नीमत का खम्स दिया गया। यह हज़रत उस्मान पर एक अज़ीम बोहतान है। तारीख़ इब्न ख़ल्दून में लिखा है कि "इब्न जुबैर ने फ़तह की खुश खबरी और माले ग़नीमत का पाँचवा हिस्सा दारूल ख़ेलाफ़ा रवाना किया जिसको पाँच लाख दीनार पर मरवान ने ख़रीद लिया।"

ज़ाहिर है कि किसी शख़्स को अतिया देने और फ़रोख़्त करने में ज़मीन व आसमान का फ़र्क है।

(6) बैतुल माल से ज़ैद इब्न साबित को एक लाख दिरहम दिये। यह रवायत भी बे बुनियाद है।

हज़रत उस्मान ने हुक्म दिया कि इसको रेफ़ाहे आम के काम पर सर्फ किया जाय चुनान्चा उन्होंने इसको मस्जिद की

Scanned by CamScanner

तौसीअ और तामीर में सर्फ़ कर दिया।

(7) यह इल्ज़ाम भी लगाया जाता है कि आपने मदीना के अतराफ़ में बक़ीअ को सरकारी चरागाह क़रार दिया और अवाम को इसमें जानवर चराने से रोक दिया।

इसका जवाब यह है कि फौजी और कौमी ज़रूरत के लिए चरागाहें बनवाना हर हाकिम का फ़र्ज़ है। खुद रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम और हज़रत उमर ने ऐसी चरागाहें बनवायीं तो अगर हज़रत उस्मान ने बक़ीअ को सरकारी चरागाह क़रार दे दिया तो इसमें एतराज़ की कौन सी बात है। बाक़ी रहा अवामुन्नास को इससे मुस्तफ़ीद न होने देना तो चूँकि यह चरागाहें सरकारी खर्च पर तैयार हुई थीं और फ़ौजी घोड़े और ज़कात के ऊँट इसमें चरते थे इसलिए अगर अवामुन्नास भी इसे इस्तेमाल करते तो नुकसान का अन्देशा भी था और गड़ बड़ पैदा हो जाने का भी क़वी एहतमाल था इस लिए रफ़ए शर की खातिर हज़रत उस्मान ने लोगों को अपना जानवर चराने से रोक दिया।

(8) आपने अपने हाशिया नशीनों और क़राबतदारों को अतराफ़े मुल्क में बाज़ नेहायत वसीअ क़तआत दिये।

इसका जवाब यह है कि ईराक में बहुत सी ज़मीन ग़ैर आबाद और बन्जर पड़ी हुयी थीं। जिन लोगों ने उन्हें क़ाबिले ज़राअत बनाया आपने वही ज़मीन उन्हें मरहमत फ़रमा दी। फ़ेक़ह का भी यही मसला है कि जो शख़्स नाक़ाबिले काश्त ज़मीन को क़ाबिले काश्त बनाये वह ज़मीन उसकी मिल्क तसौवर होगी। इसी तरह ममलुकत में ज़्यादा रक़्बह को क़ाबिले काश्त बनाया जा सकता है और लोग शौक से ज़राअत करते हैं।

लेहाज़ा अगर इन बातों को जो सहाबा केराम की तरफ मनसूब हैं सही तस्लीम कर लिया जाय तो फिर यह मानना पड़ेगा कि नऊज़ बिल्लाह मिन ज़ालिक रसूले करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की तालीम व तरबियत ने उन लोगों के दिल में किसी किस्म का भी तग़ैयुर पैदा नहीं किया बल्कि वह भी दूसरे गिरोहों और दूसरी क़ौमों की तरह महज़ अपना इक्तेदार क़ायम करने के लिए कोशाँ रहे।

लेकिन इस गिरोह पर जिसके मोतअ़ल्लिक खुदा खुद कहे "रज़िअल्लाहो अन्हुम वरज़ू अनहो" अगर लाखों मोअर्रिख़ीन भी मुत्तफ़ेक़ा तौर पर यह इल्ज़ाम आयद करें कि वह खुदाए तआला के बताये हुए रास्ता से हट गये तो उन लाखों की बातों को खुदाए तआला की एक बात के मुक़ाबले में परकाह के बराबर भी वक़अ़त नहीं दी जा सकती।

हज़रत अ़ली, हज़रत आयशा सिद्दीका, हज़रत अब्दुर्रहमान इब्न औफ़, हज़रत उमर बिन आस, हज़रत सअ़द बिन वक़ास, हज़रत अबूज़र, हज़रत तलहा, हज़रत ज़ुबैर जैसे जलीलुल क़द्र और पाकबाज़ सहाबा पर यह इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह हज़रत उस्मान के मुख़ालिफ़ थे हालाँकि वह नेहायत पाकबाज़ थे। उन्होंने हर मौके पर इस्लाम की अज़ीमुश्शान ख़िदमात अनजाम दी हैं। इनके मोतअ़ल्लिक़ यह ख़याल कैसे किया जा सकता है कि वह ख़लीफ़ा की मोख़ालिफ़त और उससे बुग्ज़ व एनाद रखने के गुनाहे अज़ीम के मुरतकिब हुए होंगे और महज़ इस नाराज़ी में कि इनमें से बाज़ को माज़ूल क्यों कर दिया गया और बाज़ को ओहदे क्यों न दिये गये। उन्होंने ऐन इस मौके पर ख़लीफ़ा का साथ छोड़ दिया जबकि ख़लीफ़ा का शहीद होना सिर्फ एक फर्द का मारा जाना न था बल्कि तमाम आलमे इस्लाम के लिए हमेशा के वास्ते फित्ना का बाइस था।

कुतुब तारीख़ व सैर में इन बुज़ुर्गों की तरफ़ जो एतराज़ मन्सूब किये गये हैं उनका बातिल होना ज़रा से ग़ौर व फ़िक्र और तदबीर से मालूम हो जाता है। हैरत की बात है कि चौदह सौ बरस बाद पैदा होने वाले इन्सान तो अक्ल के काम लेकर इन एतराज़ के बातिल होने पर यकीन कर लेते हैं लेकिन सहाबा केराम जिनके सामने तमाम वाक़ेआत रोनुमा हो रहे थे बे धड़क इन इल्ज़ामात पर ईमान ले आते हैं लेकिन जब हज़रत उस्मान इन इल्ज़ामात की तरदीद मस्जिद में खड़े होकर करते हैं और सहाबा से अपनी बात की तस्दीक़ चाहते हैं तो सबसे पहले हज़रत उस्मान की तस्दीक़ करने वाले, उनको इस इल्ज़ामात से बरी क़रार देने वाले वही लोग थे। जो पहले उनको इल्ज़ामात से

Scanned by CamScanner

मुलव्विस क़रार दे चुके थे। फिर क्या ही अजब बात है कि जब बलवाइयों ने तमाम मदीना पर कब्ज़ा कर के हज़रत उस्मान के घर का मोहासिरा कर लिया तो हज़रत उस्मान की हिफ़ाज़त के लिए अपने लड़कों को भेजने में पेश पेश हज़रत अ़ली, हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर थे जिनके मोतअ़ल्लिक़ इल्ज़ाम लगाया जाता है कि वह हज़रत उस्मान के अशद तरीन दुश्मनों में से थे। क्या कोई शख़्स अपने दुश्मन की जान बचाने के लिए अपने बेटों को कुर्बान करने के लिए तैयार हो सकता है ? फिर क्या यही तलहा, जुबैर, आयशा सिद्दीका और उमर बिन आस नहीं थे जिन्होंने हज़रत उस्मान की शहादत पर बाद इनका केसास लेने की आवाज़ बुलन्द की ? क्या किसी दुश्मन का भी क़ेसास तलब किया जाता है ?

फिर क्या हज़रत अ़ली ही नहीं थे जिन्होंने बलवाइयों को समझाने और हज़रत उस्मान के घर पानी पहुँचाने की हर मुमकिन कोशिश की और जब वह इसमें कामयाब न हो सके तो अपना अमामा अपने सर से उतार कर हज़रत उस्मान के घर में फेंक दिया ताकि आपको पता चल जाय कि उन्होंने हत्तल मक़दूर कोशिश की मगर कामयाब न हो सके। फिर क्या सहाबा ने हर मक़ाम पर हज़रत उस्मान की तस्दीक़ न की ? क्या बार बार हज़रत उस्मान को न समझाया कि आप मुफ्सिदीन के साथ नरमी का बर्ताव न करें बल्कि उनको इबरतनाक सज़ायें दें ? क्या अपने दुश्मन को भी कोई ऐसा मशविरा दे सकता है ? रहा यह अम्र कि सहाबा ने बलवाइयों के हमले के वक्त हज़रत उस्मान की मदद क्यों न की और क्यों अपने घरों में बैठे रहे तो इसका जवाब यह है कि बाग़ियों ने जिस तरह मदीना पर कब्ज़ा किया था। उसने सहाबा के लिए कोई मौका ही न छोड़ा था कि वह बाग़ियों के मुक़ाबले में आते। मुफ़्सिदीन ने यकरूख़ बग़ैर किसी इत्तेला के मदीना पर कब्ज़ा कर लिया और एलान कर दिया कि कोई शख़्स भी हथियार लेकर न निकले। जो बाहर निकलेगा कत्ल कर दिया जायेगा। ऐसे मौके पर मुनज़्ज़िम मुक़ाबला आख़िर किस तरह हो सकता है ? लेकिन इसके बावजूद सहाबा कराम ने हज़रत उस्मान

से बाग़ियों के ख़िलाफ़ लड़ने की इजाज़त चाही लेकिन हज़रत उस्मान किसी भी तरह लड़ाई पर राज़ी न हुए और फ़रमाया मेरी जान बचाने की ख़ातिर इस्लाम में तलवार कशी और ख़ूँरेज़ी न करो। लेकिन इसके बावजूद सहाबा हज़रत उस्मान की मदद से ग़ाफ़िल न रहे। अकाबिर सहाबा ने अपने अपने लड़कों को हज़रत उस्मान की हिफ़ाज़त के लिए भेज दिया और खुद मुफ़्सिदीन को समझाने बुझाने में लग गये क्योंकि इसके बग़ैर कोई चारा भी न था। मगर खुदाई तक़दीर को कौन रोक सकता है बावजूद सहाबा की कोशिशों और उनके बेटों के मुक़ाबला के हज़रत उस्मान रज़िअल्लाहो अन्हो शहीद कर दिये गये।

क्या इन उमूर की मौजूदगी में यह साबित नहीं होता कि सहाबा कराम रिज़वानुल्लाहा अलैहिम अजमईन पर हज़रत उस्मान की मुख़ालिफ़त करने और उनको बेयार व मददगार छोड़ने का जो इल्ज़ाम लगाया जाता है वह सरासर बेबुनियाद और गलत है। सहाबा कराम पूरे तौर पर हज़रत उस्मान के वफ़ादार थे और आपके छोड़ देने का ख्याल एक लम्हा के लिए भी उनके दिलों में नहीं आ सकता था। सहाबा कराम को हज़रत उस्मान की ख़िलाफ़त पर कोई एतराज़ न था।

फ़साद का अस्ल बाइस यह था कि दुश्मनाने इस्लाम ने ज़ाहिरी तदाबीर से इस्लाम को तबाह न होते देखकर खुफ़िया रेशादवानियों की तरफ़ तवज्जह की और बाज़ अकाबिर सहाबा का आड़ लेकर चुपके चुपके मुसलमानों में तफर्का पैदा करना चाहा। सज़ा याफ़्ता मुजरिमों को अपने साथ मिलाया। लुटेरों को तहरीस दिलाई। मज़हब के पर्दे में लोगों के ईमान को कमज़ोर किया और हज़ारों हीलों और तदबीरों से एक जमाअ़त तैयार की। फिर झूठ, जअ़ल और फ़रेब से काम लेकर ऐसे हालात पैदा कर दिये जिनका मुक़ाबला हज़रत उस्मान और दीगर सहाबा के लिए मुश्किल हो गया।

Scanned by CamScanner

बाबुल इल्म असद उल्लाहिल ग़ालिब

सैयदना हज़रत

अली इब्ने अबी तालिब

रज़िअल्लाहो अन्हो

३५ हिजरी ता ४० हिजरी

शफीक़े मिल्लत हज़रत अल्लामा
मुफ़्ती शफ़ीक़ अहमद शरीफ़ी

मौलाए कायनात हज़रत अ़ली की इब्तेदाई ज़िन्दगी

(रज़िअल्लाहो अन्हो)

आपका शजरए नसब यह है – अ़ली इब्न अबी तालिब बिन अब्दुल मुत्तलिब बिन हाशिम बिन अब्द मोनाफ़ बिन क़सा बिन कलाब बिन मर्रा बिन कअ़ब बिन लुई बिन ग़ालिब बिन फ़हरा इब्न मालिक बिन नज़र इब्न कनाना।

अबुल हसन व अबू तोराब कुनीयत हैं जो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम का अता करदा है। माँ का नाम फ़ातमा बिन्त असद बिन हाशिम है। आप बच्चों में सबसे पहले ईमान लाये। अशरए मोबश्शिरा में से एक हैं। सैयदतुन निसा अलआलमीन सैयदा फ़ातमा के शौहर मोहतरम, रसूलल्लाह के दामाद, साबिक़ीन अव्वलीन में से एक। आपने अपने बचपन में भी बुत परस्ती न की। हिजरत की रात अल्लाह के रसूल ने अपनी जगह लिटा दिया कि लोगों की अमानतें वग़ैरह उनके हवाले कर के फिर हिजरत करना।

रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के साथ तमाम ग़ज़वात में शरीक हुए। सिवाए तबूक के क्योंकि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इस मौके पर उन्हें मदीना का ख़लीफ़ा बना दिया था।

तमाम गज़वात में नुमायाँ ख़िदमात अन्जाम दीं। मुख़ालिफ़ मौक़ों पर लवाए इस्लाम उन्हीं को दिया गया।

आपकी फ़ज़ीलत अहादीस की रौशनी में

हज़रात शेख़ैन ने सअ़द इब्न अबी वक़ास से रवायत किया कि जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ग़ज़वए तबूक में आपको मदीना का ख़लीफ़ा बना दिया तो अ़ली ने अर्ज़ किया। "तख़्लफ़्नी फिन्निसाये वस्सिबयान"। मुझे बच्चों और औरतों में आप छोड़ रहे हैं। فقال اما ترضىٰ ان تكون منى بمنزلة هارون من

موسىٰ غيران لا بنى بعدى- क्या तुम इस बात पर राज़ी नहीं कि जिस तरह मूसा अलैहिस्सलाम के बाद हारून ने मर्तबा लिया। ऐसे तुम रहो। सिवाए इसके कि मेरे बाद कोई नबी नहीं। और बुख़ारी व मुस्लिम ने तख़्रीज की सहल इब्न सअ़द से कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने ख़ैबर के दिन फरमाया कि कल ऐसे को झण्डा दूंगा जिसके हाथ पर अल्लाह फ़तह देगा। अल्लाह व रसूल उससे मुहब्बत करते हैं वह अल्लाह व रसूल से मुहब्बत करता है। रात भर लोग इस फ़िक्र में रहे कि सुबह झण्डा किसको दिया जाता है और सब के सब उसकी उम्मीद रखते थे तो आपने फरमाया अइना अ़ली। अली कहाँ हैं। कहा गया कि उनकी आँखें दुख रही हैं तो वह तशरीफ़ लाये तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने लोआबे दहन उनकी आँखों में डाला और उनके लिए दुआ की तो उन्हें शिफ़ा मिल गयी। गोया उन्हें कोई तकलीफ़ न थी चुनान्चे आपको झण्डा दिया गया और फतह हुई।

मुस्लिम ने सअ़द बिन वकास से तखरीज की। जब आयत मुबाहिला नाज़िल हुई तो रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने अ़ली, फ़ातमा, हसन व हुसैन को बुलाया। "फ़क़ाला अल्लाहुम्मा हाऊलाये अहली"।

तिर्मिज़ी ने अबू सरहहा व ज़ैद इब्न अरक़म से रवायत की है कि नबीए करीम सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया "मन कुन्तो मौलाहो फअली मौलाहो"। जिसका मैं मौला हूँ अ़ली उसके मौला हैं। और तिबरानी ने यूँ रवायत की اللهم وال من والاه وعاد من عاداه. ऐ अल्लाह जो उनसे मोहब्बत रखे तू उससे मोहब्बत कर और जो उनसे दुश्मनी करे उसको दुश्मन रख।

तिर्मिज़ी ने इब्न उमर से रवायत की। فقال رسول الله صلى الله عليه وسلم انت اخي فى الدنيا والآخره. مخلصا यानी तुम दुनिया व आखेरत में मेरे भाई हो।

मुस्लिम ने हज़रत अ़ली से तख़्रीज की। والذى فلق الحبة وبرأ التسمة انه لعهد البنى الامى انه لا يحبنى الامومن ولا يبعضى الامنافق. यानी मुझसे मोमिन मोहब्बत रखेगा और

मुनाफ़िक बोग्ज़ रखेगा। यह ही नबी उम्मी ने मुझसे फ़रमाया।

तिर्मिज़ी व हाकिम ने अ़ली से रवायत की। قال رسول الله صلى الله عليه وسلم انا مدينة العلم وعلى بابها. मैं इल्म का शहर हूँ। अ़ली उसके दरवाज़े हैं।

अबू यअ़ला और बज़ार ने सअ़द बिन वक़ास से तख़रीज की। من اذى عليا فقد اذانى जिसने अ़ली को अज़ीयत दी उसने मुझे तकलीफ़ पहुँचाया।

दूसरी हदीस में यूँ भी आया है कि दो जमाअ़तें अली की मोहब्बत में हलाक होंगी। एक हद से ज़्यादा मोहब्बत करने की वजह से और एक अ़दावत रखने की वजह से।

तिबरानी औसत ने उम्मे सलमा से तख़रीज की। क़ालत समेअ़ता रसूलल्लाहे सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम बक़ौले अ़ली مع القرآن والقرآن مع على ولا يفترقان حتى يرد على الحوض. अ़ली कुरआ़न के साथ हैं और कुरआ़न अ़ली के साथ। दोनों एक दूसरे से अलग न होंगे यहाँ तक कि हौज़ पर मुलाक़ात करेंगे।

(तारीखुल ख़ोलफ़ा)

हज़रत अ़ली की शुजाअ़त व इल्म व फ़ज़्ल

शुजाअ़त व दिलेरी में सारे अरब में कोई भी हज़रत अ़ली का मुक़ाबला नहीं कर सकता था। आपकी ग़ैर मामूली जुर्रात ही की बिना पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने असद उल्ला यानी शेरे खुदा का खिताब दिया था। जंगे ओहद में आपके सोलह ज़ख़्म आये थे। जंगे ख़ैबर में रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने आपको झण्डा देते हुए पेशनगोई की थी कि ख़ैबर अ़ली के ही हाथ फ़तह होगा। और आपकी यह पेशनगोई हर्फ़ ब हर्फ़ दुरूस्त साबित हुई.। हज़रत अ़ली की बहादुरी के कारनामों से तारीख़ें भरी पड़ी हैं।

जाबिर बिन अब्दुल्लाह का बयान है कि जंगे ख़ैबर में आपने अपनी पीठ पर ख़ैबर का दरवाज़ा उठा लिया और मुसलमान उसपर चढ़कर क़िले के अन्दर दाख़िल हो गये और ख़ैबर को फ़तह कर लिया। जब आपने इस दरवाज़े को फेंक दिया

Scanned by CamScanner

तो चालीस आदमी उसे घसीट कर दूसरी जगह डाल सके। इब्न असाकर रावी हैं कि हज़रत अली करमल्लाहो वजहहू ने जंगे ख़ैबर में क़िला ख़ैबर का दरवाज़ा उठाकर बहुत देर तक हाथ में रखा और उससे ढाल का काम लिया। और जिस वक्त किला फ़तह हो गया तो उसे फेंक दिया।

इल्म व फ़ज़्ल

हज़रत अली का दरजा इल्म व फ़ज़्ल में भी बेहद बुलन्द है अभी इससे पहले वह हदीस गुज़री है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने इरशाद फ़रमाया मैं इल्म का शहर हूँ अली उसके दरवाज़े हैं।

आप अपने ज़माने के सबसे बड़े सहर बयान, मोक़र्रिर और बेनज़ीर ख़तीब हुए हैं। शरई मसाएल के हल में आप अपना जवाब नहीं रखते थे। सईद बिन मुसय्यिब कहते हैं हज़रत उमर के पास जब पेचीदा मसायल आ जाते थे और हज़रत अली इत्तेफ़ाक से उस वक्त मौजूद न होते थे तो हज़रत उमर फ़ारूक खुदा से पनाह माँगा करते थे। मोबादा कहीं मसला ग़लत तय न हो जाये।

तिर्मिज़ी ने यह रवायत की है कि जब रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने सहाबियों में मवाख़ात यानी भाई चारा कराया तो हज़रत अली करमल्लाहो वजहहू रसूलल्लाह के पास रोते हुए आये और अर्ज़ किया या रसूलल्लाह आपने तमाम सहाबियों में तो भाई चारा करा दिया और मैं यूँ ही रह गया। इस पर रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फ़रमाया तुम दुनिया व आख़िरत में मेरे भाई हो। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को हज़रत अली से बेहद मोहब्बत थी चुनान्चे इरशादे रसूल है जिसका मैं दोस्त हूँ उसके अली भी दोस्त हैं।

हज़रत अली इन्तेहाई सादगी पसन्द थे आप ख़लीफ़ा होने के बाद भी ग़रीबाना ज़िन्दगी गुज़ारने में रूहानी लज़्ज़त महसूस फरमाते थे। आप इन्तेहा दरजा के सदाक़त शआर थे। सियासी जोड़ तोड़ से आपको सख़्त नफ़रत थी और सियासी जोड़ तोड़

से गुरेज़ करने ही की वजह से आपको अपने दौरे खिलाफ़त में बड़ी बड़ी दुश्वारियों का सामना करना पड़ा।

खिलाफ़ते अली

सैयदना उस्मान ग़नी की शहादत के बाद ही बलवाई बुरी तरह से मदीना मुनव्वरा पर छा गये थे। ऐसा लगता था कि मदीना पर उन्हीं की हुकूमत है। बलवाइयों का लीडर ग़ाफ़की बिन हरब ही का हुक्म मदीना पर चलता था और वही इमामत भी करता था। शहर के मोक्तदिर हज़रात अपनी जान व आबरू बचाने के लिए घरों में मोअतकिफ़ थे।

अब्दुल्लाह बिन सबा यहूदी जो इस फित्ना का अज़ीम लीडर भी था मदीना आ पहुँचा था और उसने मज़ीद हंगामें बरपा कराने के लिए बलवाइयों को उभारना शुरू कर दिया था।

मदीना के लोग बलवाइयों की शरारत से तंग आ चुके थे। मोअज़्ज़िीन मदीना बिल आख़िर हज़रत अली, हज़रत तलहा और हज़रत जुबैर के पास अलग अलग हाज़िर हुए और इन बुजुर्गों से दरख्वास्त की कि आप ख़िलाफ़त कुबूल फरमायें लेकिन इन सबने खिलाफ़त कुबूल करने से इन्कार कर दिया। इसी दौरान अब्दुल्ला बिन सबा यहूदी के उकसाने पर बलवाइयों ने यह शरारत आमेज़ एलान करा दिया! हम बाशिन्दगाने मदीना को मोतनब्बेह करते हैं कि अगर उन्होंने दो दिन के अन्दर नया ख़लीफ़ा मुन्तख़ब न कर लिया तो हम दो दिन के बाद अली, तलहा, जुबैर तीनों को कत्ल कर देंगे और जिसको चाहेंगे ख़लीफ़ा बना लेंगे। अब्दुल्ला इब्न सबा ने यह एलान यह सोच कर कराया था कि मुसलमानों के बाहमी इख़्तेलाफ़ की वजह से दो दिन के अन्दर ख़लीफ़ा का इन्तेख़ाब नामुमकिन है। जब दो दिन गुज़र जायेंगे तो पहले तो बलवाइयों को उकसा कर उन तीनों मुक्तदिर हज़रात का ख़ात्मा करा देगा। उसके बाद अपने मतलब का ख़लीफ़ा चुन लिया जायेगा जिसे कठपुतली बना कर जिस तरह चाहेंगे नचायेंगे।

इस ख़तरनाक एलान के बाद मुसलमानों में सरासेमगी पैदा हो गयी थी। वह घरों से निकल कर हज़रत अली, तलहा, जुबैर

Scanned by CamScanner

के पास जा पहुँचे और खेलाफ़त कुबूल करने पर बड़ा ज़ोर दिया। हज़रत तलहा व जुबैर ने यह सोचकर कि कहीं बलवाइयों के हाथों उनका भी वही अन्जाम न हो जो हज़रत उस्मान का हुआ है ख़िलाफ़त के कांटों भरे ताज को कुबूल करने से इन्कार कर दिया। हज़रत अली भी शुरू में इन्कार करते रहे लेकिन जब सहाबा केराम और अहले मदीना ने उन्हें मजबूर कर दिया तो वह इस ज़िम्मेदारी को कुबूल करने के लिए तैयार हो गये।

हज़रत अली जब मुसलमानों से बैअ़त करने के लिए 25 जुलहिज्जा 35 हिजरी को मस्जिदे नबवी में तशरीफ ले आये तो मस्जिदे नबवी मुसलमानों से खचा खच भरी हुई थी मगर हज़रत तलहा व जुबैर तशरीफ़ न रखते थे। उन्हें बुलवाया गया और मौलाये कायनात ने उन दोनों हज़रात से फ़रमाया कि आप में से जो भी ख़िलाफ़त का ख्वाहिशमन्द हो मैं उनके हाथ पर बैअ़त करने के लिए तैयार हूँ लेकिन दोनों हजरात इन्कार करते रहे तो फिर लोगों ने उन दोनों से मोतालबा किया कि आप हज़रत अली के हाथ पर बैअ़त कीजिए। उन्होंने कहा कि हम बैअ़त करने के लिए तैयार हैं लेकिन अली यह वादा करें कि किताबुल्लाह व सुन्नते रसूल पर चलेंगे और क़ातिलाने उस्मान से ज़रूर इन्तेक़ाम लेंगे। हज़रत अली ने इन बातों का इक़रार किया। अब उनके लिए कोई राह मज़र न थी लेहाज़ा पहले हज़रत तलहा ने और उसके बाद हज़रत जुबैर ने हज़रत अली के हाथ पर बैअ़त कर ली। फिर क्या था हज़ारों मुसलमान बैअ़त के लिए टूट पड़े जिनमें बलवाई भी शामिल थे।

ख़िलाफ़त के तीसरे दिन हज़रत अली ने एलान कराया कि मिस्र, कूफ़ा, बसरा और दूसरे सूबों से आये हुए आराब फौरन ही मदीना से वापस चले जायें। लेकिन अब्दुल्लाह इब्न सबा के कहने पर तमाम बलवाइयों ने इस हुक्म के मानने से इन्कार कर दिया और अब तक जो बलवाई हज़रत अली के आशिक़ बने हुऐ थे अब उनके दुश्मन हो गये और एक नया फित्ना उन्होंने डाल दिया।

चूँकि हज़रत अली की हुकूमत अभी मुस्तहकम न हो सकी

थी और न ही बाहर से फोजें आयी थीं इसलिए हज़रत अली को खामोश होना पड़ा।

हज़रत तलहा व हज़रत जुबैर ने यह चाहा था कि हमें कूफ़ा व बसरा का आमिल बना दिया जाय जिसको मसलेहतन हज़रत अली ने नहीं माना था। इस लिए इन दोनों हज़रात को हज़रत अली की जानिब से रन्जिश बढ़ गयी थी और दोनों कुबैदा खातिर हो गये थे।

अमीर मआ़विया और शाम

मुल्क शाम में हज़रत अमीर मआ़विया रज़िअल्लाहो अन्हो ने किसी तरह हज़रत उस्मान शहीद का खून आलूद पैरहन और आपकी अहलिया की कटी हुयी उंगली मदीना से हासिल कर ली थी और उनको दमिश्क़ की जामा मस्जिद में मिम्बर के ऊपर अवेज़ाँ करा दिया था, लोग जमाअ़त दर जमाअ़त आते थे और इन चीज़ों को देखकर ज़ार व क़तार रोते थे। हज़रत अली का क़ासिद जब अमीर मआ़विया के नाम ख़त लेकर पहुँचा तो उन्होंने तीन माह तक क़ासिद को दमिश्क में महज़ इस लिए रोक रखा ताकि वह अपनी आँख से अवाम के इस जोश व खरोश को देख ले जो हज़रत अली के खिलाफ़ लोगों में पैदा था।

अमीर मआ़विया को हज़रत अली ने शाम से माजूल करने का परवाना सुहेल इब्न हनीफ़ के हमराह भेजा था, लिखा था कि मैं तुमको माजूल करता हूँ और सुहैल इब्न हनीफ़ को शाम का गवर्नर बनाता हूँ। लेकिन अमीर मआ़विया ने उन्हें शाम में घुसने नहीं दिया। और वह शाम की सरहद तबूक ही से वापस चले आये।

फिर दुबारा हज़रत अली ने जब अपना क़ासिद भेजते हुए एक तरफ तो सैयदना अमीर मआ़विया से हुक्म अदूली का जवाब तलब किया था और दूसरी जानिब उनसे बैअ़त का मुतालबा किया गया था।

अमीर मआ़विया ने इस ख़त की कोई परवाह नहीं की और तीन महीना बाद हज़रत अली के क़ासिद के हमराह अपने क़ासिद

Scanned by CamScanner

को हज़रत अली के खत का जवाब देकर रवाना कर दिया। इस क़ासिद ने अमीर मआविया का सर बन्द लिफ़ाफ़ा हज़रत को पहुँचा दिया और हज़रत अली ने जब लिफ़ाफ़ा खोला तो उसमें कुछ भी न था यानी बिल्कुल ख़ाली था। बस यह ही अमीर मआविया का जवाब था। हज़रत अली सब कुछ समझ गये और उन्हें यक़ीन हो गया कि अब शाम का इलाक़ा जंग के बग़ैर ज़ेर नहीं हो सकता। लेहाज़ा अमीर मआविया के मुक़ाबले के लिए हज़रत अली ने जंगी तैयारियाँ शुरू कर दीं।

तारीख़ के मुताअले से पता चलता है कि हज़रत मआविया को बलवाइयों ने जाकर यह इत्तेला दी थी कि अली ने अपनी खिलाफ़त के लिए उस्मान ग़नी को शहीद करवाया है और अमीर मआविया को इस बात का यक़ीन इस लिए और भी हो गया क्योंकि क़ातिलाने उस्मान हज़रत अली ही के साथ थे। अलग़रज़ अमीर मआविया से यह इज्तेहादी ख़ता हुई थी वरना हक़ हज़रत अली ही के साथ था।

अम्माल की तब्दीली

चूँकि हज़रत अली ने ख़लीफ़ा मुन्तख़ब होते ही हज़रत उस्मान के ज़माना के तमाम अ़माल और वालियों की माज़ूली के एहकामात जारी कर दिये थे। हालाँकि लोग इसके मुख़ालिफ़ भी थे इसलिए आगे चलकर नेहायत ही ख़तरनाक नताएज बरामद हुए। अमीर मआविया का वाक़ेआ माक़ब्ल में आप पढ़ चुके हैं।

इसी तरह जब अम्मारह बिन शहाब कूफ़ा की गवर्नरी का चार्ज अबू मूसा अशअ़री से लेने के लिए रवाना हुए थे तो उनको भी नाकाम व नामुराद रास्ता से ही आना पड़ा। उस्मान बिन हनीफ़ जब बसरा पहुँचे तो बाज़ लोगों ने उन्हें अपना हाकिम तस्लीम कर लिया और बाज़ मोख़ालेफ़त पर आमादा हो गये। यमन का साबिक़ आमिल यअ़ला पहले ही ख़ज़ाना और रूपया लेकर फ़रार होकर मक्का चला गया था इसलिए अब्दुल्ला इब्न अब्बास वहाँ पहुँचकर आसानी के साथ हुकूमत संभाल ली। क़ैस इब्न सअ़द जब मिस्र पहुँचे तो बाज़ ने उनकी एताअ़त कुबूल कर

ली और बाज़ ने सुकूत अख्तियार कर लिया।

ग़रज़ हज़रत अ़ली को जदीद अ़माल के तक़र्रुरी में न सिर्फ नाकामी हुई इस क़ब्ल अज़ वक़्त तब्दीली से अच्छा ख़ासा एक नया हंगामा खड़ा हो गया।

जंग-ए-जमल

यह जंग 36 हिजरी जमादिल आख़िर में हुयी। हज़रत तलहा व ज़ुबैर हज़रत अ़ली से बैअ़त करने के बाद मदीना से चल दिये। उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा सिद्दीक़ा इस साल हज को गयी हुई थीं और उस वक़्त तक मक्का ही में थीं। हज़रत तलहा व ज़ुबैर ने हज़रत उस्मान की शहादत का पूरा वाक़या उनसे जाकर बयान किया और यह भी कहा कि बलवाइयों ने हज़रत अ़ली के हाथ पर बैअ़त कर ली है और मदीना में सख़्त फ़ित्ना बरपा है। आप उम्मुल मोमिनीन हैं आपकी पनाह में हमको अमन मिलेगा। आप कोशिश कीजिए कि यह फसाद किसी तरह दफ़ा हो। हज़रत अ़ली अभी इसमें मस्लेहत समझते हैं कि अभी क़ातिलाने उस्मान से क़ेसास लेने में सुकूत किया जाय।

हालाँकि इस सुकूत से बलवाइयों की क़ूवत बढ़ती जा रही है। हज़रत आयशा ने इन झगड़ों में पड़ने से अव्वलन इन्कार किया लेकिन हज़रत तलहा व ज़ुबैर ने उस आयते करीमा की तिलावत फरमाई जिसमें मुसलमानों मे इस्लाह की कोशिश का हुक्म दिया है। बिल आख़िर हज़रत आयशा को उनकी राय से इत्तेफ़ाक करना पड़ा और यह तय हुआ कि जब तक इन बलवाइयों का ज़ोर कम न हो जाय मदीना हरगिज़ न जाना चाहिए बल्कि अरब से बाहर कोई गोशए आफ़ियत तजवीज़ करनी चाहिए और किसी तरह हज़रत अ़ली को इन मुफ्सिदीन के गिरोह से अलग करके अपने साथ ले लेना चाहिए। फिर तमाम काम बन जायेगा। हज़रत उस्मान का केसास भी लिया जा सकेगा और इन बदमाशों की गोशुमाली भी हो जायेगी। चुनान्चा इस तजवीज़ के मुताबिक़ यह हज़रात बसरा की तरफ रवाना हुए। बलवाइयों ने यह सारा वाक़या हज़रत अ़ली से बड़ी रंग आमेज़ियों के साथ

Scanned by CamScanner

बयान किया और कहा कि इन हज़रात का मक़सद यह है कि आपको ख़िलाफ़त से माजूल कर दिया जाय और जो इन हज़रात का अस्ल मक़सद था उसका इल्म तक हज़रत अ़ली को न होने दिया।

हज़रत अ़ली भी बसरा की तरफ रवाना हुए। हज़रात हसनैन करीमैन व अब्दुल्लाह इब्न जाफ़र और अब्दुल्लाह बिन अब्बास इस फौज कशी के मुख़ालिफ़ थे मगर उनकी कुछ न चली। हज़रत अ़ली की फौज जब बसरे क़रीब पहुँच गयी तो आप ने हज़रत कअ़क़ाअ़ सहाबी को क़ासिद बना कर हज़रत तलहा व जुबैर के पास भेजा। हज़रत कअ़क़ाअ़ पहले उम्मुल मोमिनीन हज़रत आयशा से मिले। उन्होंने साफ फरमा दिया कि मेरा मकसद सिर्फ इस्लाह है कि किसी तरह भी यह फ़ित्ना व फसाद दूर हो और अमन क़ायम हो जाय। फिर हज़रत कअ़क़ाअ़ ने हज़रत तलहा व जुबैर से मुलाक़ात की और पूछा कि आप हज़रात ने इस्लाह की क्या सूरत तजवीज़ फरमायी। इन दोनों ने मुत्तफ़िक़ होकर कहा कि किसी तरह भी क़ातिलाने हज़रत उस्मान शहीद से क़ेसास लिया जाय। बग़ैर इसके अमन नहीं हो सकता। इस पर हज़रत कअ़क़ाअ़ ने फरमाया यह उसी वक़्त हो सकता है जब सब मुसलमान मुत्तफ़िक़ हो जायँ। लेहाज़ा सबसे पहले आप हज़रात हज़रत अ़ली से मिल जायें और बाहम मिलकर इसकी तदबीर की जिए। यह राय हज़रत जुबैर व तलहा ने भी पसन्द किया और हज़रत अ़ली के पास सुलह की खुशख़बरी लेकर हज़रत कअ़क़ाअ़ गये। वह भी बहुत ही खुश हुए। तीन रोज़ तक बाहम नामा व पयाम जारी रहा। तीसरे रोज़ शाम को यह बात तय हुयी कि सुबह को हज़रत अ़ली की मुलाक़ात हज़रत तलहा व जुबैर के साथ इस तरह से हो कि उन बलवाइयों में से कोई भी शख़्स इस मजलिस में शरीक न होने पाये। बलवाइयों को यह सख़्त नागवार हुआ क्योंकि वह समझते थे कि हज़रत अ़ली इस तन्हाई की मुलाक़ात के बाद हमारे क़ाबू से निकल जायेंगे। लेहाज़ा इन लोगों ने यह तजवीज़ सोचना शुरू कर दी कि कोई ऐसी बात करो जिससे यह सुलह टूट जाये और

मुलाक़ात न होने पाये।

अब्दुल्लाह इब्न सबा मशहूर मुनाफ़िक़ मूजिद मजहबे शिया भी इन्हीं बलवाइयों में न सिर्फ शामिल था बल्कि सबका सरदार था उसने यह राय दी। तुम लोग आज ही रात में लड़ाई शुरू कर दो और इसके बाद हज़रत अ़ली को इत्तेला दे दो कि इस फरीक़ ने यह अहद करके जंग शुरू कर दी। चुनान्चे ऐसा ही हुआ और उन मुफ्सिदीन बलवाइयों ने खुद बखुद पिछली रात में जंग शुरू कर दी। इसका फिर दूसरी तरफ से भी जवाब दिया गया। हज़रत अ़ली के लश्कर में यह शोहरत थी कि हज़रत तलहा व जुबैर ने बद अहदी की और इस जानिब यह मशहूर हुआ कि हज़रत अ़ली की तरफ से बद अहदी हुई। गरज़ यह कि बड़ी खूँरेज़ जंग हुई और दोनों तरफ से तेरह हज़ार मुसलमान कत्ल हुए। हज़रत तलहा और जुबैर भी इसी जंग में शहीद हो गये। इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहे राजेऊन। हज़रत तलहा तो मैदाने जंग में ही शहीद हो गये मगर हज़रत जुबैर किनाराकश हो कर वापस जा रहे थे रास्ते में उनको जरमूज़ ने शहीद कर दिया।

इब्न जरमूज़ हज़रत जुबैर को शहीद करके बउम्मीदे ईनाम हज़रत अ़ली के पास आया और कहने लगा कि अमीरूल मोमिनीन मुबारक हो कि मैंने आपके दुश्मन को क़त्ल कर दिया। हज़रत अ़ली ने पूछा किसको ? उसने कहा जुबैर को। आपने फरमाया कि तुझको खुशखबरी सुनाता हूँ कि तू दोज़ख़ में जायेगा। इब्न जरमूज़ ने कहा कि आपने खूब ईनाम दिया। आपने फरमाया मैं क्या करूँ, रसूले खुदा सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम ने फरमाया था कि يا على بشر قاتل ابن صفيته بالنار- यह सुनकर इब्न जरमूज़ ने खुदकुशी कर ली। यह देखकर कि हज़रत अ़ली ने बुलन्द आवाज़ से तकबीर पढ़ी कि देखो रसूले ख़ुदा ने जो फरमाया था कैसा सच निकला।

फिर हज़रत अ़ली का गुज़र हज़रत तलहा के पास से हुआ तो उनकी लाश मुबारक देखकर बैठ गये और फरमाया काश मैं आज से बीस बरस पहले मर गया होता। और हज़रत तलहा के हाथ को लेकर बार बार चूमते थे और फरमाते थे कि यह वह हाथ

Scanned by CamScanner

हैं जिसने रसूलल्लाह के ऊपर से मसाएब को दफ़ा किया है।

हज़रत तलहा का जब आख़िरी वक्त था तो एक शख़्स उनके पास से गुज़र रहा था। उससे उन्होंने दरियाफ़्त किया कि तू किस लश्कर का आदमी है उसने कहा अमीरूल मोमिनीन अली के लश्कर का। उससे हज़रत तलहा ने कहा अच्छा हाथ लाओ मैं तुम्हारे हाथ पर हज़रत अ़ली के लिए बैअ़त करूँ। चुनान्चा बैअ़त के बाद वह जाँ बहक़ हो गये। उस शख़्स ने यह वाक़्या हज़रत अ़ली से आकर बयान किया तो आपने तकबीर पढ़ी और फ़रमाया कि ख़ुदा ने तलहा को जन्नत में मेरी बैअ़त के बग़ैर ले जाना नहीं चाहा। *(अज़ालतुल ख़ोलफ़ा)*

इस जंग में चूँकि हज़रत आयशा के जमल को सबसे ज़्यादा अहमियत हासिल है इस लिए तारीख़ में यह लड़ाई जंगे जमल के नाम से मशहूर है। जंग के ख़ात्मा के बाद हज़रत आयशा के भाई मोहम्मद इब्न अबी बकर जो हज़रत के लश्कर में थे हज़रत अ़ली के हुक्म से कुजावह की रस्सियाँ काट कर और कुजावह उठवा कर अब्दुल्लाह बिन ख़ज़ाई के महल में ले गये। हज़रत आयशा इस महल में उतर गयीं। थोड़ी देर के बाद हज़रत अ़ली भी हाज़िर हो गये और परदा के पास आकर पूछा अम्मा जान ! मिज़ाज कैसा है ? हज़रत आयशा ने फ़रमाया "अच्छी हूँ" हज़रत अ़ली ने इस तकलीफ़देह वाक़्या पर इज़्हारे अफ़सोस करते हुए कहा। मैं दुआ करता हूँ कि ख़ुदा तआ़ला हमारी हर ग़ल्ती को माफ़ करे। हज़रत आयशा ने फ़रमाया। बेशक ख़ुदा हम सब की ग़ल्तियों को माफ़ करे। उसके बाद हज़रत अ़ली हज़रत आयशा से माज़रतख़्वाह हुए और हज़रत आयशा ने भी हज़रत अ़ली से माज़रत का इज़्हार किया।

हज़रत आयशा सिद्दीका के चन्द रोज़ आराम करने के बाद हज़रत अ़ली ने मोहम्मद इब्न अबी बकर को हुक्म दिया कि वह इज़्ज़त व एहतराम के साथ आप को मक्का पहुँचा दें। जब हज़रत आयशा मक्का जाने लगीं तो हज़रत अ़ली ने बसरा की चालीस औरतों को आपके हमरेकाब किया और ख़ुद कई मील तक सवारी के हमरेकाब रहे। हज़रत आयशा मक्का होते हुए

मदीना तशरीफ़ ले गयीं। इस जंग में अगरचे दोनों ही फ़रीक़ बेगुनाह थे फिर भी जो कुछ भी हुआ वह फ़ित्ना परदाज़ों की ग़लतफ़हमी पैदा कर देने की वजह से हुआ लेकिन हज़रत आयशा को सारी ज़िन्दगी इस वाक़्या का अफ़सोस रहा। जब भी इस वाक़्या का तज़किरा आता था तो आप ज़ार व क़तार रोने लगती थीं।

जंग जमल के बाद 36 हिजरी में हज़रत अ़ली ने अपना दारूल खेलाफ़त मदीना के बजाय कूफ़ा बना लिया। दारूल खेलाफ़ा की यह तबदीली हज़रत उस्मान की शहादत के सात माह बाद वुक़ूअ़ में आयी।

हज़रत अ़ली और अमीर मआ़विया

अदी इब्न हातिम ने हज़रत अ़ली के औसाफ़ यूँ बयान किये हैं। आप जो बात कहते थे मीज़ाने इद्ल पर पूरी उतरती थी। जो फ़ैसला करते थे मोहकम दलायल पर मुब्नी होता था। हिकमत आपके घर की लौंडी थी। और इल्म के चश्मे आपके दिल में हमेशा फूटते रहते थे। आप दुनिया और उसकी शान व शौकत से दूर भागते थे और रात और उसकी दहशतनाकी से उन्स करते थे। आप बेहद आँसू बहाने वाले और ख़ूब ग़ौर व फ़िक्र करने वाले थे। तन्हाई में अपने नफ़्स का मोहासबा किया करते थे और अपने पीछे ज़िन्दगी पर अफ़सोस (अगरचे वह तन्हाई पाकीज़ा थी।)

आपका लिबास नेहायत मामूली और खाना बहुत सादा होता था। गुज़ारा के लिए इतना ही लेते थे जो आपको बमुश्किल काफ़ी होता था। वह हम लोगों से किसी तरह इम्तियाज़ न रखते थे। अहले इल्म और अहले दीन की बहुत ताज़ीम करते थे। मिस्कीनों और मोहताजों से बहुत मोहब्बत से पेश आते थे। किसी ताक़तवर आदमी की शरारतों और ज़ुल्म से डरते न थे। और आप के दरबार से कोई कमज़ोर आदमी मायूस होकर न लौटता था। मैं एक दिन काफ़ी रात गये आपको मस्जिद की मेहराब में इस हालत में खड़ा देखा कि आपके आँसू टप टप आपकी दाढ़ी पर गिर रहे थे और उसे तर कर रहे थे। आप ज़ार व क़तार रो रहे थे। और

Scanned by CamScanner

बार बार कह रहे थे ऐ दुनिया मैं ने तुझे तीन तलाकें दीं, मैं तेरी तरफ किसी सूरत में भी मायल नहीं हो सकता।

जहाँ आप अपने नफ्स का शिद्दत से मोहासबा करते थे वहाँ अपने अ़म्माल की भी सख्ती से बाज़पुर्स करने में ताम्मुल न करते थे।

इब्न अब्बास और मुग़ीरा बिन शोअ़बा ने आपको मशविरा दिया कि मआ़विया इब्न आमिर और हज़रत उस्मान के मोक़र्रर किये हुए अ़म्माल को उस वक्त तक माज़ूल न करें जब तक वह आपकी बैअ़त में शामिल न हो जायें और लोगों का मौजूदा जोश व खरोश ठंडा न पड़ जाये लेकिन आपने ऐसा करने से साफ इन्कार कर दिया और फरमाया।

"मैं दीन में मोदानेहत से काम नहीं लेना चाहता।"

इसपर उन्होंने कहा अगर आपको इसपर असरार है तो कम अज़ कम मआ़विया को उनकी जगह पर रहने दें। बाकी को बेशक माज़ूल कर दें क्योंकि मआ़विया बड़ी जुर्रात वाले शख्स हैं। शाम पर उनका पूरा तसल्लुत है और शामी उनकी बात बहुत मानते हैं। मजीद बरआँ उन्हें हज़रत उमर ने शाम की वेलायत सुपुर्द की थी लेकिन आपने इन सब बातों को नज़र अन्दाज़ कर दिया और अपने इरादे पर मज़बूती से क़ायम रहे और फरमाया।

"खुदा की क़सम मैं मआ़विया को दो दिन के लिए भी आमिल नहीं रहने दूँगा।"

आपकी रहमदिली औरं नरमी का यह हाल था कि एक मर्तबा अहले शाम ने आपको दरिया पर उतरने और उसका पानी इस्तेमाल करने से रोक दिया था लेकिन इसके बावजूद जब आप को इसी किस्म का मौक़ा मिला तो आपने उन्हें दरिया से पानी लेने से मुतलकन मना नहीं फरमाया। इसी तरह आपने अपने साथियों को ताकीद कर दी थी कि कोई शख्स भी मआ़विया और उनके साथियों को गालियाँ न दे।

अ़म्माल पर भी कड़ी नज़र रखते थे। यज़ीद इब्न हजमा को रै का हेकम बनाया था। उसने वहाँ का खेराज मामूल से तीन हज़ार दीनार कम भेजा। हज़रत अ़ली ने उसे खत लिख कर

अपने पास बुलवाया और फरमाया। ग़बन शुदा माल वापस करो। उसने कहा मैंने एक दिरहम भी नहीं लिया। लेकिन हज़रत अ़ली ने उसकी बात का यक़ीन न किया। उसे दुर्रे लगवाये और अपने गुलाम सअ़द को हुक्म दिया कि इसको कैद कर दो। यज़ीद कैद खाने से किसी तरह छूट कर शाम में अमीर मआ़विया के पास पहुँचा। हज़रत अमीर मआ़विया ने उसकी बड़ी आवभगत की। वह उस वक्त तक शाम में मुक़ीम रहा जब तक सारा अरब अमीर मआ़विया के ज़ेरे नग़ीं न हो गया। जब हज़रत अमीर मआ़विया ईराक आये तो उसको भी अपने साथ लेते आये और उसको ईराक का वाली बना दिया।

यज़ीद इब्न सुफियान के वेसाल के बाद शाम की वेलायत उनके भाई हज़रत मआ़विया के हाथ आयी। अमीर मआ़विया ने वहाँ अपना गलबा व इक्तेदार बढ़ाना और अपनी हुकूमत को मज़बूत करना शुरू किया. आहिस्ता आहिस्ता शाम का तअल्लुक दारूल खेलाफा से बराए नाम रह गया और अगरचे वह इस्लामी ममलुकत का एक सूबा शुमार होता था लेकिन दूसरे सूबों से उसका इर्तेबात बहुत ही मामूली था। इस तरह अमीर मआ़विया बिला शिरकत गैरे शाम के मालिक और बअख्तियार हाकिम थे।

अमीर मआ़विया इन्तेहाई ज़ेरक और बुलन्द इन्सान समझे जाते थे। उन्हें यक़ीन था कि एक दिन ऐसा आयेगा जब उन्हें शाम की वेलायत से माज़ूल कर दिया जायेगा। इसलिए वह बड़ी एहतियात से तमाम हालात का जायज़ा लेते रहते थे और अपनी अक्ल व फिक्र को काम में लाकर ऐसे ज़राए तलाश करने में लगे रहते थे जिनसे वह अपने दुश्मनों को ज़ेर और उन्हें अपने इरादों में नाकाम कर सकें।

हज़रत उस्मान की अहदे खेलाफ़त में तो उन्हें कोई ख़तरा पैदा नहीं हुआ और वह बड़ी शान से शाम पर हुकूमत करते रहे लेकिन जब उनकी शहादत के बाद हज़रत अ़ली ख़लीफ़ा हुए तो उन्हें पहली बार ख़तरा का एहसास हुआ कि उन्हें शाम पर काबिज़ नहीं रहने देंगे बल्कि उन्हें माज़ूल करके ऐसे को वाली बनायेंगे जिसपर उन्हें मोकम्मल ऐतमाद होगा।

Scanned by CamScanner

चूँकि बलवाई अभी हज़रत अ़ली ही के साथ थे और फित्ना परदाज़ों ने उन्हें जाकर यह इत्तेला दी थी कि हज़रत अ़ली का (मआज़ अल्लाह) हाथ हज़रत उस्मान की शहादत में है इस लिए उनसे यह इज्तेहादी ग़लती हुई और उन्होंने बाज़ सर आवरदा अशख़ास को हज़रत अ़ली के ख़िलाफ भड़काना शुरू कर दिया और दूसरी जानिब हज़रत उस्मान के इन्तेक़ाम का मोतालबा शुरू कर दिया। उन्होंने हज़रत उमर बिन आस को मिला कर यह प्रोपगण्डा शुरू कर दिया कि हज़रत अ़ली ने इन्तेहाई नाज़ुक मौके पर हज़रत उस्मान का साथ छोड़ दिया जिसका नतीजा बाग़ियों के हाथों उनकी शहादत की सूरत में ज़ाहिर हुआ। यही वजह है कि अ़ली क़ातिलीने उस्मान से केसास लेते हुए घबराते हैं (जबकि हज़रत अ़ली खुद मौके की तलाश में थे और अभी बलवाइयों का पूरा तसल्लुत था। केसास लेना नामुमकिन था वरना कोई वजह न थी कि आप केसास लेने में ताख़ीर फरमाते)। हज़रत अमीर मआविया ने हज़रत उस्मान की खून आलूदा कमीज़ और आपकी अहलिया हज़रत नायला की कटी हुई अंगुली दमिश्क की जामा मस्जिद में लटका दी जिसका ज़बरदस्त असर हुआ। हज़ारों आदमी मिम्बर के इर्द गिर्द जमा हो कर इन चीज़ों को देखते और दहाढ़ें मार मार कर रोते और क़सम खाते कि जब तक वह हज़रत उस्मान का इन्तेक़ाम न ले लेंगे चैन से न बैठेंगे। इस तरह अमीर मआविया ने अहले शाम और आम्मतुल अरब की ताईद हासिल कर ली।

हज़रत अमीर मआविया की सियासत और हिकमते अमली को समझने के लिए उनका यह मकूला काफी है। मैं उस वक्त तक तलवार न उठाऊँगा जब तक मेरा कोड़ा काम देता रहेगा। उस वक्त तक अपना कोड़ा न उठाऊँगा जब तक मेरी ज़बान काम देती रहेगी। अगर मेरे हाथ में एक धागा हो जिसका दूसरा सिरा दूसरे लोगों के हाथ में हो तो यह धागा कभी नहीं टूट सकेगा क्योंकि जब दूसरे लोग उसे खींचेंगे तो मैं ढीला छोड़ दूंगा और जब दूसरे लोग ढीला छोड़ देंगे तो मैं खींच लूंगा। आपके इस कौल से बड़ी आसानी से यह नतीजा निकाला जा सकता है

कि आप बड़े हलीम ज़ेरक सियासत दाँ और मुश्किलात के वक्त अपने आसाब पर काबू पाने वाले शख्स थे।

आप बड़े मर्दुम शनास थे। हर शख्स की फितरी सलाहियतों को पहचान लेने का आप में बड़ा मलका था। अपनी सलाहियत से आपने बड़ा फायदा उठाया। आप अपने मुखालिफ़ीन को ज़ेर करने में उन्हें इस किस्म की मुश्किलात में मुब्तिला कर देते थे जिनसे निकलना उनके लिए आसान नहीं होता था। इस तरह वह उसपर फतह पा लेते। आपके हिलम व बुर्दबारी की मिसालें ज़बान ज़द खलाएक हैं। हकीकत यह है कि बुर्दबारी में बहुत कम लोग आपका मुकाबला कर सकते थे। हज़रत अमीर मआविया मुख्तलिफ़ इलाकों के हाकिम चुनने में भी बहुत अकलमंदी और ज़कावत से काम लेते थे जैसे हज़रत उमर बिन आस, ज़याद इब्न अबिया और मुग़ीरा बिन शोअ़बा। इन वालियों ने हज़रत मआविया की हुकूमत के इस्तेहकाम में बहुत मदद की। अमीर मआविया के खसायल अख्तियार कर के उन्होंने भी अपने मुख़ालिफों को ब आसानी ज़ेर कर लिया।

हज़रत अ़ली खुद भी अमीर मआविया की ज़कावत, बेमिस्ल अक़लमंदी और लोगों को अपनी तरफ खींचने के खुदा दाद मलका के क़ाएल थे चुनान्चे ज़याद इब्न अबिया जबकि आपका फरमाबरदार था उसको एक मकतूब में लिखा था कि

"मआविया की शख़्सियत इतनी ज़बरदस्त है कि उनके आगे और उनके पीछे उनके दायें और उनके बायें हर चहार तरफ से लोग उनकी तरफ खिंचे चले आते हैं।"

हज़रत अ़ली का ख़त अमीर मआविया के नाम

सुहैल इब्न हनीफ़ शाम से वापस आ चुके थे हज़रत अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो ने हुज्जाज बिन ग़ज़िया के हाथ एक ख़त हज़रत अमीर मआविया को भेजा जिसमें उन्हें बैअ़त की दावत दी। हज़रत अमीर मआविया ने इस ख़त का कोई जवाब न दिया।

हज़रत उस्मान की शहादत के तीन माह बाद उन्होने

Scanned by CamScanner

क़बीला बनी अबस के एक शख़्स को हज़रत अ़ली के पास भेजा। उसने आकर कहा –

"मैंने शाम में पचास हज़ार शयूख़ को इस हालत में छोड़ा है कि उनकी दाढ़ियाँ आँसुओं से तर हैं। उन्होंने हज़रत उस्मान की कमीज़ जिस पर ख़ून की छीटें पड़ी हुई हैं नेज़ों पर उठा रखी हैं और क़सम खा रखी है कि जब तक वह क़ातिलीने उस्मान से बदला न ले लेंगे चैन से न बैठेंगे।"

इस पर हज़रत अ़ली को पता चला कि अमीर मआ़विया उनकी ख़िलाफ़त भी तस्लीम न करेंगे और बग़ैर उनसे लड़े उनपर क़ाबू भी नहीं पाया जा सकता।

मारका सफ़्फ़ैन

अमीरूल मोमिनीन हज़रत अ़ली रज़िअल्लाहो तआ़ला अ़न्हो अपनी फौज लेकर कूफ़ा से निकले और मक़ामे नख़ीला में क़याम किया। यहीं आपने लश्कर को मुरत्तब किया और जज़ीरा के रास्ते शाम में दाख़िल हुए। जब अमीर मआ़विया को इसकी ख़बर पहुँची तो उन्होंने उमर बिन आस से मशविरा किया। उन्होंने राय दी कि दमिश्क से बाहर निकल कर हज़रत अ़ली से मुक़ाबला किया जाय चुनान्चे वह भी फौज लेकर बाहर निकल पड़े।

हज़रत अ़ली ने रेक़ा पहुँच कर दरियाए फोरात उ़बूर किया और आगे बढ़ कर सफ़्फ़ीन के मैदान में पड़ाव डाल दिया। अमीर मआ़विया का लश्कर वहाँ पहले ही से मौजूद था।

सफ़्फ़ैन में मुसलमानों की इस क़दर ज़बर दस्त अफवाज जमा हुयी थीं जिनकी नज़ीर इससे पहले नहीं मिलती। तारीख़ इसलाम पर नज़र डालने से पता चलता है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने में ग़ज़वए हुनैन के मौके पर जबकि मुसलमान अपनी कसरते तादाद पर नाज़ाँ थे। इस्लामी फौज की तादाद तकरीबन दस हज़ार थी। इसके बाद जब

मुसलमान ईरान फ़तह करने और रोमियों से मुक़ाबला करने निकले तो उनकी तादाद रफ़्ता रफ़्ता बढ़ती रही। जंगे यरमूक़ के मौके पर मुसलमान (46000) छियालीस हज़ार की तादाद में थे। और कादसिया और नेहाविन्द में इनकी तादाद तीस हज़ार थी लेकिन जंग सफ़्फ़ैन में हज़रत अ़ली का लश्कर सत्तर हज़ार और अमीर मआ़विया का लश्कर नब्बे हज़ार से कम न था।

हज़रत अ़ली ने अपनी तरफ़ से तीन अशख़ास को नुमाइन्दा बना कर भेजा ताकि सुलह की बात चीत हो वह अशख़ास यह थे।

बशीर इब्न उमर अन्सारी, सईद इब्न क़ैस हमदानी, शबस बिन रबइल तीमी।

इन्हें इसलिए भेज़ा ताकि दह भी आम्मतुल मुस्लेमीन की तरह बैअ़त कर लें। एक तवील गुफ़्तगू के बाद भी सुलह की बात कामयाब न हो सकी और शबस की तेज़ गुफ़्तगू सुनकर अमीर मआ़विया ने कहा। ऐ सख़्त मिज़ाज गँवार ! जाओ तुम्हारे और हमारे दरमियान तलवार ही फैसला करेगी।

चुनान्चे यह वफद नाकाम लौट आया और हज़र अ़ली रज़िअल्लाहो अ़न्हो की ख़िदमत में सब बातें गोश गुज़ार करा दीं। हज़रत अ़ली ने कोई चारा न देख कर अपनी फौज को तैयार होने का हुक्म दिया। चुनान्चे वह साज़ सामान से लैस होकर मैदाने जंग में आगई। ईराक़ियों और शामियों के तसादुम से हर शख़्स डरता था क्योंकि सबको यह ख़तरा था कि इस तरह बड़े पैमाने पर एतलाफ़े जान होगा। इस नागवार सूरते हाल से बचने के लिए हर लश्कर का एक एक दस्ता बारी बारी लड़ता था। लड़ाई की यह सूरत ज़िलहज्जा 36 हिजरी तक जारी रही। जब मोहर्रम का चाँद दिखाई दिया तो दोनों फौजों में लड़ाई बन्द हो गयी। अब दोनों फरीकों ने चाहा कि बाहम मुसालेहत की कोई सूरत निकल आये और दोनों तरफ से कासिदों की आमद व रफ़्त का सिलसिला शुरू हो गया।

इस दफ़ा हज़रत अ़ली की तरफ से सुलह की बात चीत करने के लिए यह लोग गये। अदी इब्न हातिम, यज़ीद इब्न कैस

Scanned by CamScanner

अलअरजई, ज़याद इब्न हफ़्सा, शबस इब्न रबई। जब यह लोग अमीर मआविया के पास पहुँचे तो अदी ने बात चीत शुरू की। उन्होंने कहा –

"ऐ अमीर मआविया ! तुम्हारे पास इत्तेहाद व इत्तेफ़ाक़ की दावत लेकर आये हैं अगर तुमने इसे कुबूल कर लिया तो मुसलमानों में सुलह हो जायेगी। उनके आपस के झगड़े मिट जायेंगे और उनमें खून व खराबा न होगा। देखो हज़रत अली तुम्हारे चचाज़ाद भाई, मुसलमानों के सरदार, उम्मत में सबसे अफ़ज़ल और साबेकूनल अव्वलून में हैं। तमाम लोगों ने उनकी बैअत कर ली है, अल्लाह तआला ने उन्हें सही रास्ता दिखलाया है लेकिन तुमने उसकी दावत कुबूल नहीं की और उन्हें ख़लीफ़ा तस्लीम नहीं किया। ऐ मआविया ! अपनी हट से बाज़ आ जा। कहीं तुम्हारे साथ भी वही न हो जो अहले जमल के साथ हो चुका है।"

हज़रत अमीर मआविया ने जवाब दिया –

"ऐ अदी ! अफ़सोस तुम मुझे धमकाने आये हो या सुलह की बात चीत करने। खुदा की क़सम मैं "इब्ने हरब" ज़बरदस्त जंगजू हूँ। जंग से मुतलकन नहीं डरता।" इसी तरह एक तवील गुफ्तगू का सिलसिला फिर चला लेकिन यह सेफ़ारत भी नाकाम हो गयी।

अब तक हज़रत अली की तरफ़ से सफ़ीर आ रहे थे। अब मआविया ने अपनी तरफ से अपनी तरफ़ से हबीब बिन मुस्लेमा अलफहरी, शरजील बिन अलसमत, और मअन बिन यज़ीद बिन अलअखनस को हज़रत अली के पास बात चीत करने के लिए भेजा। यह तीनों हज़रत अली के पास पहुँचे। हबीब ने गुफ़्तगू शुरू की। उन्होंने कहा –

"हज़रत उस्मान बिन अफ़्फ़ान ख़लीफ़ा बरहक़ थे। किताबुल्लाह अज़्ज़ व जल्ल पर अमल करते थे। खुदा तआला के एहकाम के पाबन्द थे। तुमने

उनकी ज़िन्दगी को पसन्द न किया और उनको जुल्म के साथ शहीद कर दिया। अगर तुम यह कहते हो कि हज़रत उस्मान के क़त्ल से बरी हो तो उनके क़ातिलीन को हमारे सुपुर्द कर दो। हम उन्हें हज़रत के केसास में क़त्ल कर देंगे। फिर मुसलमान जमा होकर जैसे चाहेंगे ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लेंगे।"

हज़रत अली ने फ़रमाया ? ——

"क्या खूब। तुम और मुझे माज़ूल करो। ख़ामोश रहो तुम इस मामले में बोलने के अहल नहीं हो।"

हबीब ने खड़े होकर कहा। "तुम मुझे इस हालत में देखोगे जो तुम्हें पसन्द न होगी।"

हज़रत अली ने कहा ———

"तुम मेरा कर ही क्या सकते हो ? तुम जितनी कोशिश कर लो अपने मक़सद में कामयाब न होगे।"

शरजील बिन अलसमत भी खड़े हो गये और कहने लगे– मैं भी वही कहूँगा जो मेरे साथी कह चुके हैं। क्या इसके सिवा भी आपके पास कोई जवाब है।"

हज़रत अली ने फ़रमाया ————

"बेशक"

इसके बाद आपने अल्लाह तआला की हम्द व सना बयान की। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम की बेअसत और उम्मत को हेदायत का जिक्र किया और फ़रमाया कि – "फिर अल्लाह तआला ने उनको अपनी तरफ़ उठा लिया। हज़रत अबू बकर आपके बाद ख़लीफ़ा हुए और नेहायत अच्छी तरह खेलाफत का काम सर अन्जाम दिया। आपके बाद हज़रत उमर ख़लीफ़ा हुए और उन्होंने भी ख़िलाफ़त का काम बड़ी खूबी से निभाया। इन दोनों ने अपने अपने अहदे ख़िलाफ़त को बहुत अच्छी तरह गुज़ारा और उम्मत में अद्ल व इन्साफ़ कायम किया। फिर हज़रत उस्मान ख़लीफ़ा हुए और कुछ लोगों ने बग़ावत करके उन्हें शहीद कर

Scanned by CamScanner

दिया। इसके बाद लोग मेरे पास आये। मैं उनके मामलात से बिल्कुल अलग था। उन्होंने मुझसे बैअ़त लेने को कहा लेकिन मैंने इन्कार कर दिया तो उन्होंने फिर बैअ़त लेने को कहा और कहा कि उम्मते मोहम्मदिया आपके अलावा किसी और शख़्स की खिलाफ़त पर राज़ी नहीं होगी और अगर आपने खिलाफ़त कुबूल न की तो उम्मत में तफरक़ा पैदा होगा। तभी मैंने उनकी बैअ़त कर ली। पहले तलहा व ज़ुबैर ने बैअ़त करने के बाद मेरी मुख़ालफ़त की और अब मआ़विया मेरी मुख़ालिफ़त में पेश पेश हैं हालाँकि न उन्हें इस्लाम में साबेक़ीयत का शरफ हासिल है। मैं तुम्हे किताबुल्लाह सुन्नते नबवी की तरफ दावत देता हूँ और बातिल को मिटाने और हक को ज़िन्दा करने की हिदायत करता हूँ।"

और एक तवील गुफ़्तगू के बाद यह तीनों वापिस हो गये और सुलह की बात मोकम्मल न हो सकी।

ख़ूँरेज जंग

दोनों फरीक़ अपने अपने कैम्पों में ठहरे हुए थे। हज़रत अ़ली का ख़याल था कि इस अर्सा में दलायल व बराहीन से मुख़ालिफ़ीन को क़ायल कर लिया जायेगा और शमशीर ज़नी की नौबत भी न आयेगी। लेकिन जब मोहर्रम गुज़र गया और आपको यक़ीन हो गया कि अब सुलह की मज़ीद गुफ़्त व शुनीद बेकार होगी तो आपने एक सिपेहसालार को हुक्म दिया कि वह फौज में दुबारा जंग शुरू होने की मुनादी करादे ताकि तमाम लोग तैयार हो जायें। ताहम आप इस बात के लिए तैयार न हुए कि अपने इरादा का फ़रीक़ मुख़ालिफ़ पर इज़्हार करने से पहले ही वह उन पर हमला कर दें। इसलिए आपने अपने एक आदमी को अहले शाम में इस ऐलान के लिए भेजा।

"अमीरूल मोमिनीन तुम्हें मुतलअ़ करते हैं कि उन्होंने तुमको हक़ की तरफ़ रूजूअ़ करने और सरकशी से बाज़ रहने की काफ़ी मोहलत दी। तुम्हारे सामने किताबुल्लाह पेश की और तुम्हें

इसकी तरफ बुलाया लेकिन तुम अपनी सरकशी से बाज़ न आये और हक़ व सदाक़त को क़ुबूल न किया। अब हम तुमसे दू बदू मुकाबला करेंगें।"

जब अमीर मआ़विया और उमर बिन आस को हज़रत अ़ली के इरादे का पता चला तो उन्होंने भी अपने लश्कर को जंग के लिए तैयार करना शुरू कर दिया। लड़ाई से पहले हज़रत अ़ली ने अपने साथियों को नसीहत करते हुए फरमाया ———

"जब तक फ़रीक़ मोख़ालिफ़ की तरफ़ से हमला शुरू न हो तो तुम हमला न करना और वह शिकश्त खा जायें तो किसी भागते हुए को क़त्ल न करना। किसी ज़ख़्मी को न मारना। किसी मुर्दा का मुसला न करना। जब तुम उन लोगों के खेमों के पास पहुँचो तो किसी औरत की बे परदगी न करना। घरों में दाखिल न होना। किसी का माल न लूटना। औरतों पर हाथ न उठाना ना ख़्वाह वह तुम्हारी बे इज़्ज़ती कर रही हों और तुम्हारे उमरा व बुज़ुर्गों को गालियाँ दे रही हों क्योंकि वह कमज़ोर जानों में शुमार होती हैं।"

शुरू में मामूली झड़पें होती रहीं। तरफ़ैन की जानिब से फौजों के छोटे छोटे दस्ते एक दूसरे के मुक़ाबला के लिए मैदाने जंग में आ जाते और आपस में मुक़ाबला शुरू हो जाता। रात होते ही यह दस्ते अपने अपने कैम्पों में वापस चले जाते। इन मुक़ाबलों में मक़तूलीन की तादाद बहुत कम थी। रात को जब सिपाही हथियार उतारते तो अकसर औक़ात एक दूसरे के खेमों में भी चले जाते और आपस में भाइयों की तरह प्यार व मोहब्बत की बातें करते। एक हफ़्ता तक जंग की यही कैफियत रही।

आख़िर हज़रत अ़ली ने पूरे लश्कर के साथ हमला करने का इरादा कर लिया। 8 सफ़र 37 हिजरी की रात में आपने अपनी फौज में एक पुरजोश तक़रीर की और इसलिए जंग में साबित क़दम रहने की तलक़ीन की।

अगले रोज़ दोनों फौजें आमने सामने ख़ड़ी हो गयीं।

Scanned by CamScanner

हज़रत अ़ली और अमीर मआ़विया दोनों ने जदीद उसूलों के मुताबिक़ अपने लश्कर को मुरत्तिब किया था। सबसे पहले अमीरूल मोमिनीन हज़रत अ़ली ने अपने लश्कर के दायें बाजू को आगे बढ़ाया जिसने अमीर मआ़विया के बायें बाजू के लश्कर पर हमला कर दिया। इस हिस्सा के लश्कर के सालार अरब के मशहूर बहादुर अब्दुल्लाह बिन बदील थे। यह हमला इतना ज़बरदस्त था कि अमीर मआ़विया के लश्कर के पाँव डगमगाने लगे और उसे क़ल्ब के सिपाहियों से मदद लेनी पड़ी। अब अमीर मआ़विया के मैसरह का पल्ला भारी हो गया और उन्होंने हज़रत अ़ली के मैमना पर जवाबी हमला करके उसे पीछे हटा दिया। सिर्फ मैमना का सालार अपने दो सिपाहियों के साथ साबित क़दम रहा और जी तोड़ कर लड़ता रहा। जब हज़रत अ़ली ने देखा कि उनका मैमना ग़ैर मोतवक्का तौर पर पीछे हट गया है तो वह क़ल्ब को साथ लेकर हज़रत अमीर मआ़विया के मैसरा के ऐन मुक़ाबिल आ गये लेकिन क़ल्ब भी इस हमला को न रोक सका। जब मैसरा ने यह हालत देखी उसकी ग़ैरत जोश में आयी और उसने आगे बढ़कर हजरत अमीर मआ़विया के मैसरा के हमले को रोकना शुरू कर दिया। हज़रत अ़ली भी उनके साथ थे और बनफ़्स नफ़ीस लड़ाई में हिस्सा ले रहे थे। इस वक्त हज़रत अ़ली अश्तर नख़ई के पास से गुज़रे और इरशाद फरमाया। अहले मैमना के पास जाओ और उनसे कहो तुम मौत से बच कर कहाँ तक भागोगे ? अश्तर ने हुक्म की तामील की। वह पीछे हटने वाली फौज के पास गया और अपनी ताक़ते लेसानी की वजह से उनके दिलों में नया जोश पैदा कद दिया। वह लोग इसक इर्द गिर्द इंकटठा हो गये। उन्हें लेकर वह मैदान जंग में पहुँचा और बड़ी शिद्दत के साथ अमीर मआ़विया की फौज पर हमला कर दिया। मआ़विया के सिपाही अश्तर के सामने न ठहर सके। आहिस्ता आहिस्ता अश्तर अमीर मआ़विया के ख़ेमों तक पहुँच गया। मआ़विया के सिपाहियों ने जुर्रात से काम लिया और एक बार फिर उन्हें पीछे हटा दिया। इसी रोज़ अम्मार बिन यासिर शहीद हुए जो हज़रत अ़ली की तरफ़ से जंग फरमा रहे थे और

जिनके बारे में इरशादे नबवी था। तकतलोकल फ़ेअतल बाग़ियह।

रात आ चुकी थी और दोनों लश्कर मैदान में एक दूसरे का मुकाबला कर रहे थे। कोई लश्कर दूसरे पर काबू न पा सका। और किसी को किसी पर फ़तह हासिल न हुई। रात को भी यह लड़ाई बन्द न हुई। हर फ़रीक फ़तह व ज़फ़र की उम्मीद रखता था। और चाहता था कि लड़ाई को जारी रखकर जल्द से जल्द फ़तह हासिल कर ले। यह रात अपनी शिद्दत में कादसिया की "लैलतुल हसीर" से मुशाबा थी। इस रात तरफ़ैन के क़सीर आदमी क़त्ल हुए। मोअर्रिख़ीन इस हवलनाक रात और उसके बाद आने वाली सुबह का हाल इस तरह बयान करते हैं।

> "इस लड़ाई में दोनों फरीक़ों को शदीद नुक़सान पहुँचा था। लेकिन अमीर मआ़विया के आदमियों की हालत नेहायत पतली थी। उन्होंने पहले तीरों और पत्थरों से काम लिया। जब वह ख़त्म हो गये तो नेज़े अपने हाथों में पकड़ लिये। जब वह भी टूट गये तो तलवारें निकाल लीं। उस वक्त मैदाने जंग में सिवाय तलवारों की खटखटाहट के और कुछ न सुनाई देता था। अश्तर कभी मैमना वालों के पास जाता और कभी मैसरा वालों के पास और अपनी जोशीली तक़रीरों से उनकी हिम्मत बढ़ाता था। इसी हालत में सुबह हो गयी लेकिन लड़ाई इसी तरह जारी रही। हज़रत अ़ली की फौज के हौसले खूब बढे हुए थे और उन्होंने अमीर मआ़विया के फौज की सफ़ों को तहे तेग़ कर दीं। हज़रत अ़ली भी मैदान में बराबर डटे हुए थे और अपने सिपाहियों को जोश दिला रहे थे। नौबत यहाँ तक पहुँची कि हज़रत अमीर मआ़विया और उन के साथी मैदान छोड़कर भागने की तैयारियाँ करने लगे। उस वक्त अमीर मआ़विया ने उमर बिन आस से कहा।

"इब्नुल आस कोई तदबीर बताओ। हम तो हलाक

Scanned by CamScanner

हो गये।"

उमर बिन आस ने कहा ———

"तुम्हारी फौज हज़रत अ़ली की फौज का मुक़ाबला नहीं कर सकती। सिर्फ एक तदबीर से उनका हमला रुक सकता है और वह यह कि तुम उनको किताबुल्लाह की तरफ बुलाओ कि वह हमारे और तुम्हारे दरम्यान फैसला करे और इस तरह रद्द व कुबूल दोनों ही सूरतों में उनके दरम्यान इख़्तेलाफ़ पैदा हो जायेगा।"

जब लड़ाई ने इन्तेहाई शिद्दत अख़्तियार कर ली और अमीर मआ़विया के फौजों की सफें तितर बितर हो गयीं तो अमीर मआ़विया ने अपने आदमियों को फौज के आगे भेजा जो नेज़ों के सरों पर कुरआन मजीद उठाये हुए थे। मालूम यह होता था कि हज़रत अ़ली की फौजों के सामने कुरआन मजीद पेश करने का फैसला रात ही हो चुका था क्योंकि जब सुबह हुई तो अमीर मआ़विया के आदमी कुरआन उठाये हुए थे और पुकार रहे थे।

"ऐ अहले ईराक़ ! अगर तुम हमें क़त्ल कर दोगे तो हमारे बाल बच्चों का क्या बनेगा और अगर हम तुम्हें क़त्ल कर देंगे तो तुम्हारे बाल बच्चों का क्या बनेगा। इसलिए लड़ाई से बाज़ आ जाओ।"

दमिश्क़ के मुस्हफ़े आज़म को दस आदमी नेज़ों पर उठाये हुए थे और पुकार रहे थे ———

"किताबुल्लाह के फैसला को अपने और हमारे दरम्यान कुबूल करो।"

अबू लाऔरूस्सलमा एक सफ़ेद ख़च्चर पर सवार था और अपने सर पर कुरआन मजीद उठाये हुए पुकार रहा था ——

"ऐ अहल ईराक़ यह खुदाये अज़्ज़ व जल्ल की किताब है। अपने और हमारे दरम्यान इसके फैसले को मन्जूर कर लो। अगर अहले शाम न रहे तो मग़रिबी सरहदों की हिफ़ाज़त कौन करेगा और अगर अहले ईराक़ न रहे तो मश्रिक़ी सरहदों

की हिफ़ाज़त किस तरह मुमकिन होगी।"

हज़रत अ़ली ने जंग बन्दी में तवक्कुफ़ किया। आपको पता था कि यह चाल है जो दुश्मन ने अपनी शिकश्त को क़रीब आते देखकर हमें धोखा देने के लिए चली है। लेकिन इस सवाल पर हज़रत अ़ली की फौज में इख़्तेलाफ़ पैदा हो गया। बाज़ कहते थे जंग जारी रखा जाय लेकिन बाज़ शिद्दत से मुख़ालिफ़ हो गये और तहकीम कुबूल करने के हक़ में थे।

हज़रत अ़ली ने कहा। इस मामला में खूब गौर व फिक्र की ज़रूरत है लेकिन हर तरफ से तहक्कुम कुबूल करने की आवाज़ें बुलन्द होने लगीं और बीस हज़ार फौज ज़िरह बकतर पहने और तलवारें लटकाये आपके पास आये। उनकी पेशानियाँ सजदों की वजह से स्याह हो गयीं थीं। उन लोगों में पेश पेश मसअ़द बिन क़दकी और ज़ैद बिन हसीन थे जो बाद में ख़ारजी हो गये थे। उन्होंने आपको अमीरूल मोमिनीन कहने के बजाय आपको आपके नाम से पुकारा और कहा। ऐ अ़ली ! आप किताबुल्लाह की फैसला की तरफ आइये जबकि आपको इसकी तरफ बुलाया जा रहा है और लड़ाई बन्द करने का हुक्म दीजिये वरना हम आपको भी इसी तरह क़त्ल कर देंगे जिस तरह हमने उस्मान बिन अफ़्फ़ान को क़त्ल किया था।

लड़ाई बन्द कर दी गयी और हज़रत अ़ली ने अशअ़स बिन कैस को अमीर मआ़विया के पास यह मालूम करने को भेजा कि वह क्या चाहते हैं। जब अशअ़स बिन कैस उनके पास पहुँचा तो मआ़विया ने उससे कहा। आओ हम और तुम इस फैसले की तरफ रुजूअ़ करें जिसका कुरआन मजीद में हुक्म दिया गया है। एक आदमी तुम अपनी तरफ से मुकर्रर करो और एक आदमी हम अपनी तरफ़ से मोक़र्रर करते हैं और फिर उनसे अहद लें कि वह किताबुल्लाह से बाहर न जायें फिर कुरआन के हुक्म के मुताबिक यह दोनों हमारे नेज़ाअ़ का फैसला जिस सूरत से करें उसे हम कुबूल कर लें।

हज़रत अमीर मआ़विया ने अपनी तरफ से उमर बिन आस को हकम तजवीज़ किया और हज़रत अ़ली की तरफ से अबू मूसा

Scanned by CamScanner

अशअ़री को हकम बनाने की तजवीज़ खुद हज़रत अ़ली के फौज के बाज़ अफ़राद ने पेश की। हज़रत अ़ली ने फ़रमाया। "तुमने मेरी बात पहले भी नहीं मानी। इस अम्र में मेरी राय के खिलाफ न चलो। मुझे अबू मूसा अशअ़री पर एतमाद नहीं है" लेकिन लोगों ने अबू मूसा ही को हेकम बनाने पर असरार किया जिस पर मजबूरन हज़रत अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो को उनकी बात माननी पड़ी।

तह़कीम के असरार

वाक़ेआ़त के छान बीन से जो जंग सफ़्फ़ैन के दरम्यान पेश आये पता चलता है कि फित्ना खुद बखुद नहीं फूट पड़ा बल्कि इसके लिए ज़मीन हमवार की गई। और इसके तार हिलाने वाले पसे पर्दा मौजूद थे। यह अम्र यक़ीनी है कि हज़रत अ़ली की तरफ फौज में कुछ ऐसे अनासिर मौजूद थे जिनका मक़सद सिर्फ हुकूमते इस्लामिया में तज़लज़ुल पैदा करना और मुसलमानों को इफ़्तेराक़ व इन्तेशार का शिकार बना कर उन्हें ज़क पहुँचाना चाहते थे। और उन्हीं फित्ना परदाज़ों की वजह से सफ़्फ़ैन में हज़रत अ़ली के लश्कर की फ़तह ऐन आखिरी वक्त में शिकश्त से बदल गयी जिसकी वजह से हज़रत अ़ली के मवक्किफ़ सख्त नुक़सान पहुँचा।

इस मौका पर मोअर्रिख़ीन की राय यह है कि हज़रत अ़ली के लश्कर के बाज़ सालारों को अमीर मआ़विया ने तह़रीस व तरग़ीब के ज़रिये मिला लिया था। उनमें अशअ़स बिन कैस का नाम सरे फेहरिस्त है।

बहुत मुमकिन है कि ऐसा किया गया हो क्योंकि अमीर मआ़विया की अक़लमन्दी और हज़रत उमर बिन आस के तदबीर से यह कोई बईद बात नहीं है क्योंकि मोतक़द्दमीन व मोतअख़्ख़िरीन मोअर्रिख़ मुत्तफ़िक़ हैं कि तमाम अरब में कोई शख्स सियासत, अक़लमन्दी, बोअ़्द नज़र, हुस्ने बसीरत और ज़कावत में दोनों से बढ़कर नहीं था।

तह़कीम की तकमील

हज़रत अ़ली ने तह़कीम कुबूल और लड़ाई बन्द करके अपनी फ़तह को शिकश्त में बदल दिया था और ऐसा करना भी उनके लिए ज़रूरी था क्योंकि अकसर मददगारों ने लड़ाई से हाथ उठा लिया था और धमकी दी गयी थी कि अगर तह़कीम कुबूल न की गयी तो इसका नतीजा अच्छा न होगा।

इसी तरह तह़कीम लिखा जाने लगा तो भी फित्ना परदाज़ों ही की शरारत से हज़रत अ़ली ने अपने नाम से अमीरूल मोमिनीन का लक़ब हज़फ़ किया जाना मन्जूर कर लिया जिसके नताएज आगे चलकर खतरनाक साबित हुए। सुलहनामा लिखा गया जिसकी एबारत मुन्दरजा ज़ैल थी।

"यह वह अह़दनामा है जिस पर अ़ली इब्न अबी तालिब ने अह़ले कूफ़ा और उनके साथियों और मआ़विया बिन अबी सुफ़ियान ने अहले शाम और उनके हामियों की तरफ से इत्तेफ़ाक किया है। तय यह पाया है कि हम दोनों खुदा और उसके कलाम के फैसले को मन्जूर करेंगे। किताबुल्लाह शुरू से आख़िर तक हमारे दरम्यान फैसला कुन होगी। वह जिस बात की हुक्म देगी उसकी तामील करेंगे और जिस बात से मना करेगी उससे रूक जायेंगे। अबू मूसा अशअ़री और उमर बिन आस हेकम मोक़र्रर किये गये हैं। वह किताबुल्लाह के हुक्म ही के मुताबिक फैसला करेंगे। अगर कोई बात किताबुल्लाह में न पायेंगे तो सुन्नते आदेला जामेआ़ की तरफ रुजूअ़ करेंगे।

अ़ली और मआ़विया की तरफ़ से दोनों हकमों को जान व माल की पूरी हिफ़ाज़त व इत्मिनान और वादा दिलाया जाता है कि उनके फैसले को नाफ़िज़ करने में उम्मते मोहम्मदिया उनकी मदद करेगी। उन्हें फैसला के लिए रमज़ान तक की मोहलत दी जाती है वह अपने फैसला क़ा एलान किसी ऐसी जगह करेंगे जो ईराक़ और शाम के वस्त में हो। ता फैसला जंग बन्द रहेगी। फरीक़ैन आज़ादी के साथ जहाँ चाहेंगे आयेंगे जायेंगे। अगर मज़ीद मुद्दत की ज़रूरत हो तो हेकम बाहमी फैसला से ताखैर भी कर

Scanned by CamScanner

सकते हैं। उनको जिस किसी शहादत की ज़रूरत होगी वह उनके तलब पर हाज़िर कर दिया जायेगा। और शहादतें क़लम बन्द की जायेंगी जो मुत्तफ़ेक़ा फैसला होगा उसपर फ़रीक़ैन को अमल करना होगा। अगर हेकम यह चाहेंगे कि उनके फैसला के वक्त मजमए आम न हो तो वह सिर्फ ख़ास अश्ख़ास को इस मौक़े पर तलब करेंगे। अगर फैसला के कब्ल किसी हेकम की वफ़ात हो जाये तो उसकी बजाय उसका फ़रीक़ दूसरे शख़्स को मुन्तख़ब कर के भेज देगा।"

यह अहदनामा 15 सफ़र 37 हिजरी या 13 सफ़र को लिखा गया और इस पर फ़रीक़ैन के दस्तख़त सब्त किये गये। इस सुलहनामा पर सफ़्फ़ैन का वाक़्या हाएलह इख़्तेताम पज़ीर हुआ। जिसमें नव्वे हज़ार मुसलमान को अपनी जानों से हाथ धोना पड़ा। मक़तूलीन की यह तादाद रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के अहद से लेकर इस वक्त की तमाम लड़ाइयों तक शोहदा की मजमुई तादाद से ज़्यादा थी। अगर खुदा न ख्वास्ता लड़ाई और तूल खींचती तो मुसलमानों की ताक़त बिल्कुल ही ख़त्म हो जाती और तमाम मफ़्तूहा मुमालिक उनके हाथ से निकल जाते।

ख़वारिज

मुश्रिकीन इस मअरका को हज़रत अमीर मआविया और हज़रत उमर बिन आस की बाज़ेह फ़तह क़रार देते हैं क्योंकि कुरआन मजीद का वास्ता देकर लड़ाई बन्द करने की जो तदबीर इन दोनों ने पेश की थी वह पूरी तरह कामयाब हो गयी थी और हज़रत अ़ली का लश्कर इस हालत में वापस हुआ था कि उसमें इख़्तेलाफ़ पैदा हो चुका था और मुख़्तलिफ़ गिरोह क़ायम हो चुके थे। अमीर मआविया का लश्कर गो मुकम्मल शिकश्त के बिल्कुल क़रीब था लेकिन उसकी सफ़ों में मुतलक़ इन्तेशार न था। जब वह वापस हुआ तो उसमें कोई झगड़ा या किसी किस्म का कोई इख़्तेलाफ़ न था।

हज़रत अ़ली की फौज में तफ़रक़ा पड़ चुका था। बाज़

लोगों का ख्याल था कि जो कुछ हुआ ठीक हुआ लेकिन एक जमाअत ने जिसके अकसर लोग बनी तमीम में से थे। इस फैसले की सख़्त मोख़ालफ़त करनी शुरू कर दी। उनका कहना था कि किसी शख़्स को किताबुल्लाह के बारे में हेकम नहीं बनाया जा सकता। उन लोगों ने अपना एक नया नारा भी ईजाद कर लिया। जो ला हकमा इल्लल्लाह था। जब हज़रत अ़ली कूफ़ा के क़रीब पहुँचे और "हरौरा" के मक़ाम पर आये तो बारह हज़ार ख़वारिज ने आगे जाने से इन्कार कर दिया। और यही ठहर गये। उन्होंने एलान कर दिया कि हमारा अमीरे लश्कर शवस बिन रुबइल्तमीमी होगा और अमीरे सलात अब्दुल्लाह बिन अलकवाईशकरी। हज़रत अ़ली ने पहले अब्दुल्लाह बिन अब्बास को उनके पास भेजा और उन्होंने वाजेह दलील हकम बनाने के जवाज़ पेश की। दलील यह थी। "वइन ख़िफ़्तुम शेक़ाक़ा बैनहोमा फ़बअसू हकमन मिन अहलेही व हकमन मिन अहलेहा इन योरीदा इस्लाहन युवफ्फेकिल्लाहो बैनहोमा।" (पा0 5, रू0 3) "यहकुमो बेही ज़वा अ़दलिन मिनकुम।" (पा0 7, रू0 3)

लेकिन ख़वारिज ने न माना इसी दरम्यान हज़रत अ़ली भी तशरीफ़ ले आये। और उन्हें समझा कर फिर कूफ़ा ले गये लेकिन ख़वारिज ने ग़लत मोक़दमात तरतीब देकर नताएज निकाले और एक नया अक़ीदा गढ़ कर नया मज़हब क़ायम कर लिया। और उम्मत के लिए एक रोज़ फ़ित्ना का सामान पैदा कर दिया। जहाँ पहले मुसलमानों के दो गिरोह थे अब तीन हो गये जिसमें से हर गिरोह दूसरे का खून बहाना जायज़ समझता था। पहले आपको सिर्फ अहले शाम से मुक़ाबला दरपेश था अब ख़वारिज से भी निपटना ज़रूरी हो गया।

ख़वारिज ने हज़रत अ़ली पर भी कुफ़्र का फ़तवा लगा दिया था और वह असहाबे जमल हज़रत आयशा, तलहा, ज़ुबैर रज़िअल्लाहो अन्हुम को भी बुरा भला कहते थे और अबू मूसा अशअ़री और उमर बिन आस और अमीर मआविया पर भी कुफ़्र के फ़तवे लगा दिये।

Scanned by CamScanner

मजलिसे मशावेरत

दौमतुल जन्दल या अज़रह के मक़ाम पर हकमैन का इज्तेमा हुआ। वक़्त मोक़र्ररा पर हज़रत अ़ली ने चार सौ आदमियों का एक गिरोह रवाना कर दिया जिनका अमीर शरीह बिन हानी अलहारसी को बनाया और इमामुस्सलात इब्न अब्बास को। अबू मूसा अशअ़री भी उनके साथ थे। अमीर मआ़विया ने भी चार सौ आदमियों के साथ उमर बिन आस को भेजा।

इस दरम्यान में अमीर मआ़विया के क़ासिद बराबर उनके ख़तूत उमर बिन आस तक लाते रहते थे मगर खुद क़ासिद को भी मज़मूने ख़त मालूम न होता था लेकिन जब हज़रत अ़ली का कोई ख़त हज़रत इब्न अब्बास को पहुँचता हो, अहले ईराक़ आप के पास जमा हो जाते कि अमीरूल मोमिनीन ने क्या लिखा है। अगर इब्न अब्बास छुपाना चाहते तो मुख़्तलिफ किस्म के क़यास अपने दिलों में क़ायम कर लेते। आख़िर हज़रत इब्न अब्बास ने फ़रमाया "आख़िर तुम्हारी अक़्लों को क्या हो गया है ? क्या तुम देखते नहीं कि मआ़विया का क़ासिद आता है और किसी को पता नहीं चलता कि वह किस मज़मून का ख़त लाया है। वह वापिस जाता है और किसी को मालूम नहीं होता कि क्या ख़त लेकर गया है, न वहाँ शोर होता है न शोअ़ब। एक तुम हो कि मुझे चैन नहीं लेने देते।"

इस मौक़े पर मुन्दरजा ज़ैल सहाबा भी मौजूद थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन ज़ुबैर, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हेशाम मख़ज़ूमी, हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा और हज़रत सअ़द बिन वक़ास रज़िअल्लाहो अन्हुम।

एक तवील गुफ़्तुगू के बाद दोनों में यह तय पाया कि दोनों को माज़ूल करके किसी तीसरे को ख़लीफ़ा बना लिया जाय ताकि उम्मत में इख़्तेलाफ़ व इन्तेशार ख़त्म हो जाय।

उमर बिन आस ने कहा "आख़िर आपकी क्या राय है।"

अबू मूसा ने कहा "मेरी राय यह है कि हम दोनों को

माज़ूल कर दें उसके बाद मुसलमान आपस में मशविरा कर के जिसको चाहेंगे ख़लीफ़ा बना लेंगें।"

उमर बिन आस ने कहा "मेरी भी यही राय है।"

इस बात चीत में उमर बिन आस का यह तरीक़ा था कि वह पहले अबू मूसा अशअ़री को बोलने का मौक़ा देते थे और हर बात में उनको मुक़द्दम रखते थे। आप उनसे कहते थे। "आप रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जलीलुल क़द्र सहाबी हैं। मुझसे ज़्यादा उमर रसीदा हैं। इसलिए पहले आप बोलिए इसके बाद मैं कुछ अर्ज़ करूँगा।"

ऐसा करने से उनकी ग़रज़ यह थी कि अबू मूसा की ज़बान से हज़रत अ़ली को माज़ूल करने का लफ़्ज़ निकलवा लिया जाय। चुनान्चा उनकी यह ग़रज़ पूरी हो गयी। सिर्फ लोगों में एलान करना बाक़ी था। जो इन दोनों में तय पाया था। चुनान्चे उमर बिन आस ने हस्बे मामूल अबू मूसा अशअ़री को पहले खड़ा किया और वह कहने लगे।

"ऐ लोगो ! हमने इस मामला पर खूब गौर व ख़ौज़ किया। आख़िर इस नतीजा पर पहुँचे कि उम्मत की फ़लाह व बहबूद के लिए इससे ज़्यादा कोई आसान राह नहीं कि हम अ़ली और मआ़विया दोनों को माज़ूल कर दें और उम्मत पर मामला छोड़ दें कि वह जिसको चाहे ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर लें। सो मैंने अ़ली और मआ़विया को माज़ूल कर दिया है अब मामला मुसलमानों के सुपुर्द है वह जिसको खिलाफ़त का अहल समझें ख़लीफ़ा मोक़र्रर करें।"

जब अबू मूसा तक़रीर ख़त्म कर चुके तो उमर बिन आस हम्द व सना के बाद कहने लगे। "अबू मूसा ने जो कुछ कहा वह सब आप लोगों ने सुन लिया। उन्होंने अपने साहब (अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो) को माज़ूल कर दिया। मैं भी उनको माज़ूल करता हूँ। लेकिन अपने साहब (मआ़विया रज़िअल्लाहो अन्हो) को क़ायम रखता हूँ क्योंकि वह हज़रत उस्मान के वली और सच्चे जानशीन हैं।"

इस पर दोनों फ़रीक़ में तल्ख़ कलामी हुई और हथियार उठा लिया और आपस में उलझ पड़े। शाम वालों ने चाहा कि अबू

Scanned by CamScanner

मजलिसे मशावेरत

दौमतुल जन्दल या अज़रह के मक़ाम पर हकमैन का इज्तेमा हुआ। वक़्त मोक़र्ररा पर हज़रत अ़ली ने चार सौ आदमियों का एक गिरोह रवाना कर दिया जिनका अमीर शरीह बिन हानी अलहारसी को बनाया और इमामुस्सलात इब्न अब्बास को। अबू मूसा अशअ़री भी उनके साथ थे। अमीर मआ़विया ने भी चार सौ आदमियों के साथ उमर बिन आस को भेजा।

इस दरम्यान में अमीर मआ़विया के क़ासिद बराबर उनके ख़तूत उमर बिन आस तक लाते रहते थे मगर खुद क़ासिद को भी मज़मूने ख़त मालूम न होता था लेकिन जब हज़रत अ़ली का कोई ख़त हज़रत इब्न अब्बास को पहुँचता हो, अहले ईराक़ आप के पास जमा हो जाते कि अमीरूल मोमिनीन ने क्या लिखा है। अगर इब्न अब्बास छुपाना चाहते तो मुख़्तलिफ किस्म के क़यास अपने दिलों में क़ायम कर लेते। आख़िर हज़रत इब्न अब्बास ने फ़रमाया "आख़िर तुम्हारी अक़्लों को क्या हो गया है ? क्या तुम देखते नहीं कि मआ़विया का क़ासिद आता है और किसी को पता नहीं चलता कि वह किस मज़मून का ख़त लाया है। वह वापिस जाता है और किसी को मालूम नहीं होता कि क्या ख़त लेकर गया है, न वहाँ शोर होता है न शोअ़ब। एक तुम हो कि मुझे चैन नहीं लेने देते।"

इस मौक़े पर मुन्दरजा ज़ैल सहाबा भी मौजूद थे।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन उमर, हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर, हज़रत अब्दुर्रहमान बिन हारिस बिन हेशाम मख़ज़ूमी, हज़रत मुग़ीरा बिन शोअ़बा और हज़रत सअ़द बिन वक़ास रज़िअल्लाहो अन्हुम।

एक तवील गुफ़्तुगू के बाद दोनों में यह तय पाया कि दोनों को माज़ूल करके किसी तीसरे को ख़लीफ़ा बना लिया जाय ताकि उम्मत में इख़्तेलाफ़ व इन्तेशार ख़त्म हो जाय।

उमर बिन आस ने कहा "आख़िर आपकी क्या राय है।"

अबू मूसा ने कहा "मेरी राय यह है कि हम दोनों को

माज़ूल कर दें उसके बाद मुसलमान आपस में मशविरा कर के जिसको चाहेंगे ख़लीफ़ा बना लेंगें।"

उमर बिन आस ने कहा "मेरी भी यही राय है।"

इस बात चीत में उमर बिन आस का यह तरीक़ा था कि वह पहले अबू मूसा अशअ़री को बोलने का मौक़ा देते थे और हर बात में उनको मुक़द्दम रखते थे। आप उनसे कहते थे। "आप रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के जलीलुल क़द्र सहाबी हैं। मुझसे ज़्यादा उमर रसीदा हैं। इसलिए पहले आप बोलिए इसके बाद मैं कुछ अर्ज़ करूँगा।"

ऐसा करने से उनकी ग़रज़ यह थी कि अबू मूसा की ज़बान से हज़रत अ़ली को माज़ूल करने का लफ़्ज़ निकलवा लिया जाय। चुनान्चा उनकी यह ग़रज़ पूरी हो गयी। सिर्फ लोगों में एलान करना बाक़ी था। जो इन दोनों में तय पाया था। चुनान्चे उमर बिन आस ने हस्बे मामूल अबू मूसा अशअ़री को पहले खड़ा किया और वह कहने लगे।

"ऐ लोगो ! हमने इस मामला पर खूब गौर व ख़ौज़ किया। आख़िर इस नतीजा पर पहुँचे कि उम्मत की फ़लाह व बहबूद के लिए इससे ज़्यादा कोई आसान राह नहीं कि हम अ़ली और मआ़विया दोनों को माज़ूल कर दें और उम्मत पर मामला छोड़ दें कि वह जिसको चाहे ख़लीफ़ा मुन्तख़ब कर ले। सो मैंने अ़ली और मआ़विया को माज़ूल कर दिया है अब मामला मुसलमानों के सुपुर्द है वह जिसको खिलाफ़त का अहल समझें ख़लीफ़ा मोक़र्रर करें।"

जब अबू मूसा तक़रीर ख़त्म कर चुके तो उमर बिन आस हम्द व सना के बाद कहने लगे। "अबू मूसा ने जो कुछ कहा वह सब आप लोगों ने सुन लिया। उन्होंने अपने साहब (अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो) को माज़ूल कर दिया। मैं भी उनको माज़ूल करता हूँ। लेकिन अपने साहब (मआ़विया रज़िअल्लाहो अन्हो) को क़ायम रखता हूँ क्योंकि वह हज़रत उस्मान के वली और सच्चे जानशीन हैं।"

इस पर दोनों फ़रीक़ में तल्ख़ कलामी हुई और हथियार उठा लिया और आपस में उलझ पड़े। शाम वालों ने चाहा कि अबू

Scanned by CamScanner

मूसा को पकड़ लें लेकिन उन्होंने घोड़े पर सवार होकर मदीना का रूख़ किया और शामियों के हाथ न आये।

हकमैन की गुफ़्तुगू से यह नतीजा निकलता है कि उमर बिन आस इस में फ़तहयाब हो गये और इसी का नतीजा था कि हज़रत अमीर मआविया के क़दम शाम में और दूसरे इलाक़े में भी अच्छी तरह जम गये।

मज़ीद बरआँ इस फैसले की वजह से उमर बिन आस ने अमीर मआविया के लिए काफ़ी वक़्त फ़राहम कर दिया जिसमें वह अपने लश्कर की तन्ज़ीम कर सकते थे। हज़रत मआविया ने इस लश्कर से खूब फ़ायदा उठाया और अपने लश्कर को खूब मुनज़्ज़म और अच्छी तरह मुसल्लह कर लिया। इसी का नतीजा था कि जब हज़रत अ़ली ने दुबारा शाम पर हमला किया तो हज़रत अ़ली की फौज की हज़रत मआविया के सामने कुछ पेश न जा सकी।

ख़्वारिज से जंग

हज़रत इब्ने अब्बास और शरीह ने हज़रत अ़ली को तमाम बातों की इत्तेला दी और हज़रत अ़ली को एहसास हुआ कि अब मामला हद से गुज़र चुका है लेहाज़ा उनको पहल करके इस फ़ित्ने को बढ़ने से रोकना चाहिए लेकिन ख़्वारिज की बग़ावत राह में हायल हो गयी और हज़रत अ़ली को मआविया से जंग करने के बजाय ख़्वारिज का क़िला क़मअ़ करना पड़ा।

अमीर मआविया से दुबारा मुक़ाबला करने के लिए हज़रत अ़ली के क़रीब एक लश्करे अज़ीम फिर इकट्ठा हो चुका था। जब बसरा, कूफ़ा, मदायन के लश्कर के बाज़ अफ़राद यह कह रहे हैं कि हमें पहले हरौरियों से (ख़्वारिज) जंग करना चाहिए। और उन्हें शिकश्त देकर उनका कसबल निकालना चाहिए। उनसे फ़ारिग होकर हम इत्मीनान से शाम की तरफ कूच करेंगे। लेकिन हज़रत अ़ली ने मौजूदा सूरते हाल पर रोशनी डालते हुए समझाया कि पहले शाम ही चलना चाहिए। लोगों को मालूम था कि हज़रत अ़ली के एहकाम की खिलाफ़ वरज़ी का कितना तबाह

कुन नतीजा निकल चुका है। इसलिए वह कहने लगे ——

"अमीरूल मोमिनीन आप जहाँ चाहें हमें ले चलें। हमें कोई उज़्र न होगा।"

इसी दौरान में यह वाक़या ज़ुहूर पज़ेर हुआ कि एक बुज़ुर्ग हज़रत अब्दुल्लाह बिन खुबाब अपनी हामला बीवी को साथ लिए चले जा रहे थे कि ख़्वारिज से उनका सामना हो गया। उन लोगों ने उन्हें पकड़ लिया और कहा। यह कुरआन जो आपके गले में लटका हुआ है आपके क़त्ल का हुक्म देता है। आपने कहा मैं तो मुसलमान हूँ। अब्दुल्लाह बिन खुबाब मेरा नाम है। एक तवील गुफ़्तुगू के बाद उन्होंने पूछा। अ़ली के मुतअ़ल्लिक़ तहक़ीम से क़ब्ल व बाद आपकी क्या राय है। अब्दुल्लाह ने जवाब दिया। "अ़ली तुम्हारे मुक़ाबले में किताबुल्लाह को ज़्यादा समझने वाले और उसपर अ़मल करने वाले है।" ख़्वारिज ने कहा। तुम अपनी नफ़्सियाती ख्वाहिशात की पैरवी करके यह शहादत दे रहे हो। और वह उन्हें पकड़ कर नहर के क़रीब ले गये और ज़बह कर दिया। इसी तरह आपकी बीवी का पेट चाक करके उन्हें भी क़त्ल कर दिया। क़बीला तै के तीन औरतों और उम्मे सनान सैदाविया को भी इन ज़ालिमों ने पकड़ कर मार डाला।

जब हज़रत अ़ली को अब्दुल्लाह बिन खुबाब और तै के तीन औरतों के क़त्ल की ख़बर मिली तो आपने अपने एक क़ासिद को सही ख़बर लाने को भेजा लेकिन उन्होंने उस क़ासिद को भी क़त्ल कर डाला। जब क़ासिद के क़त्ल की ख़बर पहुँची तो हज़रत अ़ली के साथियों ने कहा ——

"अमीरूल मोमिनीन ! अगर हमने ख़ारजियों को छोड़ दिया तो कहीं ऐसा न हो कि यह हमारे पीछे हमारे अह्ल व अ़याल पर हमला करके उन्हें क़त्ल न कर दें इस लिए हमें पहले इनका सर कुचलना चाहिए। इसके बाद हम शाम चलेंगे।"

हज़रत अ़ली के पास अब इसके अलावा कोई चारा न था और हज़रत अ़ली ने पहले ख़्वारिज को वअ़ज़ व नसीहत से समझाना चाहा लेकिन वह एक न माने। आख़िर एक दिन हज़रत अ़ली ने हज़रत अय्यूब अन्सारी को एक सफ़ेद झण्डा देकर भेजा

Scanned by CamScanner

और एलान करा दिया।

"तुममें से जिसने अब्दुल्लाह बिन खुबाब और दूसरे मुसलमानों के क़त्ल में हिस्सा नहीं लिया है वह अगर इस झण्डे के नीचे आ जाये वह अमन में है जो शख़्स कूफ़ा या मदायन चला जाये वह अमन में है।"

यह एलान सुनकर एक जमाअ़त ख़वारिज को छोड़ कर चली गयी और एक जमाअ़त हज़रत अ़ली के झण्डे के नीचे आ गयी। अब इब्न वहब के पास सिर्फ दो हज़ार आठ सौ के क़रीब आदमी रह गये। आख़िर जंग शुरू हुई। इस जंग में इब्न वहब और उसके अकसर साथी मारे गये। और इस तरह ख़वारिज का फित्ना खत्म हुआ।

हज़रत अ़ली शाम जाना चाहते थे लेकिन साथियों ने कहा। हमारे तीर ख़त्म हो गये। तलवारें कुन्द पड़ गयीं। तीरों के फल टूट गये इसलिए फिलहाल वापस चलें ताकि हम पहले से भी ज़्यादा तैयारी करके अहले शाम के मुक़ाबला के लिए निकलें। आख़िर मायूस होकर हज़रत अ़ली ने शाम जाने का इरादा तर्क कर दिया।

मिस्र पर अमीर मआ़विया का कब्ज़ा

अमीर मआ़विया ने उमर बिन आस को एक फौज देकर मिस्र पर कब्ज़ा करने के लिए भेजा जिसमें वह कामयाब हो गये और मोहम्मद इब्न अबी बकर जो हज़रत अ़ली की तरफ से मिस्र पर वाली थे क़त्ल कर दिये गये। उमर बिन आस ने 38 हिजरी में मिस्र पर क़ब्ज़ा किया। हज़रत अमीर मआ़विया ने उमर बिन आस को मिस्र की वेलायत सौंप दी। हज़रत उमर बिन आस को अगरचे मिस्र की वेलायत मिल गयी थी लेकिन वह अकसर शाम आते रहते थे। मिस्र पर हुकूमत करते हुए अभी चार ही साल गुज़रे थे कि अल्लाह तआ़ला की तरफ से बुलावा आ पहुँचा और 42 हिजरी में यह अज़ीमुश्शान सियासतदाँ उठ गया। "इन्ना लिल्लाहे वइन्ना इलैहे राजेऊन।"

हज़रत अ़ली की शहादत

40 हिजरी का ज़िक्र है कि अब्दुर्रहमान बिन मुलजिम अलमुरादी, बरक बिन अब्दुल्लाह, उमर बिन बकर अलतमीमी तीन मशहूर ख़ारजी एक दूसरे से मिले। और आलमे इस्लाम के नागुफ़्ता ब हालत का तज़केरा करने लगे। बात चीत के दरम्यान जंग नहरवान (ख़वारिज का क़त्ल) का ज़िक्र आ गया और कहने लगे कि अपने भाइयों के क़त्ल के बाद अब ज़िन्दगी का कोई मज़ा बाक़ी न रहा। अब हमारे लिए यही एक रास्ता है कि हम उन लोगों को जिन्होंने तमाम आलमे इस्लाम में एक फ़साद बरपा कर रखा है क़त्ल कर दें। इस तरह जहाँ हम मुसलमानों को एक अज़ीम फ़ित्ना से निजात दिला देंगे वहाँ अपने भाइयों का इन्तेक़ाम भी ले लेंगे।

इब्न मुलजिम जो अहले मिस्र में से था ने कहा। मैं अ़ली को क़त्ल करने का ज़िम्मा लेता हूँ। फिर बरक बिन अब्दुल्लाह ने मआ़विया को क़त्ल करने का ज़िम्मा लिया और उमर बिन बक़र ने उमर बिन आस को क़त्ल करने की हामी भरी। इन तीनों ने बाहम अहद व पैमान किये और क़समें खाईं कि अपने अपने मुफ़विज़ह कामों से किसी तरह पीछे न हटेंगे और या इन तीनों को क़त्ल कर देंगे या खुद मारे जायेंगे। इस काम के लिए रमज़ानुल मुबारक की 17 तारीख़ मोक़र्रर हुई। क़ौल व क़रार के बाद उन्होंने अपनी तलवारें ज़हर में बुझाईं और तीनों अपना अपना काम सर अन्जाम देने के लिए कूफ़ा, मिस्र और दमिश्क रवाना हो गये।

इब्न मुलजिम कूफ़ा आया और बनी कुन्दा में ठहरा जो दर परदा ख़वारिज के हामी थे। तीम रूबाब के एक औरत क़ताम नामी पर आशिक़ हो गया। वह बहुत हसीन व जमील औरत थी। उसके बाप और भाई को भी हज़रत अ़ली ने जंग नहरवान में क़त्ल किया था जिसकी वजह से उसके दिल में हज़रत अ़ली की तरफ से शदीद अ़दावत थी। उसने क़ताम को निकाह का पैग़ाम दिया। क़ताम ने कहा मुझे तुमसे निकाह करने में कोई उज़्र नहीं है लेकिन महर वह होगा जो मैं मोक़र्रर करूँगी। इब्न मुलजिम ने

Scanned by CamScanner

कहा वह क्या होगा।

क़ताम ने कहा "तीन हज़ार दिरहम, एक गुलाम, एक लौंडी और अ़ली इब्न अबी तालिब का क़त्ल।"

इब्न मुलजिम ने कहा। तुम्हारा महर मुझको मन्जूर है। इब्न मुलजिम ने क़बीला के एक शख़्स शबीब बिन बजरह के पास आया और उससे कहा। "क्या तुम दुनिया व आख़ेरत का शरफ़ हासिल करना चाहते हो।" तो उसने पूछा किस तरह ?

इब्न मुलजिम ने कहा। "अ़ली इब्न अबी तालिब को क़त्ल करके।"

शबीब ने यह सुनकर कहा। यह कैसे हो सकता है। इब्न मुलजिम ने कहा मैं मस्जिद में छुपकर बैठ रहूँगा। जब अ़ली फज्र की नमाज़ पढ़ाने मस्जिद में आयेंगे तो हम दोनों अचानक उन पर हमला करके उन्हें क़त्ल कर देंगे।

इस तरह बहला फुसला कर शबीब को भी अपने साथ मिला लिया और हस्बे क़रार दाद 17 रमज़ान को मस्जिद में जा कर छुप कर बैठ गये। जब हज़रत अ़ली नमाज़ के लिए तशरीफ लाये तो सबसे पहले शबीब ने अपनी तलवार से आप पर हमला किया लेकिन उसकी तलवार दरवाज़ा पर लगी। उसके बाद इब्न मुलजिम ने वार किया। उसकी तलवार आपके सर पर लगी। शबीब मौक़ा पाकर मजमअ में घुस गया और बच गया। हज़रत अ़ली ने फ़रमाया क़ातिल को पकड़ लिया जाय। इब्न मुलजिम को पकड़ लिया गया और हज़रत अ़ली के सामने पेश किया गया।

आख़िरी वक़्त में आपने अपने दोनों बेटों हसन व हुसैन को बुलाया और उन्हें मुख़ातिब करते हुए फ़रमाया। मैं तुम्हें चन्द बातों की वसीयत करता हूँ।

"अल्लाह तआ़ला का तक़वा अख्तियार करना। दुनिया से कभी दिल न लगाना। किसी ऐसी चीज़ की ख्वाहिश न करना जो तुम्हारे दस्तरस से बाहर हो। हमेशा सच बोलना। यतीम पर रहम खाना। अपनी आख़ेरत संवारने की फ़िक्र करना। ज़ालिम को उसके ज़ुल्म से रोकना। मज़लूम की मदद करना। कुरआन करीम

के एहकाम पर अ़मल करना। अल्लाह तआ़ला की तअ़मील एहकाम के सिलसिला में लौमता लाएम की परवाह न करना।"

और अपने पसमान्दगान से फ़रमाया।

"ऐ बनी अब्दुल मुत्तलिब ! ख़बरदार ! तुम मेरे बाद मुसलमानों का खून न बहाना और मेरे क़ातिल के सिवा किसी को क़त्ल न करना।"

ख़ास तौर से हसन को फरमाया। "हसन ! अगर मैं मर जाऊँ तो मेरे क़ातिल का तलवार से एक दफ़ा में ही ख़ातमा कर देना। इसका मुसला न करना क्योंकि मैंने रसूलल्लाह, सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम को फ़रमाते हुए सुना है "मुसला से बचो ख्वाह व बावला कुत्ता ही क्यों न हो"।"

आख़िर वक्त में जन्दब इब्न अब्दुल्लाह ने हज़रत अ़ली से दरियाफ़्त किया। क्या हम आपके बाद आपके बेटे हसन को ख़लीफ़ा बनायेंगे ? हज़रत अ़ली ने फ़रमाया। "न मैं तुम्हें हुक्म देता हूँ न मना करता हूँ। जो तुम मुनासिब समझो करो।"

हज़रत हसन ने इब्न मुलजिम को क़त्ल करने का हुक्म दे दिया और उसको क़त्ल के बाद आग में जला दिया गया।

बरक इब्न अब्दुल्लाह ने उसी रात को जिस रात को हज़रत अ़ली पर हमला किया गया अमीर मआ़विया की घात में बैठ गया। जब वह सुबह निकले तो हमला कर दिया गया। तलवार उनके रान में लगी। वह उन्हें क़त्ल न कर सका। बरक को फौरन गिरफ्तार कर लिया गया। उसने अमीर मआ़विया की ख़िदमत में अर्ज़ की मैं आपको एक खुशख़बरी सुनाता हूँ।

हज़रत अमीर मआ़विया ने कहा। वह क्या ?

उसने कहा मेरे एक भाई ने अ़ली को इसी रात क़त्ल कर दिया है।

अमीर मआ़विया ने कहा कि शायद वह भी तुम्हारी तरह अपने मक़सद में कामयाब न हुआ हो।

उसने कहा। नहीं वह ज़रूर कामयाब हुआ होगा क्योंकि अ़ली के साथ पहरादार नहीं रहते।

बरक को अमीर मआ़विया ने क़त्ल करा दिया और साअ़दी

Scanned by CamScanner

नामी एक तबीब को बुलाया। तबीब ने ज़ख़्मों को अच्छी तरह मुआयना किया और कहा।

आप पर ज़हर से बुझी हुयी तलवार से हमला किया गया है। मैं इसका दो ही इलाज कर सकता हूँ। एक तो लोहा गरम करके ज़ख़्मों की जगह लगाऊँ या एक दवाई पिलाऊँ। लेकिन इस दवाई का असर यह होगा कि आपकी औलाद का सिलसिला मुनकतअ़ हो जायेगा।

अमीर मआविया ने कहा ------

गरम लोहा लगवाने की मुझे ताब बाक़ी नहीं रहा। औलाद का सिलसिला मुनकतअ हो जाने का सवाल तो मेरे लिए यज़ीद और अब्दुल्लाह ही काफ़ी हैं। चुनान्चा तबीब ने उन्हें दवा पिलाई और वह अच्छे हो गये। बाद अज़ाँ उनके कोई औलाद न हुयी।

इस वाक़या के बाद हज़रत अमीर मआविया ने मस्जिद में मक़सूरा बनाने का हुक्म दिया और पहरादार मोक़र्रर किये जो नमाज़ पढ़ते वक्त मुक्तदियों की निगरानी करते थे।

उमर बिन बकर भी उसी रात उमर बिन आस की घात में बैठ गया। उमर बिन आस बीमार थे इसलिए नमाज़ में न आ सके और अपनी जगह ख़ारजा बिन हज़ाफ़ा को नमाज़ पढ़ाने का हुक्म दिया। चूँकि उस वक्त तक रोशनी नमूदार न हुई थी इस लिए उमर बिन बकर को पता न चल सका कि उमर बिन आस की जगह ख़ारजा नमाज़ पढ़ाने आये हैं। उसने इब्न आस के धोके में ख़ारजा बिन हज़ाफ़ा पर हमला कर दिया और उन्हें क़त्ल कर दिया। लोगों ने झट उसे पकड़ लिया और उसे हज़रत उमर बिन आस की ख़िदमत में ले गये। उमर बिन बकर ने लोगों से पूछा यह कौन हैं ?

लोगों ने जवाब दिया। "उमर बिन आस।"

उसने कहा मैंने किसे क़त्ल कर डाला ?

लोगों ने कहा। "ख़ारजा बिन हज़ाफ़ा को।"

इस पर वह उमर बिन आस से कहने लगा। मैं तो अपने खयाल में तुम पर हमला किया था। उमर बिन आस ने कहा। तूने मुझे क़त्ल करना चाहा था लेकिन अल्लाह तआला की मशीअत

यह थी कि मेरी जगह ख़ारजा मारे जायें। अच्छा अब अपने किये की सज़ा भुगत। उन्होंने उसे क़त्ल करने का हुक्म दिया और वह क़त्ल कर दिया गया।

☆☆☆☆☆

हज़रत अ़ली की शहादत के साथ इस्लाम की तारीख के एक दरख़शन्दा बाब का ख़ात्मा हो गया। अपनी खिदमाते आला, कलेमतुल हक़, ज़हद व क़नाअ़त और दुनयवी आराम से नफ़रत के लेहाज़ से हज़रत अ़ली हज़रत अबू बकर व हज़रत उमर के नक़्शे क़दम पर थे। अलबत्ता जहाँ तक तदबीर, ममलुकत, सियासत की बारीकियों को समझने, कौम के हालात का इल्म रखने, फ़ित्ना व फ़साद की राहों को बन्द करने और फरमा रवाई का तअ़ल्लुक है हज़रत अ़ली को वह मकाम हासिल न था जो शेख़ैन को था। ताहम इसमें कोई शक नहीं कि अगर ज़माना हज़रत अ़ली का साथ देता और उम्मत में तफ़रक़ा न पैदा हो जाता तो आप अपने अहद में आलमे इस्लाम में अद्ल व इन्साफ़ का वह नमूना क़ायम करते और फ़तूहात इस्लामी को इतनी वुसअ़त देते कि अहदे सिद्दीक़ व फ़ारूक़ का समाँ लोगों की नज़रों में छा जाता। हज़रत अ़ली के तक़वा और परहेज़गारी, सादा ज़िन्दगी और दुनियवी माल व मताअ से नफ़रत का यह हाल था कि आपके इन्तेक़ाल के वक्त आपके पास सिवाय सात दिरहम के और कुछ न था।

आपने पहली शादी रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अ़लैहे वसल्लम की साहबज़ादी हज़रत फ़ातमा रज़िअल्लाहो तआ़ला अन्हा से की। उनकी ज़िन्दगी में आपने और कोई शादी नहीं की। हज़रत फ़ातमा के बतन से दो लड़के हसन, हुसैन और दो लड़कियाँ ज़ैनब और उम्मे कुलसूम पैदा हुयीं। हज़रत फ़ातमा की वफ़ात के बाद आपने आठ शादियाँ कीं। आपके कुल चौदह लड़के और सत्रह लड़कियाँ पैदा हुयीं। आपके जिन साहबज़ादों से नस्ल का सिलसिला जारी रहा उनके नाम यह हैं।

हसन। हुसैन। मोहम्मद बिन अलहन्फ़िया। अब्बास। उमर

Scanned by CamScanner

रज़िअल्लाहो अन्हुम।

खोलफ़ाए राशिदीन के अहद में सल्तनत का नज़्म व नसक़

खेलाफ़ते राशेदा में तशरीअ की बुनियाद कुरआन करीम और सुन्नते मारूफ़ा पर थी। अगर खोलफ़ा के सामने कोई ऐसा मसला पेश होता जिसके बारे में कुरआन करीम और सुन्नत में कोई हुक्म न मिलता तो वह अम्साल व अशबाह और नज़ायर पर क़यास करके उस मसला का हुक्म निकालते। ख़लीफ़ा का इन्तेख़ाब मशविरा से किया जाता। जम्हूरियत की बुनियाद दरअस्ल इसी वक्त पड़ी।

क़ज़ा

क़ज़ा का काम ख़लीफ़ा के फ़राएज़ में समझा जाता था इस लिए खोलफ़ा इस काम के लिए खुद अपनी तरफ से नाएब मोक़र्रर करते थे। हज़रत सिद्दीक़ अकबर के अहद में हर शहर का आमिल ही क़ज़ा का काम करता था लेकिन हज़रत उमर ने इसके लिए एक जुदागाना मोहकमा कायम किया और मुख़्तलिफ़ शहरों में क़ाज़ी मोक़र्रर किये गये। क़ाज़ी अपनी राय और हुक्म देने में आज़ाद होते थे। उन्हें यह हिदायत थी कि वह जो भी हुक्म दें कुरआन व सुन्नत के एहकाम के मुताबिक़ दें। इलाक़ा के हाकिम का क़ाज़ी पर पूरा दबाव या असर न होता था। क़ाज़ी का तअय्युन ख़लीफ़ा खुद करता था। क़ाज़ियों को बैतुल माल से बेश क़रार तन्ख़ाहें दी जाती थीं ताकि वह रिश्वत की तरफ़ माएल न हों। क़ाज़ियों के अलावा हर शहर में एक जमाअत ऐसी भी मौजूद रहती थी जिसने एहकाम फेक़ही इस्तेख़राज व इस्तेन्बात में खूब मलका पैदा कर लिया था। जब क़ाज़ी को कोई मुश्किल मसला दर पेश होता तो उन्हीं लोगों से मदद लेता था।

देफ़ाअ

लश्करों की अस्ल क़यादत ख़लीफ़ा के हाथों में होती थी।

क्योंकि रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के ज़माने में आप खुद फौजों की क़यादत फरमाया करते थे लेकिन जब सल्तनत के कामों ने वुसअत अख़्तियार की तो खोलफ़ा अपनी जगह ऐसे लोगों को बहादुरी में यकता और शुजाअत में ताक़ होते थे सिपेह सालार मोक़र्रर करने लगे। उनकी एताअत वाजिब थी जिस तरह ख़लीफ़ा की एताअत वाजिब थी। फ़तह के बाद जब हालात पुर सुकून हो जाते तो इन सिपेहसालारों की ज़िम्मेदारी फौज क उमूर की निगेहदाश्त और आइन्दा के लिए उन्हें जंग की तरबियत देने तक महदूद हो जाती थी।

हज़रत सिद्दीक़ अकबर के ज़माने में सारी फौज रज़ाकाराना थी। उसके नाम रजिस्टर में दर्ज न थे। हज़रत उमर के ज़माना में सिपाहियों के नाम दर्ज रजिस्टर किये गये। इस तरह बाक़ायदा फौज की सूरत पैदा हुयी। हज़रत फ़ारूक आज़म ने बैतुल माल से तमाम फ़ौजियों की तन्ख़ाहें मोक़र्रर कर दी थीं।

महसूल

हज़रत फ़ारूक आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो के अहद से खेराज के वसूल के लिए मुस्तकिल और जुदागाना आमिल मोक़र्रर किये जाते थे। जो ख़ेराज वसूल होता उसे ख़लीफ़ा के एहकाम के तहत फौज की तन्ख़ाह और मसालेह आम्मा के दूसरे कामों पर ख़र्च किये जाते, और जो रक़म बच जाती उसको दारुल ख़िलाफ़त भेज दिया जाता है।

जुज़िया

वह रक़म जो ज़िम्मियों से उनकी हिफ़ाज़त के बदले और उनको दुश्मनों से बचाने के एवज़ वसूल की जाती थी। औरतें, बच्चे, मुफ़लिस, अपाहिज इससे मुस्तसना थे।

ज़कात

मुसलमानों के हर किस्म के माल, चरने वाले जानवर, नक़दियों और ज़मीन की पैदावार पर कुरआन मजीद के एहकाम और रसूलल्लाह सल्ललल्लाहो अलैहे वसल्लम की सुन्नत के

Scanned by CamScanner

मुताबिक़ ज़कात वसूल की जाती थी।

उशूर

मुसलमान ताजिर जब अपना माल लेकर रोम के शहरों में जाते तो उनसे माल का दसवाँ हिस्सा बतौर महसूल वसूल किया जाता था। हज़रत उमर को जब मालूम हुआ तो आपने हुक्म दिया। जो रोमी ताजिर हमारे मुल्क में माल लेकर आयें उनसे भी इसी क़दर महसूल वसूल किया जाय।

सिक्का

इस्लाम से क़ब्ल अरब में सोना चाँदी के ईरानी व रोमी सिक्के रायज थे। उनका अपना कोई सिक्का न था। हज़रत सिद्दीक़ अकबर तक यही सिक्के रायज रहे। ईरान फ़तह होने के बाद फ़ारूक़ आज़म रज़िअल्लाहो अन्हो ने चाहा कि सिक्कों का वज़न मोक़र्रर किया जाय और दस दिरहम का वज़न सात मिसक़ाल रखा गया। 18 हिजरी में कसरवी दिरहम के नमूना पर दिरहम ढाले गये। बाज़ का नक़्शा अलहम्दो लिल्लाह और बाज़ का नक़्शा मोहम्मदुर्रसूलल्लाह और बाज़ का नक़्श लाइलाहा इल्लल्लाह। बाज़ पर उमर लिख दिया गया। हज़रत उस्मान के दौर में जब दिरहम ढाले गये तो उन पर सिर्फ़ अल्लाहो अकबर ही के अल्फ़ाज़ कुन्दा थे।

मौलाए कायनात की अदबी शख़्सियत

हज़रत अ़ली की शख़्सियत पर तारीख़ ने बड़े दबीज़ पर्दे डाल रखे हैं जिससे आपके सही ख़द व ख़ाल मोतअ़य्यन करना बहुत मुश्किल हो गया है।

एक तरफ़ आपके दुश्मनों ने आपकी सीरत को मसख़ करने में कोई कसर न उठा रखी है दूसरी तरफ मोअ़तकेदीन व मोहिब्बीन ने भी आपकी मोबालग़ा आमेज़ मदह व तौसीफ़ में कोई दक़ीक़ा फर्व व गुज़ाश्त न किया।

आपके अक़वाल, ख़ुतबात और एहकाम पर नज़र डालने से आपकी हकीकी शख़्सियत मालूम करने में मदद मिलती है और

यह बात सामने आ जाती है कि आपको ख़ुदा तआ़ला की तरफ़ से हैरत अंगेज़ दिमाग़ अता हुआ था। रसूलल्लाह सल्लल्लाहो अलैहे वसल्लम के क़रीबी अज़ीज़ होने और आपकी ख़िदमत में शब व रोज रहकर आपका पुर मआ़रिफ़ कलाम सुनते रहने की वजह से फ़साहत व बलाग़त, मआ़नी व बदीअ़ आपके रग व रेशा में सरायत कर गयी थी और यही वजह थी कि आपके ज़बान मुबारक से हमा वक्त फ़साहत व बलाग़त के चश्मे फूटते रहते थे। हिकमत आपके घर की लौंडी थी और ज़ोरे ख़ुतबात में कोई शख़्स आपका हम पल्ला न था। कोई भी मौज़ू कितना ही दुश्वार क्यों न हो आप उसपर गुफ़्तुगू व तक़रीर कर सकते थे। लोगों को जेहाद पर अंगेख़्त करने के ख़ुत्बे, अमीर मआविया के नाम आपके मकतूबात, उमरा व अ़म्माल व हुक्काम के मोतअ़ल्लिक़ आप के एहकाम अदब के मोजेज़ात की हैसियत रखते थे।

नहजुल बलाग़त

मौलाए कायनात की बेहतरीन यादगार नहजुल बलाग़त है बाज़ का ख़याल है कि इस किताब में जो कुछ है वह सब का सब हज़रत अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो का फरमूदा नहीं है लेकिन हक़ीक़त यह है कि उसका अकसर हिस्सा हज़रत अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो ही के फरमूदात और इरशादात पर मब्नी है। यह किताब आपकी ज़िन्दगी, आपके अहदे ख़िलाफ़त, आपकी जंगों और ग़ज़वात और आपकी दुनिया से बे रग़बती की सही तस्वीर पेश करती है। इससे इन्कार नहीं किया जा सकता कि बाज़ ख़ुतब व रसायल ग़लत तौर पर हज़रत अ़ली से मन्सूब हैं। ताहम इस बात से भी इन्कार नहीं किया जा सकता कि नहजुल बलाग़त में जो आपके ख़ुतबात और रसायल दर्ज हैं उनसे हज़रत अ़ली की रफ़ीउश्शान शख़्सियत जो ईमान व यक़ीन से भरपूर और हक़ व सदाक़त के सिलसिला में इन्तेहाई मज़बूत थी हमारे सामने आ जाती है।

एक मशहूर नक़्क़ाद "नहजुल बलाग़त" की तौसीफ़ व तारीफ़ करते हुए लिखता है कि "एक ख़तीब और एक अदीब के

Scanned by CamScanner

कलाम में जितनी बातों की ज़रूरत होती है वह सब इस किताब में मौजूद हैं। इसमें अदबी पैराया में मदह भी है और ज़म भी। नेक बातों की तरग़ीब भी है और बुरी बातों से इज़्हारे नफ़रत भी। सियासी चपकलश के नमूने भी हैं और जंग व जदल का हाल भी। रेआ़या पर हाकिम के हुकूक की तफ़्सील भी है और हाकिम पर रेआ़या के हुक़ूक का बयान भी। शहरियत के उसूल भी दर्ज हैं और अदालत के क़वायद भी। शख़्सी नसायह भी हैं और अमूमी मवाइज़ भी। मुख़्तसर अल्फ़ाज़ में इसकी तारीफ़ यूँ की जा सकती है कि यह खुदा तआ़ला के कलाम से कमतर और बन्दों के कलाम से बढ़कर है।"

खुतबात अ़ली रज़िअल्लाहो अन्हो के नमूने

एक खुतबा में अल्लाह तआ़ला की सिफ़ात बयान करते हुए फ़रमाते हैं।

"हर किस्म की तारीफ़ उस अल्लाह के लिए है जो अव्वल भी है और आख़िर भी है। जो ज़ाहिर भी है और बातिन भी। उसके अलावा हर अज़ीज़ ज़लील है। हर क़वी ज़ईफ़ है हर मालिक ममलूक है, हर आलिम मोतअ़ल्लिम है, हर क़ादिर आजिज़ है। हर समीअ़ बहरा है क्योंकि वह लतीफ़ आवाज़ों को नहीं सुन सकता। हर बसीर अअ़मा है क्योंकि वह मख़्फ़ी रंगों और लतीफ़ अजसाम को नहीं देख सकता। हर ज़ाहिर बातिन है, हर बातिन ज़ाहिर है। जो चीज़ उसने पैदा की है उसे पैदा करने की किसी में कुदरत नहीं। इसे ज़माना के मवाक़िब ख़ौफ़ज़दा नहीं कर सकते। उसे किसी के मदद की ज़रूरत नहीं। तमाम मख़लूक उसकी परवरदह है तमाम बन्दे उसके मतीअ़ व फ़रमा बरदार हैं वह किसी चीज़ में महलूल नहीं। ताकि यह न कहा जा सके कि वह फ़लाँ चीज़ में पाया जाता है। वह किसी चीज़ से मुन्फ़सिल नहीं है ताकि यह न कहा जा सके कि वह फलाँ चीज़ से अलाहेदा है। उसे किसी चीज़ को पैदा करने में मशक्कत तकलीफ़ और इज्ज़ का सामना नहीं करना पड़ता। जो कुछ

गुज़र गया और जो कुछ आइन्दा पेश आने वाला है उसमें किसी किस्म का शुबह नहीं है। उसकी कज़ा यक़ीनी है उसका इल्म मोहकम और उसका हुक्म मुबरम है जो किसी सूरत में टलने वाला नहीं है।"

वारिश की दुआ यूँ फ़रमाते हैं ——

"ऐ अल्लाह ! हमारे पहाड़ खुश्क हो गये हैं। हमारी ज़मीन पर ख़ाक उड़ने लगी है। हमारे जानवरों के हलक प्यास की वजह से खुश्क हो चुके हैं। वह बड़ी बेतावी के साथ अपने अहातों में खड़े नेहायत दर्दनाक आवाज़ों से चीख़ रहे हैं। वह बार बार चारों तरफ पानी की तलाश में चरागाहों में फिरते हैं और घाट पर जाते हैं लेकिन नाकाम वापस आ जाते हैं।

ऐ अल्लाह ! गिड़गिड़ाने वालों की गिड़गिड़ाहट पर रहम फ़रमा। ऐ अल्लाह ! उन जानवरों पर रहम फरमा जो चरागाहों में हैरान व सरगरदाँ फिर रहे हैं और अपने बाड़ों में दर्दनाक आवाज़ों से चीख़ रहे हैं।

ऐ अल्लाह ! तू ऐसी बारिश बरसा जो बरकत हो। रूवैदगी और सब्ज़ा पैदा करने वाली हो जिससे तेरे ज़ईफ़ और कमज़ोर दरिन्दे फरहत और तवानाई हासिल करें। जिससे मुर्दा इलाके फिर तर व ताज़ा और सर सब्ज़ हो जायें और हमारे मवेशी बा फरागत चारा हासिल कर सकें।

ऐ अल्लाह ! अपने ग़रीब और कमज़ोर मख़लूक़ और बे ज़ुबान जानवरों को अपने करम से नवाज़ और उनपर बे पायाँ बरकात नज़िल फ़रमा। तू अपनी रहमत से हमारे लिए ऐसा बादल भेज जो पानी से भरा हुआ हो और जो आकर मूसलाधार पानी बरसाये। ऐसा बादल न भेज जिसकी कड़क, गरज और चमक हमें धोका दे और जो पानी से बिल्कुल ख़ाली हो। ऐ अल्लाह खुश्क ज़मीन को सैराब कर और कहत ज़दा लोगों को आराम और चैन मरहमत फ़रमा।"

मौला अ़ली के हकीमाना इरशादात

(1) अगर तुम मुनइम का शुरू ही से शुक्रिया अदा न करोगे तो

Scanned by CamScanner

आइन्दा हासिल होने वाली नेअ़मत को हाथ से खो दोगे।

(2) बेहतरीन ज़ह्द यह है कि अपने ज़ह्द को छुपाया जाय।

(3) अगर किसी ग़लती से तुम्हें तकलीफ़ पहुँचती है तो अल्लाह तआला के नज़दीक यह ग़लती उस नेकी से अच्छी है जिससे तुम मग़रूर हो जाओ।

(4) जब तक तेरा बख्त यावर है तेरा ऐब भी छुपा हुआ है।

(5) सख़ावत वह है जो बिला मांगे की जाय। मांगने पर सख़ावत सख़ावत नहीं होती बल्कि हया और तजम्मुम होती है।

(6) अक़्ल से बढ़कर और कोई दौलत नहीं। जेहालत से बढ़कर और कोई फोक्र नहीं। अदब से बढ़कर और कोई मीरास नहीं। मशविरा से बढ़कर और कोई मददगार नहीं।

(7) जिस शख्स ने तुझे डराया वह उस शख्स की तरह है जिसने तुझे खुशख़बरी दी।

(8) किसी हाजत मंद को थोड़ी चीज़ देने से न शरमाओ क्यों कि बिल्कुल ही न देना उससे बदतर है।

(9) नाशुक्री फ़ोक्र का ज़ीना है और शुक्र दौलतमंदी का ज़ीना।

(10) जब अक़्ल कामिल हो जाती है तो कलाम घट जाता है। (यानी आक़िल लोग बहुत कम कलाम करते हैं।)

(11) तफ़क्कुरात आधा बुढ़ापा होते हैं।

(12) इन्सान अपनी जुबान के नीचे छुपा हुआ होता है।

(13) अकसर इन्सानों की अक़्लें सीम व जवाहिर की चमक देखकर जाती रहती हैं।

(14) जो छोटे हाथ से सख़ावत करता है उसे लम्बे हाथ से दिया जाता है।

(15) तीन चीज़ें जन्नत के ख़ज़ानों में से हैं।
1.बीमारी का छुपाना। 2. सदक़ा व ख़ैरात को छुपाना। 3. मुसीबत छुपाना।

(16) औरत बिच्छू है जिसने शीरीनी का लिबास पहन रखा है।

Scanned by CamScanner

شفیق ملت

حضرت علامہ مفتی شفیق احمد شریفی صاحب کی دیگر تصانیف

- فتاویٰ دار العلوم افضل المدارس
- فتاویٰ دار العلوم غریب نواز
- تاریخ الاولیاء جلد اول اردو
- تاریخ الاولیاء جلد اول ہندی
- تذکرہ خلفائے راشدین اردو
- تذکرہ خلفائے راشدین ہندی
- تذکرہ اکابر علمائے اہلسنت
- ذکر الصالحین
- اصلاحی خطبات
- حقوق زوجین
- حیات خواجہ غریب نواز
- حیات سیدنا امام اعظم
- حیات شاہ حسام الحق، مانکپور
- اہلسنت وجماعت و دیوبندیوں کی پہچان
- ثبوت فاتحہ
- (عالم کا مکمل نوٹ)
- التلخیص (عالم کا مکمل نوٹ)
- مسنون دعائیں
- تذکرہ مشاہیر اولیاء الہ آباد
- جدید مسائل
- پاسبان ملت
- تاریخ مشاہیر اولیاء الہ آباد

Rs.70/-

Scanned by CamScanner